भूमिका ।

प्रिय पाठकगण !

यह ग्रन्थरत्न गोस्वामी तुलसीदासजी, सूरदासजी, नारायण स्वामी, मीरा बाई तथा और भी कितने ही भगवद्भक्त महात्माओंके भजन संग्रह करके निर्माण किया गया है । वर्तमान समयमें लोगोंका मन भगवद्भजन तथा कथा वार्ताके पढने सुननेमें बिलकुल ही नहीं लगताहै वरन इधर उधर असत् कार्योंमें प्रवृत्त रहताहै । तब फिर हमारे जन्म सफल होनेका कौनसा मार्गहै ? और पापोंसे मुक्ति ग्रहण करनेका क्या उपाय है ? इसका उत्तर यही दिया जा सकताहै कि-हरिभक्त महात्माओंके बनाये हुए भजनोंका गान करें इससे एक पंथ दो काज होंगे, अर्थात् परमात्माका भजन होनेके अतिरिक्त स्वास्थ्यको भी लाभ पहुंचेगा और चित्त भी मगन रहेगा । विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं इतनाही समझ लीजिये कि मेरा अभिप्राय इस पुस्तकके निर्माण करनेसे यही है कि सनातन धर्मावलम्बी सब सज्जन पुरुषोंको लाभ हो और इसके पढने सुननेसे संसारमें उनका जन्म लेना सार्थक हो ।

आजकल सनातन धर्मरूपी वृक्षकी जडमें कुठाराघात करनेवाले दयानन्दी जो इधर उधर अटरम सटरम अश्लील अथ च दूषित भजन गातेहुए सनातन धर्मावलम्बी महात्माओंका चित्त दुखाते फिरतेहैं, इस पुस्तकमें अत्यन्त सभ्यता और सत्यतासे उनको भी उत्तर दिया गयाहै, सज्जनगण देखकर प्रसन्न होंगे ।

मित्रवर ! कलियुगमें केवल भजन मात्र करनेसे ही मुक्ति मिल जातीहै जैसा कि हमारे महात्मा गोस्वामी तुलसीदासजीने कहाहै कि-

कलि केवल हरि गुनगन गाना । एक अधार राम भगवाना ॥
सब भरोस तज जो भज रामहि । प्रेम समेत गाव गुण ग्रामहि ॥
सो भव तर कछु संशय नाहीं । भजन प्रभाव प्रकट कलि माहीं ॥

इस स्थानपर मैं अपने परम प्रिय मित्र पं० भीमसेनजीके पुत्र पं०गौरी-शंकर शर्मा और पं० विहारीलालात्मज पं० चिरञ्जीलालजी शर्मा-दीनदारपुरा मुरादाबादको भी हार्दिक धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकता कि जिनसे इस पुस्तकके संग्रह करनेमें मुझे बडी भारी सहायता मिली है ।

अब यह "सनातनधर्मभजनमाला" नामक पुस्तक मैंने अपने परम हितैषी परममाननीय सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी अध्यक्ष "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालय मुम्बईको सर्व सत्वके सहित समर्पण करदियाहै और उक्त श्रीमान्ने इसको शीघ्र छापकर प्रसिद्ध कियाहै ।

यदि महात्मा पुरुषोंको इसके द्वारा कुछ भी लाभ पहुँचा तो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूंगा ।

अनुग्रहीत-

भौमवार १८-३-१३ ई० फाल्गुन शुक्लपक्षकी एकादशी	कन्हैयालाल मिश्र, मोहल्ला दीनदारपुरा, मुरादाबाद (युक्तप्रदेश)

|| श्रीः ||

अथ सनातनधर्मभजनमालाकी अनुक्रमणिका ।

इति स० ध० भ० अनुक्रमणिका समाप्त.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ सनातनधर्मभजनमाला ।

मङ्गलाचरण ।

सुमिरि सदा सिद्धि । हेत गणपति गणराई ॥
विघ्न हरण गणनायक । ऋद्धि सिद्धि वरदायक ॥
आनँद निधि सब लायक । त्रिभुवन सुखदाई ॥ १ ॥
सेंदुरको तिलक भाल । सोहत दृग लाल लाल ॥
शोभा अद्भुत विशाल । सन्तन मन भाई ॥ २ ॥
भक्ति मुक्ति ज्ञान मूल । राजत करमें त्रिशूल ॥
शुंड माँहि कमल फूल । देत शुभ दिखाई ॥ ३ ॥
जय जय जय जय दयाल । शंभु सुवन प्रणतपाल ॥
सोहत गल मुक्त माल । गिरिजा पहिराई ॥ ४ ॥
शुद्ध बुद्ध गुण निधान । जनको अज्ञान जान ॥
विद्याको देहु दान । शिवसुत वर दाई ॥ ५ ॥

स्तुति श्रीगणेशजीकी ।

गाइये गणपति जगवन्दन । शंकर सुवन भवानी नंदन ॥
सिद्धि सदन गजवदन विनायक । कृपासिन्धु सुन्दर सब लायक ॥
मोदकप्रिय मुदमङ्गलदाता । विद्यावारिधि बुद्धि विधाता ॥
माँगत तुलसिदास कर जोरे । बसहिं रामसिय मानस मोरे ॥
गाइये गणपति जगवन्दन ॥ १ ॥

स्तुति श्रीकृष्णचन्द्रजीकी ।

पारब्रह्म परमेश्वर अविगत भुवन चतुर्दश नाथ हरी ॥
जबजब भीरपरी भक्तनपै प्रकट होय प्रतिपाल करी ॥

आदि अन्त सबके तुम स्वामी–ब्रह्मादिकहैं अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामि दयासिन्धु अन्तर्यामी ॥
जाको ध्यान धरत योगीजन शेष जपत नित नाम नये ॥
सो भवतारन दुष्ट निवारन सन्तनकारन प्रकट भये ॥
आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिकहैं अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामि दयासिन्धु अन्तर्यामी ॥
जिनको नाम सुनत यम डरपें थरथर काँपत काल हियो ॥
तिनको पकरि नन्दकी रानी ऊखलसों लै बाँध दियो ॥
आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिक हैं अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामि दयासिन्धु अन्तर्यामी ॥
जय दुखमोचन पंकजलोचन उपमा जाय न कहत बनी ॥
जय सुखसागर सब गुनआगर शोभा अंग अनंग घनी ॥
आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिकहैं अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामि दयासिन्धु अन्तर्यामी ॥
नारदको हम अति गुन मानें शाप नहीं वरदान दियो ॥
जा कारनतें प्रभू आपने दर्शन दियो सनाथ कियो ॥
आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिकहैं अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामि दयासिन्धु अन्तर्यामी ॥
जो हरहूके ध्यान न आवत अपर अमरहै केहि लेखे ॥
सो हरि प्रकट नन्दके आँगन ऊखल संग बंधे देखे ॥
आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिकहैं अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामि दयासिन्धु अन्तर्यामी ॥
जिनकी पदरजको सुर तरसैं अगम अगोचर दनुजारी ॥
त्राहित्राहि प्रणतारत भंजन जन मनरंजन सुखकारी ॥

आदि अन्त तुम सबके स्वामी ब्रह्मादिकहैं अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामि दयासिन्धु अन्तर्यामी ॥
तुम्हरी माया जीव भुलानो केहि विधि नाथ तुम्हैं जाने ॥
तुमहीं कृपाकरो जब स्वामी तबहीं तुमको पहिचाने ॥
आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिकहैं अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामि दयासिन्धु अन्तर्यामी ॥
हे मुकुन्द मधुसूदन श्रीपति कृपानिवास कृपा कीजै ॥
तव चरननमें सदा रहै मन यह वरदान हमें दीजै ॥
आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिकहैं अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामि दयासिंधु अन्तर्यामी ॥
जय केशव जय अधम उधारन दयासिन्धु हरि नित्य मगन॥
जय सुन्दर ब्रजराज शशीमुख सदा बसो मम हृदय गगन॥
आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिकहैं अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामि दयासिन्धु अन्तर्यामी ॥
रसना नित तुम्हरे गुन गावे श्रवण कथा सुनि मोद भरें ॥
कर नितकरैं तुम्हारी पूजा नयन सन्त जन दरश करें ॥
आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिकहैं अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामि दयासिन्धु अन्तर्यामी ॥
नेम धर्म व्रत जप तप संयम योग यज्ञ आचार करें ॥
नारायण विन भक्ति न रीझें वेद संत सब साखि भरें ॥
आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिकहैं अनुगामी ॥
कृष्ण नमामि नमामि नमामि दयासिन्धु अन्तर्यामी ॥

[वृन्दावनमहिमा]

धनि धनि श्रीवृन्दावन धाम ॥
जाकी महिमा वेद बखानत, सबविधि पूरणकाम ॥

आश करतहैं जाकी रजकी, ब्रह्मादिक सुरग्राम ॥
लाडिलीलाल जहां नित विहरत रतिपति छबि अभिराम ॥
रसिकनको जीवनधन कहियत मंगल आठो याम ॥
नारायण विन कृपा युगलवर छिन न मिलै विश्राम ॥
देख चरित मोहिं अचरज आवै ॥
जो कर्त्ता जगपालक हर्त्ता सो अब नंदको लाल कहावै ॥
विन कर चरन श्रवन नासा दृग नेति नेति जाकूं श्रुति गावै ॥
ताकूं पकरि महारि अंगुरिनतैं आंगनमें चलिबो सिखरावै ॥
ब्रह्म अनादि अलक्ष अगोचर ज्योति अजन्म अनंत कहावै ॥
सो शशिवदन सदन शोभाको नँदरानी निज गोद खिलावै ॥
जाके डर डोलत नभ धरनी काल कराल सदा भय पावै ॥
सो व्रजराज आज जननीकी भौंह चढीको निरख डरावे ॥
जाके सुमिरनतें जीवनको भवबन्धन छिनमें छुटि जावै ॥
सोई आज बँध्यो ऊखलतें निरखनकूं सगरो व्रज धावै ॥
पूरणकाम क्षीर सागर पति मांग मांग दधि माखन खावै ॥
भक्ताधीन सदा नारायण प्रेमकी महिमा प्रकट दिखावै ॥

वरवै पीलू का जिला ।

पहिले मेरो दान चुकारी–पाछे बतरैयो प्यारी ॥
तो समान तुहि देत दिखाई नवयौवन नव सुन्दरताई ॥
और कहांलौं करौं बड़ाई–मोहन को मनमोहन हारी ॥ १ ॥
अति बाँकेहैं नैन तिहारे–शानधरे पैने अनियारे ॥
जिन हमसे घायल कर डारे–इन समान नहिं बान कटारी ॥ २ ॥
नारायण जनि देर लगावो देहु दान अपने घर जावो ॥
क्यौं मटुकी चौपट गिरवावो देख हँसेंगे पुर नरनारी ॥ ३ ॥

उठो अब मान तजो गोरी। रही है रैन बहुत थोरी॥
सदासौं तुम मनकी मोरी। कहूं मैं शत खाय तोरी॥
औरनके बहकायेंतें तुम कर बैठतहो रोष॥
झूंठ सांच परखत नहीं–वृथा देतहो दोष॥
यही मोहिं अचरजहै भारी। उठो अब मान तजो गोरी॥ १॥
तनक हँसि चितवो सुकुमारी। शशीमुखपैहूं बलिहारी॥
अपनी ओर निहारिके देहु अभय वरदान॥
क्षमाकरो सब चूक हमारी–जो कुछ भई अजान॥
एती विनती मानो मोरी। उठो अब मान तजो गोरी॥२॥
तिहारे गुन नित प्रतिगाऊं। विना आज्ञा न कहूं जाऊं॥
ताहूपै दृग अरुण कर भृकुटि लेत चढाय॥
जोरावरसौं निबलकी काहूविधि न बसाय॥
हारे हूं हार जीतेहूं हार–उठो अब मान तजो गोरी॥३॥
जिन्है तुम समझो हितकारी वेही अति कपटी ब्रजनारी॥
हममें फुट करायकें आय अलग मुसकात॥
नारायण तुमने करो खरो न्यायको बात॥
भलेयें दंड बुरे पर प्यार। उठो अब मान तजो गोरी॥४॥

रेखता।

मन हर लियोहै मेरो वा नन्दके दुलारे॥
मुसकायके अदा सौं नैननके कर इशारे॥ १॥
एक दृष्टिहीमें वाने जाने कहा कियोहै॥
नाहिं चैनरैन दिनमें वाके विना निहारे॥ २॥
–रेके पेच बाँके शिर मुकुट झुकि रह्योहै॥
कटि किंकिणी रतनको नूपुर बजतहै प्यारे॥ ३॥

केसर बुलाक सोहै गलमोतियोंकी माला ॥
कंगन जडाऊ करमें नख चन्द्रसौ उजारे ॥ ४ ॥
छबिदेत आरसीसे सुन्दर कपोल दोऊ ॥
बरछी समान लोचन नई सानवै सम्हारे ॥ ५ ॥
फूलनके हाथ गजरे मुख पानकी ललाई ॥
कानोंमें मोतीवाले कुण्डलहू झलकें न्यारे ॥ ७ ॥
लखि श्यामको निकाई—सुध बुध सकल गँवाई॥
बौरी बनाय मोकूं कितगयो वंशीवारे ॥ ७ ॥
जन्तर अनेक मन्तर गंडा तँबीज टोना ॥
स्याने तवीव पंडित करि कोटि जतन हारे ॥ ८ ॥
नारायण इन दृगनने जबतें वो रूप देख्यो ॥
तवसों भयेहैं ध्यानी उघरत नहीं उघारे ॥ ९ ॥

प्रभाती ।

जागिये गोपाल लाल जननी बलिजाई ॥ उठो तात भयो प्रात रजनीको तिमिर गयो खेलत सब ग्वालबाल मोहन कन्हाई ॥ उठो मेरे आनंदकन्द किरणचन्द मंदमंद प्रगट्यो आकाश भानु कमलन सुखदाई । संगी सब छुरत वेणु तुम विन नहिं छुटत धेनु उठो लाल तजो सेज सुंदर वर राई ॥ मुखतें पट दूर कियो यशुदाको दर्श दियो माखन दधि मांग लियो विविध रस मिठाई ॥ जेंवत दोउ राम श्याम सकल मंगल गुण निधान जूंठनि रहिथारमें सो मानदास पाई ॥

जागिये ब्रजराज कुँवर कमल कोश फूले ॥
कुमुदवृन्द संकुच भये भृंगलता झूले ॥
तमचर खग शोर सुनो बोलत बनराई ॥

रांभत गौ क्षीर देन बछरा हित धाई ॥
विधुमलीन रविप्रकाश गावत ब्रजनारी ॥
सूरश्याम प्रात उठे अम्बुज कर धारी ॥

लावनी।

रूप रसिक मोहन मनोज मनहरण सकल गुन गरबीले ॥
छैल छबीले चपल लोचन चकोर चित चटकीले ॥
रत्नजटित शिरमुकुट लटक रहि सिमिट श्याम लट घुंघरारी॥
बालविहारी कन्हैयालाल चतुर तेरी बलिहारी ॥
लोलकमोती कान कपोलन झलक बनी निर्मल प्यारी ॥
ज्योति उजारी हमें हरवार दरशदो गिरधारी ॥
दंतछटासी बिज्जुघटा मुखदेख शरद शशि शरमीले ॥
छैलछबीले० ॥ १ ॥
मन्दहँसन मृदुवचन तोतरैं वय किशोर भोली भाली ॥
करत चोचले अमोलिक अधर पीक रचरहि लाली ॥
फूलगुलाब चिबुक सुंदरता रुचिर कण्ठ छबि वनमाली ॥
करसरोजमें कुंद मेहँदी अमन्द बहु प्रतिपाली ॥
फूलछरीसो नरम कमर करधनी शब्दभये तुलसीले ॥
छैल छबीले ॥ २ ॥
झंगुली झीन जरीपट कछनी श्यामल गात सुहात भले ॥
चाल निराली चरण कोमल पंकजके पात भले ॥
पग नूपुर झंकार परम उत्तम यशुमतिके तात भले ॥
संग सखनके निकट यमुना बछरान चरात भले ॥
ब्रज युवतिनके प्रेम भोरभये घरघर माखन गटकीले ॥
छैल छबीले० ॥ ३ ॥

गावै रासविलास चरित हरि शरदरैन रस रास करें ॥
मुनिजन मोहे कृष्ण कंसादिक खल दल नाश करें ॥
गिरिधारी महाराज सदा श्रीव्रज वृन्दावन वास करें ॥
हरिचरित्रको श्रवण सुनि सुनि कर मन अभिलासकरें ॥
हाथजोर करै वीनती नारायण दिल दरदीले ॥
छैल छबीले चपल लोचन चकोर चित चटकीले ॥४॥

हरि बँसुरीकी धुनि सुनि व्रज युवती चलीं झुण्डके झुण्ड मँगन मनकर॥
धनधन्य हरी धनधन्य सखी धनधन बँसुरी तनमन लियो हर ॥
मन प्रेम प्रबल अति तन सुंदर सबवेद सुरति अस गुण गावें ॥
तज लाज सकल गृहकाज छोड़चलीं हरि पदपंकज मन भावें ॥
हरिआनन चन्द्रचकोर सखी छवि निरखि निरखि कर सुख पावें ॥
कछु कहि न सकत हितकी बतियां अति लज्जित मनमें मुसकावें ॥
अति व्याकुल गात मदन मद कर सखि चाहत मिलें मनोहर वर ॥
धनधन्य हरी धनधन्य सखी धनधन बँसुरी तन मन लियो हर ॥
मनकी वांछा लखि मुरलीधर व्रजयुवतिन संग विहार करें ॥
एकएक हरी एकएक सखी एक एकको कर एक एक पकरें ॥
एकएक मुरलीदै गुपियनको हरि कहत बजाओ तबहिं धरें ॥
यह प्रेम कथा सुनि हँसहँसकर मुख धरत न बजत प्राण विसरें ॥
कहें व्रज युवतिन हमकीन्ह कहा अब तुम्हीं बजाओ नट नागर ॥
धनधन्य हरी धनधन्य सखी धनधन बँसुरी तनमन लियो हर ॥
एकएक तहँवर तर एकएक हरि एकएक युवती संग बात करें ॥
इत घर आवें यशुदाके पास उत गुपियन बीच प्रभात करें ॥
हरिढीठ पकर कर मुखचूमें और बात सखी सकुचात करें ॥
यह मांगत वह विनती करकर विधिना नित ऐसी रात करें ॥

जब तिनके पति आवत निज गृह पावत अपनी पत्नी घरघर ॥
धनधन्य हरी धनधन्य सखी धनधन बँसुरी तन मन लियो हर ॥
शिव नारद आदि सकल ऋषि मुनि सबदेखत गगन विमान धरे ॥
कौतुक गिरधरके लखि न परें तनु मानुष ब्रह्म अखंड हरे ॥
युवती तनु नारी वेदसुरति रविलीला ब्रजमें खेल करें ॥
हरिपुण्य न पाप न दुःख न सुख वेदान्तके कर्त्ता खेद परे ॥
रचि छन्द यह काशीगिरि स्तुति कर मांगत भक्ति पदारथ वर ॥
धनधन्य हरी धनधन्य सखी धनधन बँसुरी तन मन लियोहर ॥
बन्दौं चरण सरोज तिहारे ॥
सुन्दर श्याम कमल दललोचन ललित त्रिभंग प्राण पतिप्यारे ॥
जे पद पद्म सदा शिवको धन सिन्धुसुता उरतें नहिं टारे ॥
जे पद पद्म तातारिस त्रासत मन वच क्रम प्रहलाद समारे ॥
जे पद पद्म फिरत वृन्दावन अहि शिर धरि अगनित रिपु मारे ॥
जे पद पद्म परसि ब्रजयुवती सर्वसदे सुत सदन बिसारे ॥
जे पद पद्म लोकत्रय पावन सुरसरि दरश कटत अघ मारे ॥
जे पद पद्म परसि ऋषि पत्नी नृप और व्याध अमित खल तारे ॥
जे पद पद्म फिरत पांडव गृह दूत भये सब काज सँवारे ॥
ते पद पंकज सूरदास प्रभु त्रिविध ताप दुख हरण हमारे ॥

गोपी गोपाल लाल रास मण्डल मांही ॥
तत्ता थेइता सुगन्ध निर्तत गहि बाँही ॥

द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मृदंग छन नन नन रूप रंग दगता दगता तलंग उघटत रसनाई। बीच लाल बीच बाल प्रतिप्रति अतिद्युति रसाल अविगत गति अति उदार निरखि दग सराहीं। श्रीराधा मुख शरद चन्द पोंछत जल श्रम अनंद श्रीब्रजचन्द लटक लटक करत मुकट

छांहीं। ततत तत सुधर गात सारिगम पदिनीमें ठाठ और यदहिं मलाद दाय दम्पति अति सादहि। गावत रस भरे अनन्द तान तान सुर अभंग उमगत छबि अति अनन्द रीझत हारि राधहिं। छाये देखन विमान देखत सुर शक्र मान देवांगनानिधान रीझि माण वारहिं॥ चकित थकित यमुना नीर खगमृग जगमग शरीर धन धन नंदके कुमार बलिबलि जाय सूरदास रास सुख तिहारहिं॥

रेखता।

नाचै छली छबीलो नंदको कुमारहै॥
गल बांहिदै प्रियाके सुन्दर शृङ्गारहै॥
इतमन्द मन्द झीनो नूपुर अवाजहै॥
उत पायजेब पायल घनकीसी गाजहै॥
पगिया लसी कुँवरके शिर पेच लालहै॥
मुकुटी लगी ललोई प्यारीके भालहै॥
कटिकाछनी सुचोली पटुका किनारका॥
कानों जडाऊ झुमका गल हीर हारहै॥
दामन सुरंगी सेला कोरत कुमारिका॥
मोतिनकी माल सुन्दर शोभा अपारहै॥
गुंजा गले गुनीके वर गुंज मालहै॥
छतियां लगीं लकासौं वंशी रसालहै॥
नासा बुलाक वेसर माथेमें मुकुट सोहै॥
दोनों झुके परस्पर छवि बे शुमारहै॥
प्यारीके नख छटा पर रविचन्द्र कोटि मोहै॥
केशव खडा बिलोके आणन अधारहै॥
एतो श्रम नाहिन तबहुँ भयो॥

सुन राधा जेतो श्रम मोकूं तैं यह मान दयो ॥
धरणीधर विधि वेद उधारे मधुसों शत्रु हयो ॥
द्विज नृप किये दुसह दुखमेटे बलिको राज्य लयो ॥
तोरचो धनुष स्वयंवर कीन्हों रावण अजित जयो ॥
अब बक कच्छ अरिष्ट केशि मथि दावानल अँचयो ॥
त्रियवपुधरचो असुर सुर मोहे को जग जो न द्रयो ॥
गुरुसुत मृतक ज्याइबे काजे सागर शोध लयो ॥
जानूं नहीं कहा या रिसमें सहजहि होत नयो ॥
सूर सो बल अब तोहि मनावत मोहिं सब बिसारि गयो ॥

रेखता।

इतनो न मान कीजे वृषभानुकी दुलारी ॥
तेरे मनायवेमें मोहि श्रम भयो है भारी ॥
प्रीतमको आज तो विन पल छिन न चैन आवे ॥
नहिं जो लगे भवनमें नहिं वनकी छवि सुहावे ॥
हँसि बोलिवो कहूंको नाहिं खान पान भावे ॥
हाथनमें चित्र तेरो पुनिपुनि हिये लगावे ॥
अति विकल ह्वै रह्यो है वो साँवरो विहारी ॥ इतनो० ॥ १ ॥
प्यारेके आगे अपनेमें गुणकी कर बडाई ॥
तेरे मनायवेकूं बीरा उठाकें आई ॥
बल बुद्धि मोमें जितनी तितनीमें सब लगाई ॥
पै नेकहू न मेरी चतुराई काम आई ॥
सब विधिसों राजनीति मैं कहिके तोसों हारी ॥ इतनो० ॥ २ ॥
तेरीतो नित बडाई सब सखीजन बखाने ॥
प्यारी हियेकी कोमल सुपनेहू रिस न जाने ॥

यह आज कहा भयोहै बैठीहो भ्रुकुटी ताने ॥
उन सखीजनको कहिबो अब कौन साचमाने ॥
सब झूंठही बडाई भामिनी करें तिहारी ॥इतनो० ३॥
लालनके साथ मिलिकें बन शोभा निरखो प्यारी ॥
कहुँ ललित सघन छाया कहुँ फूली फुलवारी ॥
जलसों भरे सरोबर झुकि रहीं द्रुमनकी डारी ॥
बोलत अनेक पच्छी बरनतहैं छबि तिहारी ॥
बलिबेगही पधारो यह लालसा हमारी ॥ इतनो० ॥ ४ ॥

एरी सुघर सयानी मो विन्ती मान लीजे ॥
तजिके ये मानमुद्रा प्यारेसे हेत कीजे ॥
नितही अधर सुधारस हंसिहंसिकें दोऊ पीजे ॥
फिर कर न उनसौं हठो वरदान यह दीजे ॥
नारायण याही कारन निजगोद मैं पसारी ॥
इतनो न मानकीजे वृषभानुकी दुलारी ॥ ५ ॥

आज दोऊ झूलत रंगभरे ॥
झोटा खरे लेत कबहुंक सखि कबहूं हरेहरे ॥
कर्णफूल कुण्डल मिल मेटत मनुशशि मीन लरे ॥
चन्द्रमाल हलकत उर राधे हारि वन माल गरे ॥
विहंसत दमक उठत दशनावलि अवनी सुमन झरे॥
ललित किशोरी टरत न लखि छबि दृग शिशु अरन अरे ॥

हमें छोडिगयो या ब्रजमें श्याम वंशी वारोरे ॥ विकल रहत हरि बिन दिनराती । दहत रहत नित हमरी छाती ॥ कर मलमल पछतातीं नेह बिसारोरे ॥ व्याकुल हो सब रोवन लागीं हमरी प्रीति श्यामने त्यागी विरह विथामें त्यागी । नैन जल ढारोरे ॥

श्याम विना सबही दुख पावें। विरह अगिनमें जरजर जावें ॥ यह दुख किसे सुनावें। कौन मेरो प्यारो रे ॥ करत सकल कथौं नार परेखा। उनका देखा येहो लेखा ॥ कपटीसौं कछु बुल्बुल चलत न चारो रे। हमें छोडि० ॥

बना बनि आयो मोहनलाल।
केशर तिलक विराजत मस्तक घूंघरवारे बाल ॥
शिरपर मौर श्रवणमें कुण्डल गल मुतियनकी माल॥
नैनन अंजन नीको लागें मुखमें बीरा लाल ॥
रत्नजटित अँग वागा सोहै पटका सुभग विशाल ॥
बुल्बुल बडे भाग्य रुक्मिनिके वर पाये नन्दलाल ॥
बनाबनि आयो मोहनलाल ॥

सबसौं प्रेम बढावत हलधर प्यारो रे ॥
यह हैं गोरे श्यामल गाता। करिहैं नाहि कपटकी बाता ॥
गोरे गात हलधरको सबन निहारो रे ॥ सबसौं० ॥
निरखि निरखि शोभा हलधरकी। सुध बुध भूलगई सब घरकी। मुखसे मधुरे बैना सबन निकारो रे ॥
भक्तनकी हरि रक्षा कीनी। बोल उठी यह वचन सुनयनी॥
हृदय सबन ब्रजनारी हलधर धारो रे ॥ सबसौं० ॥
प्रेमसखी परसत हरि पायन। करते रहैं इनके गुण गायन॥
बुल्बुल हलधर ऊपर तन मन वारो रे ॥ सबसौं० ॥

मज्जन करि यमुना जलमें कात्यायनी देवीसौं ध्यान लगायो ॥
जिन वारूकी मूरत लीनो बनाय यथा विधिसो अस्नान करायो ॥
जिन फूल और पान मिष्टान्न सभी चन्दन अक्षत कर्पूर बरायो ॥
करजोर सबनि वरमांगों यही पति होवे हमारो यशोदाको जायो ॥

यमुना न्हान चलीं ब्रजनारी ॥
पहुँचीं जाय निकट यमुनाके सब मिलि वस्त्र धरेहैं उतारी ॥
मज्जनहेत धसों यमुनामें वयकिशोर नहिं कोई वारी ॥
लागीं करन किलोल परस्पर गावत गीत पुकार पुकारी ॥
ताही समय ग्वालबालन सँग तट यमुना पहुँचे बनवारी ॥
लेकर चीर सभी गुपियनके चढे कदंबमें जाय मुरारी ॥
लै डुबकी उछलो जब नारी देखत चीर निहार निहारी ॥
कोऊ न दृष्टिपरयो काहूकी कहै एक सखी सुनो मेरी प्यारी॥
देखो कौन चढो तरु ऊपर मांगो सब मिलि हाथ पसारी ॥
तबहिं बिहँसि बोले नँदलाला वस्तरलो तुम आओ अगारी ॥
नगन निकसि कैसे हम आवें जात रहै सब लाज हमारी ॥
हमतो खडीं कंठ जल भीतर लागत शीत हमें अति भारी ॥
किरपाकर दासिन पर अपनी चीर हमारे दो गिरधारी ॥

कृष्ण ।

दूं केहि विधि चीर तिहारे ।
मोहिं कदम चढायो ग्वाला । मेरे लाय निकट पट डाला ॥
फिर वे बन मांहि सिधारे । दूँ केहिविध चीर तिहारे ॥
निज बल उतरो नहिं जाई । नहिं देतो चीर गहाई ॥
कर पग कम्पतहैं सारे । दूँ केहिविधि चीर तिहारे ॥
तुम निकसि आओ तरु नीचे । बिन आये अब नहिं बीचे ॥
मैं डार देऊं पट भारे । दूँ केहि विधि चीर तिहारे ॥
अब कहना मेरा मानो । निजनिज वस्तर पहिचानो ॥
जाने पीरे है या कारे । दूँ केहि विधि चीर तिहारे ॥

गोपियां बोली।

क्यौं कान्ह करो उत्पातें।
अबहीं तुम चीर चुराये। पत्तनमें जाय लुकाये॥
हम जानत तुम्हरी बातें। क्यों कान्ह करो उत्पातें॥
हम राव कंसपर जावें। तुम्हें बहुतक मार दिलावें॥
तब भूल जाओ यह बातें। क्यों कान्ह करो उत्पातें॥
तेरी कहैं जशोदामैया। अब कैसी भई मेरी दैया॥
याहि कौन छुड़ावें हियातें। क्यौं कान्ह करो उत्पातें॥
पर नारिन नगन बुलाओ। मनमें कुछनहिं सकुचाओ॥
हम लाज मरैं वहां आते। क्यौं कान्ह करो उत्पातें॥

कृष्णवचन।

ऐसी क्यौं रिस कीन्हीं सखियों।
जो ऐसेहि मथुरा जाओ। सब पुरके लोग हँसाओ॥
कुछ ऊचनीच मत लखियो। ऐसीक्यों रिसकीन्हीं सखियो॥
मोपैं दाम कंसके है गे। वे तो तुरत आवतेहि लेंगे॥
तुम सबमिल आन परखियो। ऐसी क्यौं रिस० ॥
मैंने घोरी अधिक मिठाई। तुम कबहूं नाहीं खाई॥
अपने नृपके संग चाखियो। ऐसी क्यौं रिस कीन्ही०॥
अब होजाओ जलतें न्यारी। तब चीर मिलेंगे प्यारी॥
अपने मन धीरज रखियो। ऐसी क्यौं रिसकीन्हींसखियो॥

दोहा।

विप्र सुता कहैं कान्हसौं, सुनियो चतुर सुजान॥
राखो धर्म अधर्मको, हिरदेमें पहिचान॥
हो सर्वज्ञ सुजान तुम्हीं यह गुमान हमारो सदाहीहै झूंटा॥

कोऊकहै गौएचरावतकान्ह कहै कोऊग्वालिनको दधिलूटा॥
जानहिं किमि महिमा तुम्हरी जिनके मनसौं अज्ञान न छूटा॥
पटदीजे हमारे कृपाकरके नहिं जातहै नीतिका मारग टूटा॥

कृष्णवचन ।

विप्रनकी तनया सुनो, भयो कहा अपराध ॥
जो तुम विरथा करतहो, हमसँग झूंठो वाद ॥

मांगो तुम धर्मकी रीतिसौं चीर अनीति कहा कछु मोते भई है ॥
तुम वेद पुरान मर्याद तजी सब लोककी रीतिही छांड दई है ॥
निर्लज्ज ह्वै धाय धसीं जलमें मनमें शंका तुमरे न भई है ॥
अब मोतें कहो कि विचारो धर्म कछु बुद्धि तुम्हारी हरीसी गईहै ॥
मन भीतर राखिकें प्रीतिकी रीति कहो मुखसे जो कठोरसी वानी ॥
लये चीर हमार चुराय सभी यह कहा तुमने अपने जिय जानी ॥
हम कंससौं जाय कहैं जौं अभी ले मंगाय पकर तुमको रजधानी ॥
अब वस्त्र हमारे दो श्यामसुँदर तुम काहेको बहुत करोहो कहानी॥
सबलाजरु मानको छांडि कृपानिधि आपको आसरो आन गहेंगीं ॥
जो कछु आपकरें आज्ञा अपने शिर धारिके सोई करेंगीं ॥
पतिमातु पिता दुःख देहि हमें सुख मानिकें ताहुको जाय सहेंगीं ॥
दो वस्त्र हमारे कृपालु धनी हम दासी तुम्हारी सदाही रहेंगीं ॥
है दासी वही जो कहेको करै नातो वोही भली जो रहे वनवासी ॥
निज काजको दासी बने पतिकी परकाजको देखिके होय उदासी॥
हम याहीतें सीख दई तुमको तज वस्त्र कभू जलमें नहिं न्हासी ॥
लैचीर समारकै अंगढको नित आवत जात रहो मम पासी ॥

जब हठ कीन्हीं जो कान आम तजि सब धाँई ॥
लुक छिपकर दोउ कुच ढक करसौं झटपट पहिरन धाँई ॥

करि विनती मांगे पट अपने ठाढीं भईं कदम छाँईं ॥
कीन्हों तुम अपराध भानुको जो जल माँहि नगिन न्हाईं ॥
बहुत करो अस्तुति दिनकरकी कर जोडो उनके माँईं ॥
जोर युगलकर अस्तुति कीन्हीं लाज विवश कछु शरमाँईं॥
सांचीं प्रीति जान गोपिनकी चीर दिये तिनके ताँईं ॥
रामबकस वा कृष्णचन्द्रकी नित परसत पग परछाँईं ॥

यशोदा लालने तेरे बड़ा दंगा मचायाहै ॥
गया गिरधर मेरे घरमें लिये सँग ग्वाल बालनको॥
लिया माखन चुरा मेरा तेरे लालाने खायाहै ॥
मैं आई घरको जल भरकै तो पाया कृष्णको घरमें ॥
मुझे देखा जभी उसने तो घरको भाग आयाहै ॥
करैं क्या अब यशोदा हम तजेंगी तेरी ब्रजनगरी ॥
रहें कैसे तेरे लालाने तो ऊधम मचायाहै ॥
बरजले लाल अपनेको सखी यों कहें यशोदासे ॥
नहीं हम ब्रजको तजदेंगी वचन बुलबुल सुनायाहै ॥
जशोदा श्यामने तेरे मेरा गोरस लुटायाहै ॥
गईथी आज दधिबेचन अकेली बीच वृन्दावन ॥
मिलो मगमें तेरो लाला मुझे हिरदे लगायाहै ॥
बिछाई फूलकी शय्या जशोदा लाल कुंजनमें ॥
लेटगया आप शय्या पर मुझे धोरे लिटायाहै ॥
लईथी डार बहियां भी गलेमें लाल गिरधारी ॥
चलाकर हाथ जोबन पर अधिक आनँद उडायाहै॥
कहूंक्या सुन यशोदा मैं कहा मुझसे नहीं जाता ॥
कहैं बुलबुल वचन मीठा कठिन फंदा छुड़ायाहै ॥

बरजलै श्यामकूं अपने अरज तोतें हमारीहै ॥
कहू मैं बात क्या रानी कही मोपै नहीं जाती ॥
करै उत्पात ब्रज घरघर तेरा लालन मुरारीहै ॥
तेरे लालन लिये बालन गेह मेरे सिधाराहै ॥
सहित सब ग्वाल बालनके मटक दधिकी उतारीहै ॥
दही और दूध सब खायो यशोदा कान्हने तेरे ॥
कछू खायो कछू डारो मटुकिया फोर डारीहै ॥
करैं त्यागन तेरी नगरी बरजले श्याम सुन्दरको ॥
कहैं बुलबुल यशोदा यह अरज तुमसैं हमारीहै ॥

राग सोरठ ।

दीनजान कृपाकरो कृष्ण मुरारी ॥
कंस पछारन दैत्य सँहारन भूमि भार उतारी ॥
धन्य यशोदा धन नँदबाबा धनधन ब्रज अवतारी ॥
धन वृन्दावन धन श्रीगोकुल धनधन ब्रजकी नारी॥
यमला अर्जुन शापतें तारे और पूतना तारी ॥
शकटासुर और तृणावर्त्त एक पलके बीच पछारी ॥
जाय पताल तुरंत सांवरे नाथ लियो अहिकारी ॥
दावानल ब्रजपर चढि आयो अँधाधुंध अँधियारी ॥
कागासुरके उदर पैठिकै भारी अगन पजारी ॥
जल भीतर गज ग्राह लडे और युद्धभयो अतिभारी॥
लडत लडत गजपति जब हारयो दीनानाथपुकारी॥
कहै गजराज आज बनवारी लीजो सुरत हमारी ॥
दीनवचन सुनि आयगये हरि गजकी विपतिनिवारी॥
दुःशासन द्रौपदी सताई अलख नाम उचारी ॥

कृष्णचन्द आनंद कन्द प्रभु त्रिभुवन चन्द मुरारी ॥
द्रौपदि लाज आयकर राखो अब सुध कहां विसारी॥
दुःशासनको गर्व घटायो द्रौपदी पट विस्तारी ॥
धन्यधन्य उन कुंजनकूं जिन कुंजनमें पग धारी ॥
रहस किये जिन मोहनके संग धनधनते ब्रजनारी ॥
प्रेमसखी आनंद कन्दके चरण कमल बलिहारी ॥
बुलबुलको हारि दर्शन दीजो दीननके हितकारी ॥

जबतें मोहिं नन्दनंदन दृष्टि परो माई ॥ कहाकहूँ वाकी छवि वरनी नहिं जाई । मोरनकी चन्द्रकला शीश मुकुट सोहैं ॥ केसरको तिलक भाल तीन लोक मोहैं। कुण्डलकी झलक कपोलन पर छाई । मनोमीन सरवर तजि मकर मिलन आई । ललित भृकुटि तिलक भाल चितवनमें टोना । खंजन औ मधुप मीन भूले मृग छोना॥ सुन्दर अति नासिका सुग्रीव तीन रेखा । नटवर प्रभुवेष धरे रूप अति विशेखा ॥ हँसन दशन दाडिम द्युति मंद मंद हासी । दमक दमक दामिनि द्युति चमकी चपलासी। क्षुद्रघंटिका अनूप वरणी नहिं जाई । गिरिधर प्रभु चरण कमल मीरा बलिजाई ॥

[भजन मुरलियाके तपमें]

कियो है कठिन तप भारी । मुरलिया ताहीतें हरिने मुखधारी ॥
जन्महिं तैं कीन्हीं मति गाढी । वनमें रही एक पग ठाढी ॥
वर्षा शीत और गरमीको दुख । सह कीन्हों तपभारी प्यारी ॥ १॥
एक मन्त्र हरि विधिसौं पावैं । तातैं इतनी सृष्टि उपावैं ॥
हरि याकूं नित मन्त्र सुनावैं । अचरज भयो कहारी प्यारी ॥२॥
मुरली निज तपके फल लीन्हे । ब्रह्मा रुद्र इन्द्र वश कीन्हे ॥
चेतनहूते जड कर दीन्हें । अधरन चढी विहारी प्यारी ॥३॥

हरि व्रजमें नित वेणु बजावैं । तीनलोकधुनिसुनिसुखपावैं ॥
झब्बीलाल मनावैं व्रजको । वास मिलैं वनवारी प्यारी ॥

स्तुति श्रीरामचन्द्रजीकी ।

नमामि भक्तवत्सलं । कृपालुशील कोमलम् ॥
भजामिते पदाम्बुजं । अकामिनां स्वधामदम् ॥
निकाम श्याम सुंदरं । भवाम्बुनाथ मन्दिरम् ॥
प्रलम्बबाहु विक्रमं । प्रभोऽप्रमेय वैभवम् ॥
निषंग चाप शायकं । धरे त्रिलोकनायकम् ॥
दिनेश वंश मण्डनं । महेश चाप खंडनम् ॥
मुनीन्द्र सन्त रञ्जनं । सुरारि वृन्द भंजनम् ॥
मनोज वैरि वन्दितं । अजादि देव सेवितम् ॥
नमामि इन्दिरा पतिं । सुखाकरं सतां गतिम् ॥
विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दुःख तापहम् ॥
भजे सशक्तिसानुजं । शचीपति प्रिया नुजम् ॥
त्वदंघ्रि मूलये नरा । भजन्ति हीन मत्सरः ॥
पतन्तिनो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकुले ॥
विविक्त वासना सदा । भजन्ति मुक्तये सदा ॥
निरस्य इन्द्रियादिकं । प्रयान्तिते गतिं स्वकम् ॥
त्वमेक मद्भुतं प्रभुम् । निरीह मीश्वरं विभुम् ॥
जगद्गुरुञ्च शाश्वतम् । तुरीय मेक केवलम् ॥
भजामि भाव वल्लभम् । कुयोगिनां सु दुर्लभम् ॥
स्वभक्त कल्प पादपं । समस्त सेव्य मन्वदम् ॥
अनूप रूप भूपतिं । ततोऽहं मुर्विजा पतिम् ॥
प्रसीद मे नमामिते । पदाब्ज भक्ति देहिमे ॥

पठन्तिये स्तवन्मिदम्। नरादरेणते पदम् ॥
व्रजन्ति नात्र संशयं। त्वदीय भक्ति संयुतम् ॥

जिनके प्रिय न रामवैदेही।
सो त्यागिये कोटिवैरी सम यद्यपि परम सनेही ॥
तजे पिता प्रहलाद विभीषण बन्धु भरत महतारी ॥
बलिगुरु तजे नाह व्रजवनितन भयेजग मंगलकारी ॥
नातो नेह रामसों सांचो सुहृद सुशील जहांलो ॥
अंजन कहा आँख जेहि फूटे कहिये और कहांलो ॥
सोइ प्रीतम सोइ हितू हमारो पूज्य प्राणते प्यारो ॥
जातें बढ़े सनेह रामसों तुलसी मीत हमारो ॥

जब रघुपति सँग सीय चली ॥
विकल विलोक लोग पुर तिय कहे अति अन्याय अली ॥
कोउ कहै कुल कुवेलि कैकेयी दुखविष विपनि फली ॥
कोउकहै मणिगन तजत कांच लगि करत न भूप भली ॥
तुलसी कुलिशहुकी कठोरता तेहि दिन दलकि दली ॥

मैंने हरि पतित पावन सुने ॥
हौं पतित तुम पतित पावन दुहूं वानक बने ॥
व्याध गणिका गज अजामिल साख वेदन भने ॥
और अधम अनेक तारे जात कापै गने ॥
जानि नाम अजान लीन्हे नरक यमपुर मने ॥
दास तुलसी शरण आयो ताहि राखे बने ॥

भजन राग झँझोटी।

भजु मन राम चरण दिनराती ॥
रसना क्यों न जपत कोमल पद नाम लेत अलसाती ॥

जाके जपे कटै दारुण दुख तीनों ताप सिराती ॥
कहत पुराण सुयश रघुवरको सुनि जुड़ात अतिछाती ॥
श्रोता सुबुधि सुशील सो हरिजन करत सलाह सुहाती ॥
रामचन्द्रको नाम अमी रस सो रस काहे न खाती ॥
सम्वत् सोलहसौ इकतीसा जेठ मास छठ स्वाती ॥
तुलसिदास यह विनय लिखतहैं प्रथम अरजकी पाँती ॥

मन पछतैहो अवसर बीते ॥

दुर्लभ देह पाय हरि पद भज वचन कर्म और हीते ॥
सहस बाहु दश वदन आदि नृप बचे न काल बलीते ॥
हमहम करि धन धाम सँवारे अन्त चले उठरीते ॥
सुत बनितादि जान स्वारथ रत न कर नेह सब हीते ॥
अन्तहु तोहि तजेंगे पामर तू न तैज अबही ते ॥
अब नाथहि अनुराग जाग जड़ त्याग दुराशा जीते ॥
बुझै न काम अग्नि तुलसी कहुँ विषय भोग बहुबीते ॥

भ्रातृगण यह उपदेश हमारा ॥

रघुवर चरण शरणहो उतरो भव सागरके पारा ॥
निर्गुण सगुण रूपदोउ वाके यह सिद्धान्त हमारा ॥
छाँडहु सकल कुतर्क आर्यगण जो होवे निस्तारा ॥
भक्तन हित दयालु नारायण भये मनुज अवतारा ॥
जाहि वेदकहैं शुद्ध ब्रह्मवही दशरथ राज दुलारा ॥
सर्वजगत् व्यापी सर्वान्तर यामी सर्वाधारा ॥
गुण अनेक वह एक रूपहै निराकार साकारा ॥
ऋषि मुनि सुर महिसुर सब मिलि निज मनकीन विचारा ॥
अन्त यही सिद्धान्त किया हरि महिमा अपरम्पारा ॥

सत्यनाम एक श्रीरघुवरका मिथ्या सब संसारा ॥
दीनदयालु धन्य नर जिन हिय रामनाम उजियारा॥
हमतो शरण तिहारी रघुपति दीननके हितकारी ॥
अजामील और गीधव्याध सब गणिकासी तुम तारी ॥
नरसीजीके हमकाज सम्हारी गजकी विपति निवारी ॥
द्रुपदसुताके चीरउबारो हिरनाकुशको उदर विदारो॥
भक्तनको प्रभु काज समारो ऐसे हरि बनवारी ॥
कच्छमच्छ वाराह रूप धरि दुष्टनको संहारी ॥
नारद ध्यान धरत निशिवासर सुधिलो वेग हमारी ॥
भज मन राम चरण सुखसार ॥
जो चाहत कल्याण आपको तो भज वारम्बार ॥
काम क्रोध मद लोभमोहमें मत ना फँसे गंवार ॥
आखिर मृतक होयगो यह तन मनमें सोच विचार ॥
अबहूं चेत अचेत रह्यो बहु नाहिं चीन्हों करतार ॥
मान गुमान करत काहेपें काया जल ह्वै छार ॥
सिगरी आयु कटी सुखदुखसौं कीन्हीं नाहिं समार॥
अब आगेको कहा करेगो नारद कहत पुकार ॥

भजन एकताला।

सीता विन देख कुटी सोचत रघुराई ॥ लक्ष्मण तुम कहा कीन इकली सिय छोड दीन निश्चर कोउ दाव चीन लै गयो उडाई ॥ १ ॥ सिय विन व्याकुल शरीर तनमन नहिं धरत धीर कौन हरै पीर नीर दृग चले बहाई ॥ २ ॥ ढूंढोवन सकल जाय तिनको खोज कहुँ न पाय हमको तो भई माय कैकई दुखदाई ॥ ३ ॥ आगे गिद्धभेंट भई ताने सब बात कही सुनिकें बात मोक्ष दई नारद बलिजाई ॥ सीतावि० ॥ ४ ॥

भजन सीताहरण ।

शिर धुनधुन रोवत जानकी ॥
वंचक संत भयो दशकन्धर भिक्षा मांगी आनकी ॥
तजि मतिमंद कुटिल अज्ञानी मैं दासी भगवानकी ॥
लखन बचन मैं कान न कीन्हों मिथ्या दोष लगायो रे॥
सोइ फल हमको दीन विधाता कठिन बनी इनप्रानकी॥
केहारि भक्ष पकर मत जंबुक मारि है मौत अकाल रे ॥
तज मतिमन्द कुटिल अज्ञानी मैं दासी भगवानकी ॥
सुनत न मूढ चलो लै रथमें ना कोई निकट सनेही रे॥
हमजानी कछु और है इच्छा मोपर कृपानिधानकी ॥

राग प्रभाती ।

राम कामधाम तुम्हीं दीनन हितकारी ॥ अधमनको अधम हरन पापिनको पार करन जन उधार कृपासार विरद यह तुम्हारी ॥१॥ धोखेमें नामलेत पारहोत पायसेत खगमृगको मुक्तिदेत पगसौं शिला-तारी ॥ २ ॥ भक्तनकी टेक राखि ताको वेद देत साखि पांडवन सहाय कियो लियो जन उबारी ॥ ३ ॥ नारद हिये पवित मान पावन कर रामनाम जनि विसार मन अयान टेक यह हमारी॥४॥

प्रातसमय रघुवीर जगावे कौशल्या महतारी ॥
उठोलालजी भोर भयोहै सुरनर मुनि हितकारी ॥
ब्रह्मादिक इन्द्रादिक नारद सनकादिक ऋषि चारी ॥
वाणीवेद विमल यश गावें नाचत दैदै तारी ॥
उमासहित शिव द्वारे ठाढे होत कुलाहल भारी ॥
कर अस्नान दान प्रभु दीन्हों गोगज कंचन झारी॥
जयजयकार करत जनमाधो तनमन धनबलिहारी ॥

राग आसावरी।

सखीरी मुनिसँग बालक काके। रतनारे नैना जाके॥
रविशशि कोटि वदन की शोभा श्याम गौर तनु जाके॥
रामलखन कौसल्या जाये दशरथ नाम पिताके॥रतना० ॥१॥
ऋषिके यज्ञको पूरण करके अब आये राजाके॥
विपता सबकी हरी रामने कारज करन सियाके॥ रत० ॥२॥
कीटमुकुट मकराकृत कुण्डल धनुष बाण कर जाके॥
गौतमऋषिकी नारि अहिल्या तारी चरण छुआके॥ रत०॥३॥
सब सखियां मिल सीय स्वयंवर पूजा करत उमाके॥
तुलसिदास सेवक रघुनन्दन लेख लिखे विधनाके॥ ४ ॥

मनमें मंजु मनोहर होरी॥
सो हारि गौरि प्रसाद एकते कौशिक कृपा चौगुनी मोरी॥
प्रण परिताप चाय चिन्तानिशि सोच सँकोच तिमिर नहिं थोरी॥ रविकुल रवि अवलोकि सभा सर हितचित वारिज वन विकस्योरी॥ कुँवर कुँवरि सब मंगल मूरति नृपदोउ धरम धुरन्धर धोरी॥
राजसमाज भूर भागी जिन लोचन लाहु लह्यो इकठौरी॥
व्याहउछाह राम सीताको सुकृत सकेल विरंचि रच्योरी॥
तुलसिदास जाने सोइ यह सुख जाउर वसन मनोहरजोरी॥

रागदेश।

हँसिपूंछैं जनक पुरकी नारि नाथ कैसे गजके फंद छुडाये॥
तिहारो यही अचरज हमें आये॥ नाथ कैसे०॥
कजरीवन जल प्यास लगीहै जल पीनेको धायो॥
गहिरे जलमें कूदि पऱ्यौ है तब गज ग्राह सतायो॥ नाथ०॥
गज औ ग्राह लरे जलभीतर दारुण युद्ध मचाये॥

गजकी टेर सुनी रघुनन्दन गरुड छोड उठि धाये ॥ नाथ०
भिलनीके बेर सुदामाके तन्दुल हँसिहसि भोग लगाये ॥
दुर्योधनकी मेवा त्यागी शाक विदुर घर खाये ॥ नाथ०
इन्द्रने कोप कियो व्रज ऊपर छिनमें वारि बहाये ॥
गोवर्द्धन स्वामी नख पर राख्यो इन्द्रके मान घटाये॥नाथ०
अर्जुनके स्वारथ रथ हांक्यो यह भारतमें गाये ॥
भारतमें भरुहीके अंडा घंटातोर बहाये ॥ नाथकैसे०
लै प्रह्लाद खंभसों बाँध्यो राजन त्रास दिखाये ॥
जन अपनेकी प्रतिज्ञा राखी नरसिंह रूप बनाये ॥ नाथ०
छोरे न छटे सियाजीको कँगना कैसे चाप चढाये ॥
कोमल गात अंग अतिनीके देखत मनहि लुभाये ॥ नाथ०
जहँजहँ भीर परी भक्तनपे तहँ तहँ होत सहाये ॥
तुलसिदास सेवक रघुनन्दन आनँद मंगल गाये ॥ नाथ०

कुटुम्ब तज शरण रामकी आयो ॥
तज गढलंकमहल और मन्दिर नामसुनत उठिधायो॥
भरी सभामें रावण बैठ्यो चरण प्रहार चलायो ॥
मरख अंध कह्यो नहिं माने बारबार समझायो ॥
आवतही लंकापति कीन्हों हारि हँसि कंठ लगायो ॥
जन्मजन्मके मिटे पराभव राम दरश जब पायो ॥
हे रघुनाथ अनाथके बन्धू दीन जान अपनायो ॥
तुलसिदास रघुवरकी शरणा भक्ति अभय पद पायो ॥

रागगौरी ।

अब देखो राम ध्वजा फहरानी ॥
हरकत ढालरु फरकत नेजा गरद उठी असमानी ॥
लक्ष्मणवीर बालिसुत अंगद हनूमान अगवानी ॥

कहतमँदोदरि सुनपिय रावणकौन कुमतिसिय आनी॥
जिस सागर का मान करतहै तापर शिला तिरानी॥
तिरिया जाति बुद्धिकी ओछी उनकी करत बडाई॥
ध्रुव मण्डलसे पकर मँगाऊँ वे तपसी दोड भाई॥
हनूमानसे पायक उनके लक्ष्मण जैसे भाई॥
जलत अग्निमें कूद परेंगे शोच कभू नहिं पाई॥
मेघनादसे पुत्र हमारे कुंम्भ करणसे भाई॥
एकवेर सन्मुखह्वै लरिहैं युगयुग होय बड़ाई॥
इकलख पूत सवा लख नाती मौत आपनी आई॥
अग्रके स्वामी गढ़लंका घेरी अजहुँ समुझ अभिमानी॥
अबदेखो राम ध्वजा फहरानी॥

राग वसंत।

बन्दौ रघुपति करुणा निधान। जातें छुटेभव भेद ज्ञान॥
रघुवंश कुमुद सुखप्रद निशेश। सेवतपद पंकज अज महेश॥
निजभक्त हृदय पाथोज भृंग। लावण्य वपुष अगणित अनंग॥
अतिप्रवल मोह तम मारतंड। अज्ञान गहन पावक प्रचंड॥
अभिमान सिंधु कुंभज उदार। सुररंजन भंजन भूमि भार॥
रागादि सर्पगण पन्नगारि। कन्दर्प नाग मृगपति मुरारि॥
भवजलधि पोत चरणारविन्द। जानकी रमण आनंद कन्द॥
हनुमन्त प्रेमवापी मराल। निष्काम काम धुक गो दयाल॥
त्रैलोक्य तिलक गुणगहन राम। कहै तुलसिदास बिश्राम धाम॥

सियाराम कहनेका मजा जिसकी जवां पर आगया॥
वोमुक्त जीवन होगया—चारों पदारथ पागया॥
लूटो मजा प्रहलादने उस नामके परतापसे॥

भगवानने दर्शन दिया त्रैलोकमें यश छागया ॥
पाये भजे ध्रुव भक्तने उस नामके परभावसे ॥
सन्मुख प्रभूके जा बसा—संसारमें जश पागया ॥
जातकी भिलनी जो शिवरीथी उन प्रेमसे सुमिरन किया ॥
परमात्मा घर आके उसके हाथोंसे फल खागया ॥
कलिकालके जो भक्तहैं—उनकीतो महिमाहै बड़ी ॥
नरसीकी हुंडी द्वारिका वोह सांवरा सकरा गया ॥
योगि मुनीश्वर देवता उस रूपको खोजत फिरे ॥
जिसपर हुई उसकी कृपा सतगुरु उन्हें दरसागया ॥
कपटीको मिलताहै नहीं वो नाथ सुन्दर सांवरा ॥
प्रेमसे जिसने जपा दर्शन उसे दिखलागया ॥
कहांतक वर्णन करूं हरि नामके गुण काकाराम ॥
आकाशके मानिन्द तुलसीदास रस बरसा गया ॥
रघुवर कौसल्याके लाल मुनिको यज्ञ रचानेवाले ॥
पहुँचे जनकपुरी दरम्यान। तोड़ा सब राजोंका मान ॥
उन्होंने नहीं किया अभिमान। शिवके धनुष तोड़नेवाले ॥१॥
सीता व्याही आई रनवास। माता केकई भई उदास ॥
दीन्हा चौदहवर्ष बनवास। अहिल्या नारि तारनेवाले ॥२॥
जा बांधा सिन्धुका सेत। सुवरण लंका करदी खेत ॥
लंकाभक्त विभीषण देत। जलपर शिला तरानेवाले ॥३॥
बेडा आनपडा मँझधार। तुम बिन कौन लगावे पार ॥
तुमतो होगे खेवनहार। मेरे धीर धरानेवाले॥रघुवर०॥

स्तुति।

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजमन हरण भवभय दारुणम्॥

नवकञ्ज लोचन कंज मुखकर कंज पद कंजारुणम् ॥
कन्दर्प अगणित अमितछवि नवनील नीरज सुंदरम्॥
पटपीत मानहु तडित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरम् ॥
शिरमुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंगविभूषणम् ॥
आजानु भुज शरचाप धर संग्राम जित खरदूषणम् ॥
भज दीनबंधु दिनेश दानव दुष्ट वंश निकन्दनम् ॥
रघुनंद आनँदकन्द कौशलचन्द दशरथ नंदनम् ॥
इमि वदत तुलसीदास शंकरशेष मुनिमनरंजनम् ॥
ममहृदय कंज निवासकरिकामादि खल दलगंजनम् ॥

राग जंगला।

ऐसो श्रीरघुवीर भरोसो ॥
वारि न बोरि सक्यो प्रहलादहि पावक नाहिं जरोसो ॥
हिरनाकुश वहुभांति सतायो हठकारि वैर परोसो ॥ऐसो०॥
मारो चहै दास नरहरिको आपुहि दुष्ट मरोसो ॥ऐसो०॥
मीराके मारणके कारन घोरो जहर खरोसो ॥
रामकृपातें अमृत ह्वैगयो हँसिहँसि पान करोसो ॥ऐसो०॥
द्रुपदसुताको चीर दुशासन मध्य सभा पकरोसो ॥
खैंचत खैंचत भुजबल थाके नेक नाहिं उघरोसो ॥ऐसो०॥
भारतमें भरुहीके अण्डा कोटिन दल बखरोसो ॥
रामराम पक्षी जब टेरौ घंटा टूटि परोसो ॥ ऐसो श्रीरघु० ॥
जारयो लंक अंजनीनन्दन देखत पुर सगरोसो ॥
ताके मध्य विभीषणको गृह रामकृपा उबरोसो ॥ ऐसो०
रावण सभा कठिन प्रण अंगद हठकारि हरि सुमिरोसो ॥
मेघनाद सम कोटिन योधा टारे पग न टरोसो ॥ ऐसो०

तुलसीदास विश्वास रामको काकर नारि नरोसो ॥
और विभूति कहांलगि वरनौं जेहि यमराज डरोसो ॥ ऐसो० ॥

राग कलिंगणा ।

राम सुमिर लै सुमिरन करलै को जाने कलकी ॥
खबर नहीं या जगमें पलकी ॥
रैन अन्धेरी निर्मलचन्दा ज्योतिजगे झलकी ॥ खवर० ॥
धीरे धीरे पाप कटतहैं मुक्ति होत तनकी ॥ खवर० ॥
कौडी कौडी मायाजोडी करवातें छलकी ॥
शिरपर गठरी धरी पापकी कैसे हो हलकी ॥ खबर० ॥
भवसागरको त्रास कठिनहै थाह नहीं जलकी ॥
धर्मीधर्मी पार उतरगये डूब अधम जनकी ॥ खवर० ॥
कहत कबीर सुनोभाई सन्वो काया मंडलकी ॥
भज भगवान आन नहिं कोई आशा रघुवरकी ॥ खवर० ॥

भज मन राम चरण सुखदाई ॥
जिन चरननतें निकली सुरसरी, शंकर जटा समाई ॥
जटाशंकरी नाम पऱ्यो रे त्रिभुवन तारन आई । भज०
जिन चरननकी चरन पादुका भरत रहे लौलाई ॥
सोइ चरण केवट धो लीन्हे जब हरि नाव चलाई ॥ भज० ॥
सोई चरण सन्तन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ॥
सोई चरण गौतम ऋषि नारी तारी चरण छुआई ॥ भज० ॥
दण्डकवन प्रभु पावन कीन्हों ऋषियन त्रास मिटाई ॥
सोई प्रभु तीनों लोकके स्वामी कनक मृगा संग धाई ॥ भज०
कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल तिन जय छत्र फिराई ॥
रिपुको अनुज विभीषण निशिचर परसत लंका पाई ॥ भज० ॥

शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक शेष सहस मुख पाई ॥
तुळसिदास मारुतसुत महिमा प्रभु अपने मुखगाई ॥ भज० ॥
भुजन पर आवत धनुष धरे ॥
राजा दशरथजीके चार पुत्रहैं तिनमें कौन बडे ॥ भुजन० ॥
सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुहन तिनमें राम बडे ॥ भुजन० ॥
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी ते दोऊ बंधु हरे ॥ भुजन० ॥
कंचन थार कपूरकी बाती आरति जनक करे ॥ भुजन० ॥
मखना हाथी जरद अँबारी तापर राम चढे ॥
तुळसीदास आशरघुवरकी हारिके चरन परे ॥ भुजन० ॥

प्रभातीपद।

मेरे तो एक दीनानाथ आसरा तिहारो ॥
वित्तीभर जमीन नाहीं। वस्त्रमें कोपीन नाहीं ॥
महाकंगाल नाहीं कौडीको सहारो ॥ मेरेतो० ॥
मित्रकलत्र तात मात। दारासुतभगनी भ्रात ॥
सबने छोड दियो साथ। कोऊ ना हमारो ॥ मेरेतो० ॥
चलकर गती नाहीं। विद्याहीनमती नांही ॥
होनहार प्रबळ योंही। होत है गुजारो ॥ मेरे तो० ॥
धर्मकर्म बनत नाहीं। भक्ति भाव सधत नाहीं ॥
निश्चय कछु परत नाहीं। सोचसोच हारो ॥ मेरे तो० ॥
अक्षरका ज्ञानहो। अर्थका ध्यानहो ॥
निर्भय निर्वाण हो। भेद बुद्धि टारो ॥ मेरेतो० ॥

पद।

निश्चय एक राम जान दूसरा न कोई ॥
आपी आप बाग बना। आपी आप वेल हुआ ॥

आप वेल सींचत है । आपी वेल बोई ॥ निश्चय०
लागत फल फूल पात । खिलखिलकुम्हलातजात ॥
निर्भय राम इच्छा सों । होनीहो सो होई ॥ निश्चय०

करोरे मन वादिनकी तदवीर ॥

भूषन वसन द्रव्य घरबारा । यहीं रहै सब ठाट गँवारा ॥
खाली लाद चले वनजारा । नेक धरै नहिं धीर ॥ करोरे०
सुत वनितादि सकल परिवारा । किसकातूऔरकौनतिहारा ॥
जादिन बिछुरै हंस विचारा । नैनन भरलाये नीर ॥ करोरे०
इंद्रिन ग्राम स्थल होजावे । बारंबार जिया घबरावे ॥
कोई नहीं जो प्राण बचावै । जबहो मृतक शरीर ॥ करोरे०
निर्भय राम भूलमत जाना । मोहजाल लोभहै दाना ॥
यामें आकर जान फँसाना । यमपुर जात अखीर ॥ करोरे०

बतादे तोमें बोलत है सो को है ॥

ब्रह्माहरी महेश भवानी । पंडित वैद्य ज्योतिषी ज्ञानी ॥
योगीयती ऋषि मुनि नांहीं । कौन सृष्टिमें वोहै ॥ बतादे० ॥
अग्नि पवन जल अकाश मारी । तारा गण रवि शशी दिनराती ॥
इंद्रिनदेह प्राण मन नाहीं । अचरज येही बडोहै ॥ बतादे० ॥
वैश्य मिरहमन कायथ क्षत्री । तगा शूद्र विसनोई खत्री ॥
सैयदशेख मुगल ईसाई । पठान ना कम्बोहै ॥ बतादे० ॥
संन्यासी ब्रह्मचारी हाजी । सूफी पादरी मुल्ला काजी ॥
सेवक मित्र और नहिं स्वामी । खोटो नाँहि खरो है ॥
कडवा चरपरा खारी सीठा । नमक अलोना खट्टा मीठा ॥
लम्बा चौंडा ऊंचानीचा । मोटो नाहिं लटोहै ॥ बतादे० ॥
रक्तश्वेत नारंजी पीला । काला हरा वैंजनी नीला ॥

करो नरम कुरूप रूप नाहिं । तातोही ना सीखे है ॥
आपही भूला पूछत डोलै । आपही माँहि आपही बोलै ॥
रहै अचेत न चेतै तौलौं निर्भय ज्ञान न होहै ॥ बतादे० ॥

पद ।

अनुभव स्वरूप निजरूप लखा जिन सोहं शिवोहं रटारटा ॥
अक्षय धन निर्भय मिलजावै । तृष्णा कबहुं निकट नहिं आवै ॥
कर सन्तोष बैठरौह घरमें—मत बाहर फिर उठाउठा ॥ अनुभव० ॥
जीवन मुक्त सुख जो तू चाहै । निर्भय और क्या यत्न बताये ॥
ब्रह्मानंदसे पूरण होजा—विषय आनंदको घटाघटा ॥ अनुभव० ॥
शीतल हृदय शांत चित होई । वृथा कल्पना उठे न कोई ॥
निर्भय अन्तर निर्मल करलो—मल जितने हैं छुटाछुटा ॥
राग और द्वेष नष्ट होजावे । चहुँदिशि एकहि भाव दिखावे॥
निर्भयहो निश्चय यही राखो—दृष्टि दृश्यसे हटाहटा ॥ अनुभव० ॥
नामरूप गुणते है न्यारो । सत्‌चित्‌ आनँद भाव हमारो ॥
माखन माखन खालो निर्भय छांड़ चलो यहीं मठामठा ॥
अनुभव स्वरूप निजरूप लखा जिन सोहंशिवोऽहं रटारटा ॥

मोसम कौन अधम अज्ञानी ॥

हम हमके वश प्रभु नहिं हेरो भयो देह अभिमानी ॥
सेवत विषय जोग विष लागत उलटी फांस फँसानी ॥
धनधन करत उमर सब बीती तृष्णा नाँहि अघानी ॥
लाख सुनी मानी नहिं एकहु साधु सन्तकी बानी ॥
आपकी कछु सुधि नाहिं राखी तकतक आश बिरानी ॥
निर्भयराम या पचरँग चादर दिनदिन होत पुरानी ॥

मोसम कौन अधम अज्ञानी ॥

तेरी चादर भई पुरानी । अब तू सोच समुझ अभिमानी ॥
बोया बीज लगाया विरुवा—सींचैं सतगुरु ज्ञानी ॥
जाकी रुई धुनाय कताई—बुनलाया नरज्ञानी ॥ अबतू० ॥
टूकटूक कर डारे जतनसौं—सींकर अँग लिपटानी ॥
ओढ़त ओढत उमरबीत गई—बुरी भली नहिं जानी ॥ अबतू० ॥
ना येहि लगो प्रेमको साबुन—ना पानी सौ धोई ॥
मैली करिडारी पापनसों—लोभमोहमें सानी ॥
रामबकस रखजानी जुगतसौं—फेर हाथ नहिं आनी ॥
अबतू सोच समुझ अभिमानी । तेरी चादर भई पुरानी ॥

यही करमन की खोट—लगीनामेरे हरि दर्शनकी चोट ॥
मूंडमुंडाये जटा बढाये कर लिया घोटम घोट ॥
बहुत मबूत मली गातनमें उसीमें लोटम लोट ॥ लगीना मेरे० ॥
घी गुड खाय अरे मनमूरख बहुत चढायो मोट ॥
तिरिया संगरैन सुख लूटो उसीमें लोटमलोट ॥ लगीना मेरे० ॥
जो नर ध्यान करै उस प्रभुको—उसे नहिं कुछ टोट ॥
रामबकस ताहीसौं लीनी श्रीरघुपतिकी ओट ॥
लगीना मेरे हरि दर्शनकी चोट । यहीकरमनकी खोट ॥

मन तुम रंगे न राम रतनमें ॥
भटकत फिरत श्वानकी नांई उदर भरनके जतनमें ॥
रोमरोममें धस रही ममता भीतर बाहर तनमें ॥
कहत कबीर योंही चलो मूरख रहगई मनकी मनमें ॥
मन तुम रंगे न राम रतनमें ॥

विपतिमें हिरनी हरिको पुकारी । मेरी सुनियो टेर गिरधारी ॥
संकटमें एक बंकट उपजो—कहत मिरगकी नारी ॥

बाँहगहेकी लज्जा रखियो साँवरिया बनवारी ॥ विपतिमें०
एकओर वाने जाळ लगायो एक ओर अगन पजारी ॥
एक ओर वाने श्वान खडे किये एक ओरवदकशिकारा॥ विपतिमें०
उलट पवन वाको जाल जलाओ श्वानमरे शिर मारी॥
बंबईमेंसे विसियर निकलो डसलियो वदक शिकारी ॥ विपतिमें०
मन आनंद भयो हिरनीके कृष्ण चरण बलिहारी ॥
सूरश्यामकी अविगत लीला अपनेहि हाथ उबारी ॥
विपतिमें हिरनी हरिको पुकारी ॥

आलावो दर्वेश कहावै ॥
दृढ आसन सन्तोषका खप्पर सत्य लंगोट चढावै ॥
प्रेमकी सैली ध्यानका आशा ज्ञान भबूत रमावै ॥ आला० ॥
दयाधर्म दोउ जटा बांधकै—समता तिलक लगावे ॥
अजपा जाप सुरतसौं लावै—घटमें अलख जगावै ॥ आला०
अन्तर धूनीलगा जतनसौं—प्राण पवन ठहरावै ॥
सहजही सहज नेम करि फूंकै—ब्रह्म अग्नि परचावै ॥ आला०
तीनग्रन्थि षटचक्रन वेधे—दशम द्वार तक जावे ॥
उलट नैन निरखै छवि निर्भय सतगुरु भेद बतावै ॥ आला०

साजन विन नित नई होत पीर ॥
उमड घुमड जुबना चढिआयो । घुमड घुमड नैननमें छायो ॥
गरजगरज पियापिया रटलायो—वर्षवर्ष बहो जात नीर ॥ साजन० ॥
तडप तडप जियरा घबरानो धडक धडक छतियां अकुलानो ॥
धमक धमक लगो शीश फिरानो मसक मसक फट गयो चीर ॥ सा०
घर काटै वन सूना लागै भूषण वसन विषय रस त्यागै ॥
सूनी सेज निरख डर लागै लाज गई ना रहो धीर साजन ॥

निर्भय सखी कहत कर जोरी इतनी बात मानलो मोरी ॥
जीवनकी आशा तज दो री सुख सागर को गहो तीर सा० ॥

मन तुम राम सनेही होना ॥
बडे भाग मानुष तन पायो वृथा स्वांस मत खोना ॥ मन० ॥
ज्ञानरूप सावन सौं निशिदिन अन्तसके मल धोना ॥ मन० ॥
या नगरी में चोर वसत हैं हरदम चौकस रहना ॥ मन० ॥
निर्भयराम व्याह रस चाखो वेग करालो गोना ॥ मन० ॥

भजन।

जो कोई चितसे मोय न बिसारे मैं न बिसारूं प्रण है यही मेरा॥
धर्म पिय हो धर्म वढाऊं सफल कार्य करूँ अर्थ बताऊं ॥
मुक्ती चाहै पार लगाऊं क्षणपल माहिं न लागत वेरा जो० ॥
रोग हरूं चिन्ता को टारूं अभय करूं वैरिन को मारूं ॥
निर्भय भक्त जनवेग उवारूं सैवा करूं आपवन चेरा जोको० ॥

चेतावनी।

जागते रहना मुसाफिर यह ठगों का ग्राम है ॥
आँखें खोलो लाडले क्या ख्वाब गफलत में पडा ॥
दिनतो सारा ढल चुका अब शिरपै आई शाम है ॥ जागते० ॥
तुझसा गाफिल आजतक हमने कभी न देखा नहीं ॥
रहने वाला है कहां क्या तुम्हारा नाम है ॥ जागते० ॥
जाहिलो की बात क्या है लुट गये अकिल यहां ॥
तुमको जो सूझे सो कर कहनाही अपना काम है ॥जागते०॥
तन वरहना हाथ खाली सोने का कुछ डर नहीं ॥ जा० ॥
सोचहै निर्भय यही अंटी में तेरे दाम है ॥ जागते रहना० ॥
जैसे तैसे गुजर जायगी योंहीं तेरी गुजरान वे ॥

चिन्ताकर कुछ हाथ न आये होनहार नहिं मिटै मिटाये ॥
सावधान हो हरि सुमिरनकर तजदे मान अपमानवे जैसे ० ॥
भोरहोत चल देना खासा रैन मात्र कितहूं कर वासा ॥
क्या मन्दिर क्या बाग बगीचा झोंपडी क्या मैदा नवे जैसे० ॥
शरीरका होजा रखवाली वस्त्रमात्र मिल जाये खाली ॥
क्या मलमल क्या गजी अधोतर क्या कम्मल अलवानवे जै० ॥
भोजन जो कुछ मिले सो खावे प्राणन का पालन हो जावे ॥
चराचबेना शाकपात क्या क्या मेवा मिष्ठानवे ॥ जैसेतैसे० ॥
अष्ट पहर निरन्तर रटना हरी भजनसे कभी न हटना ॥
और प्रमाण सभी वार्तोंका याको नहीं प्रमाणवे जैसेतैसे० ॥
नामरूप गुणते है न्यारा सतचित आनन्द भाव हमारा ॥
निर्भय राम राम की सौगंद यही तो निर्मल ज्ञानवे ॥ जैसे० ॥

जतन विन मृगोंने खेत उजारा ॥

पांच मिरग पच्चीस मिरगनी संग लिये तीन चिकारा ॥
दिन धौले अन्दर घुस आये फांद फांद कर वारा ॥ जतन० ॥
इत उत डोलत कूदत फांदत भय नहिं करत गँवारा ॥
मेड सभी तोडी क्यारिनकी उलट पुलट कर डारा ॥ जतन० ॥
किसको को बरजै को माने सबरो खेल विगारा ॥
चुन २ पात फूल फल खाये तिनका तलक न छाडा ॥ जत० ॥
अपनी सुधि खेती की बुधि नहिं दुर्लभ है निस्तारा ॥
निर्भय राम कहो कैसी करोगे सोवत है रखवारा विन जतन ॥
मृगोंने खेत बिगारा ॥

जतन सौं ओढो जी चादर झीनी ॥

पंच विषय ही सेवत सेवत दाग दगीली कीनी ॥ जतनसौं० ॥

तार तार भइ जात अनारी मोह ग्रन्थि कस दीनी ॥ जतन०॥
फट न जाय तृष्णामत बांधो दुस्तर है फिर सीनी ॥ जतनसौं॥
निर्भय निर्भय जतन यही है सदा रहो लवलीनी ॥ जतनसौं०॥

गजल ।

जहां ब्रजराज कल पाये चलो सखी आज वा वनमें ॥
विना वा रूपके देखे विरहकी दौं लगी तनमें ॥
न कल पडतीहै वेकलको न दिल लगताहै विन जानी ॥
बनी फिरतीहूं योगिनसी सरे बाजार गलियनमें ॥
करूं कुर्वान जो उसपर जनम भर गुन न भूलूंगी ॥
मेरा महबूब जो लाकर बिठादें मेरे आंगनमें ॥
नहीं कुछ गरज दुनियांसे न मतलब लाजसे मेरा ॥
जो चाहो सो कहो कोई बसा अवतो वही मनमें ॥
तेरी यह बात सांचीहै नहीं शक इसमें नारायण ॥
जो सूरतकाहो मस्तानां वो परचै कैसे बातनमें ॥
जहां देखो वहां मौजूद मेरा कृष्ण प्यारा है ॥
उसीका सब है जलवा जो जहांमें आशकारा है ॥
भला मखलूक खालिककी सिफत समझे कहांकुदरत ॥
इसीसे नेती नेती यार वेदोंने पुकारा है ॥
न कुछ चारा चला लाचार चारों हार कर बैठे ॥
विचारे वेदोंने प्यारे बहुत तुमको विचारा है ॥
जो कुछ कहतेहैं हम यह भी तेरा जलवाहै इक वरना ॥
किसे ताकत जो मुँह खोले—यहाँ हर शख्स हाराहै ॥
तेरा दम भरतेहैं हिन्दू अगर नाकूस बजता है ॥
तुझेही शेखने प्यारे अजां देकर पुकारा है ॥

जो बुत पत्थरहै तो कावेमें क्याज़ुजखाक पत्थरहै ॥
बहुत भूलाहै वो इस फर्कमें शिर जिसने मारा है ॥
न होते जलवागर तुमतो यह गिर्जा कबका गिरजाता॥
नसारा कोभी तो आखिर तुम्हारा ही सहारा है ॥
तुम्हारा नूरहै हरषयमें कहाँसे कोह तक प्यारे ॥
इसीसे कहके हरहर तुमको हिन्दूने पुकारा है ॥
गुनाह बख्सो रसाईदो रसाको अपने कदमों तक ॥
बुराहै या भलाहै जैसा है आखिर तुम्हारा है ॥

वह नाथ अपनी दयालुता तुम्हें यादहो या न यादहो ॥
वो जो कौल भक्तोंसे किया था तुम्हें याद हो या न यादहो॥
सुनो गजकी ज्योंहीवोआपदा न विलम्बछिनका सहागया ॥
वहीं दौड़े उठके पयादे वा तुम्हें यादहो या न यादहो ॥
वहजो चाहा दुष्टोंने द्रौपदीको कि लाज उसकी सभामेंले ॥
झट पटको तुमने वढादिया तुम्हें याद हो या न यादहो ॥
वो अजामिल एकजो पापीथा लिया नाम मरनेपे बेटेका ॥
तो नरकसे उसको बचादिया तुम्हें याद हो या न यादहो ॥
वो जो गीध था गणिका जोथी वो जो व्याध था मल्लाहथा॥
इन्हें तुमने ऊचोंका पद दिया—तुम्हें यादहो या न यादहो ॥
खाना भीलनीके वो जूंठेफल कहींशाक दासके घरपै चल॥
योंही लाखों किस्सेकहूं मैं क्या तुम्हें याद हो या न यादहो॥
जिन बानरोंमें न रूप था नतो गुण ही था नतो जात थी॥
तिन्हें भाइयोंका सा मानना तुम्हें याद हो या न यादहो ॥
वोजो गोपीगोपथे व्रजके सब उन्हें इतना चाहा कि क्याकहूं॥
रहे उनके उल्टे ऋणी सदा तुम्हें याद हो या न यादहो ॥

कहो गोपियोंसे कहा था क्या करो याद गीताकी भी जरा॥
यानी वादा भक्त उधारका तुम्हें याद हो या न यादहो ॥
यह तुम्हाराही हरिचन्दहै गो फसादमें जगके बन्दहै ॥
वोहै दास जन्मोंसे आपका तुम्हें याद हो या न यादहो ॥

सांवरेप्यारे मुझे सूरत दिखाता क्यौं नहीं ॥
दिल धड़कताहै मुझे धीरज बंधाता क्यौं नहीं ॥
अर्जुनको तैने सुनाई गीता रथपे बैठकर ॥
एकभी मुझको बचन अपना सुनाता क्यौं नहीं ॥
जंगली भालू औ बन्दरसे भी कीथी दोस्ती ॥
वैसा तू मुझकोभी किसमत वर बनाता क्यौं नहीं॥
चश्मोंपर रक्खूंगा तुझको और न छोडूंगा कभी ॥
एकबेर मुझको तू प्यारे आजमाता क्यौं नहीं ॥
क्या बजाता फिरता है पेडों में बंशी यार तू ॥
सामने मेरे कभी उसको बजाता क्यों नहीं ॥
गिड गिडाता हूं मैं इतना परतू कुछ सुनता नहीं ॥
दीन बन्धू क्यों बना निर्दय कहाता क्यों नहीं ॥
वानेके आगे तेरे ताना तनेगा क्या मेरा ॥
ये तुही तानोंसे कुछ मेरा बनाता क्यों नहीं ॥
जिन्दगीकाक्या ठिकाना मिलना होतो आन मिल ॥
गर नहीं तोलेके खंजर मार वा जाता क्यों नहीं ॥
प्रेमकी तुझको कसम है गर ने मिलना हो तुझे ॥
तो तू अपना हाल मुझसे कहके जाता क्यों नहीं ॥
वे वफाई क्या कहूं मैं श्याम गुलरू यार की ॥
हमसे खामोशी करे कुब्जासे बातें प्यारकी ॥

अब हमें दरवेश होनेका हुकुम नामा लिखा ॥
मुंसफी बचा खूब देखी दौलते दरबारकी ॥
फुर्कत जानामे गौ दिलको नहीं होशो हवास ॥
यह अभी हसरत है बाकी माह रुख दीवारकी ॥
दम बदम है दम तडफता देखे बिन उसकी अदा॥
ऐ तबीबे दो जहां अब ले खबर बीमार की ॥
नन्दके फरजन्दसे अबजा कहोयों हरि बिलाश ॥
अबतो वे बातें निबाही कौल और इकरारकी ॥
राधे राधे सुरसे वंशीमें जो हरि गाने लगे ॥
गोपियोंके हेत प्रेमानन्द बरसाने लगे ॥
देख बाल अलकोंके मुँहपर हरिके ललिताने कहा ॥
श्याम घनके तरह अब मुखचन्द्रपे छाने लगे ॥
रातजागे हो कहां राधाने पूछा श्यामसे ॥
जब उनीदे नैन मन मोहनके अलसाने लगे ॥
गोपियोंके प्रेमकी सरिताका जल ऐसा बढा ॥
ज्ञानयोग ऊधोके सब तिनकेसे बहजाने लगे ॥
खुलगई शिवकी समाधि सुर असुर मोहित हुए ॥
बांसुरी सुनके सहसफन शेषै लहराने लगे ॥
मिलके सखियोंने पकड़ जब हरि ला मुखचुम्बन किया ॥
माय यशुमति दौड़ियो यह कहके मुंसकाने लगे ॥
प्रीति दइमारीने बात अपनीको उलटा कर दिया ॥
जिसको समझातेथे हम वो हमको समझाने लगे ॥
हमसे ऐ ऊधो कभी वो हरि जुदा होते न थे ॥
अब हुए कुब्जाके मीत और हमको तरसाने लगे ॥

आनकर सुखराम हरिदर्शन अमीसे सोचिये ॥
गोपियोंके प्राणरूपी पद्म मुरझाने लगे ॥
कीजियो दरयाफ्त ऊधोजी किसीदिन श्यामसे ॥
क्या कभी वाकिफ न थे वो राधिकाके नामसे ॥
डूबकर यमुनामें मरजावे तो कैसी बातहो ॥
शर्म दुनियांकी नहीं डरते नहीं इलजामसे ॥
जाके वृन्दावनमें रैंहां ढूढ कुंजैं आफियत ॥
जा बजा कबतक फिरेगा गर्दिशे अइयाममें ॥
शरणहारि भक्तिकी ऊधो अब आये जिसका जो चाहै ॥
करोड़ो जन्मके पातक मिटाये जिसका जो चाहै ॥
भटकनेकी नहीं हम गोपियां इस ज्ञान निर्गुणमें ॥
विचारे क्या हो तुम ऊधो भुलाये जिसका जो चाहै ॥
नहीं मिलनेका मनमोहन विना हरिप्रेम सुमरनके ॥
जातीहो गेरुए कपड़े रँगाये जिसका जो चाहै ॥
पियासी कृष्ण दरशनकीहैं जान आई है होठोंपर ॥
धरम ले प्रेमका प्याला पिलाये जिसका जो चाहै ॥
हमारा मनतो बस लवलीनहै उस मोहिनी छबिपर ॥
ये योग और ज्ञान ऐ ऊधो सुनाये जिसका जो चाहै ॥
कहा ललताने मनमोहनसे राधे रूस बैठीहै ॥
उसे अब पांव पड़पड़कर मनाये जिसका जो चाहै ॥
चलाहै श्यामको लै निर्दयी अक्रूर मथुराको ॥
सखीजीदें बोया आंसू बहाये जिसका जी चाहै ॥
जो साधूजनहैं हरएक सासमें करतेहैं भगवत याद ॥
ये दौलत उम्रकी नादां गँवाये जिसकाजी चाहै ॥

पुजानेके लिये जो ब्रह्मज्ञानी बनके बैठे हैं ॥
वे पाखण्डी हैं सुखराम आजमाये जिसका जी चाहै॥
अयसखी घनश्यान विन यह श्यामघन आने लगे ॥
हाय ! यह काले बलाहक जीको डर पाने लगे ॥
देखकर काली घटा और आली दामनकी छटा ॥
घनके बदले नयन मेरे अश्रु बरसाने लगे ॥
आपतो कुब्जासे भूले हमको पाती योगकी ॥
हाय ! ऊधोजीभी सूधो ज्ञान समझाने लगे ॥
रूठजाने पर कभी जो पैर पडते थे मेरे ॥
अब पराये घरमें जाकर आँख दिखलाने लगे ॥
फिर कभी हमको मिलोगे या नहीं तुम कृष्णलाला॥
हाय ! गौरी तुम क्यौं अब प्यारीको विसराने लगे॥
बजरहीहै बंशी मनमोहनकी वृन्दावनके बीच ॥
आह क्या जादू भरीहै श्यामकी रागनके बीच ॥
जी नहीं लगता मेरा जबसे सुनी वंशीकी तान ॥
आग ऐसी लगरहीहै हे सखी तनमनके बीच ॥
ओ सखी चलदेख आवें छवि रंगीले श्यामकी ॥
वो खडा वंशी बजाता होगा इन कुञ्जनके बीच ॥
कृष्णजीको घेरे होंगे सबतरफ़से ग्वालबाल ॥
चंद्रमा जिस भांति शोभा पाता है उडुगनके बीच॥
शोभासे लज्जित मदनहै श्यामकी गौरीदयाल ॥
ऐसे मनमोहनको रखना चाहिये नयन नके बीच ॥
जाके मधुवन श्यामसुंदर हमको तरसाने लगे ॥
तुमभी ऊधो आके बरबश योग सिखलाने लगे ॥

पीपी रटतीहै पपइयेकी तरह घन श्यामको ॥
नयनजल भरभरके अपने मेह बरसाने लगे ॥
नेहमें प्यारेके कैसी रीति उलटी होगयी ॥
जिनको समझातेथे हम वो हमको समझाने लगे ॥
राधेप्यारीकी दशा अफसोस क्या कीजे बयां ॥
फूलसे सब अंग उनके हाय मुरझाने लगे ॥
कूबरीके संग हरि सुखराम करतेहैं विहार ॥
अबतो गोपीनाथ कहनेसे वो शरमाने लगे ॥
समझकर रहमदिल हमने कियाथा प्रेम गिरधरसे ॥
देखिये वोभी तो ऊधोजी निकले सख्त पत्थरसे ॥
शिकायत हमकरैं किस्से गिला किस्से करैं ऊधो ॥
शिकायत या गिला हमको जोहै सोहै मुकद्दरसे ॥
करीथी प्रीति इस उम्मीदपर क्या हमने मोहनसे ॥
रहैं वो पास कुब्जाके वहां और हम यहां तरसे ॥
न दिल बस्तीमें लगताहै न वीरानेमें लगताहै ॥
कभी घरमें कभी बाहर गई योंहीं गुजर बरसें ॥
न भूलें उम्रभर अहसान यह ऊधो तुम्हारा हम ॥
मिलादोगे जो तुम अबकी दफा हमको अगर हरिसे ॥
गिला येहीहै ऊधोजी हमें उन श्याम सुन्दरसे ॥
सतातेहैं हमें आते नहीं कुब्जाके वो घरसे ॥
न जीनेको खुशी ऊधो न गम मरनेकाहै हमको ॥
यहीगमहैकि अब जाने मिलें किस रोज हम हरसे ॥
जुदा जिस दिनसे ऊधोजी हुएहैं हमसे मनमोहन ॥
तड़पताहै उसीदिनसे हमारा दिल ये अन्दरसे ॥

हमारी वेकलीको देख पत्थरभी पिघलतेहैं ॥
हैं वेवस उनसे ऊधो हमके जो हैं सख्त पत्थरसे ॥
लगा छातीसे कुब्जाको करें वो प्यार जग जाहिर॥
हमारे कर्मकी खूबीके हम दर्शनकोभी तरसें ॥
परेशां फिरती हैं ऊधो परेशानी की हालतमें ॥
कभी घरमें कभी बाहिर तडपते होगई वरसें ॥
गिरन्द किस्से कहें हम गरदिशे तकदीरकी गरदिश॥
परेशां करकेभी देखो नहीं टलती है ये सरसे ॥
हजारों जान खोदेते हैं इस मिट्टीकी मूरत पर ॥
फिदा फिर क्यों न हो गोपी मदन मोहनकी सूरतपर॥
जरावंशी बजानेमें लुभाये लोक जिन तीनों ॥
गोपियें क्या फिदाहैं कुल जमाना उनकी आदतपर ॥
करैं तारीफ उनकी कुछ कोई तो हो नहीं सकती ॥
जहूर उनका जो खुलता है वो खुलताहै इबादतपर ॥
उठाते बार कुछ लाये न वह नाखून पर गिरको ॥
गया अरमान इन्दरका भी देखो उनकी ताकतपर ॥
सफाया कंसकाभी एक पलमें कर दिया देखो ॥
जो इकछत राजथा जिसका हजारोंथे खुशामतपर ॥
फांद कालीदह एक दमसे वो जो पातालमें पहुँचे ॥
नाथकर नाग को छोडा उसे उसकी इताअतपर ॥
गिरिन्दा क्यौं नहो जीजानसे उनपर फिदा कोई ॥
कि जिनकी देवताभी तो फिदाहैंगे शवादतपर ॥
खडा यमुना निकट आली श्याम बंशी बजाताहै ॥
बजाकर बांसुरी हमको वो दीवाना बनाताहै ॥

झनक बंशीकी पडतेही कानमें बेचैन करती है ॥
भरी जादूकी वो ऐसी गजब बंशी बजाताहै ॥
सुनीहै जिस घडी जिसदमसे वो बंशी उसीदमसे ॥
नहै कुछ होश तनमनका न दिलको चैन आताहै ॥
न घरमें दिलये लगताहै न बाहर चैन पडताहै ॥
तडपतेही तडपते हमको निशदिन बीत जाताहै ॥
सखीमत देरकर जल्दीसे तू लेचल मुझे उसजा ॥
कि जिस जा वो मेरा प्यारा खडा बंशी बजाताहै ॥
गिरिन्दादासकी अरदासहै येही मदन मोहन ॥
झलक उसरूपकी देखूँ दिखादे दिलये चाताहै ॥
श्यामकी सांवरी सूरत हमें जब याद आतीहै ॥
तो ऊधो रोतेही रोते गुजर दिन रैन जातीहै ॥
कृष्णसे प्रीति करके चैनसे एकदम न बैठे हम ॥
हमें निशदिन तडपतेही तडपते बीत जातीहै ॥
मुशीबतके ये दिन ऊधो वो कब ईश्वर निकालेगा ॥
मुशीबतमेंही दिन बनी मुशीबत और आतीहै ॥
कहैं दुख किस्से हम ऊधो हमारी कौन सुनताहै ॥
न साथी मित्र है अपना न भाई बन्धु नातीहै ॥
गिरिन्दादासकी अरदासहै येही मदन मोहन ॥
लगादी पार अब नैया रही मँझधार जातीहै ॥
हमें जब सांवरी सूरत वो ऊधो याद आतीहै ॥
विरह की आग शिरसे पांव तक दौंशी लगातीहै ॥
कियाथा कौल यह हमसे कि हम जल्दीसें आवेंगे ॥
न आये वो मदन मोहन न भेजी कोइ पातीहै ॥

लिखा कर करसे कुब्जाके हमें जो जोग भेजाहै ॥
हमें यह बात ऊधोजी नहीं उनकी सुहातीहै ॥
जियो लाखों बरस मोहन कि जिनकी हम सुहागनहैं॥
ये सामाजोगका बैरन हमें क्यों कर पठातीहै ॥
पकर कर करसे कर मेरा निकट यमुनाके जा घेरा ॥
ये कहना श्यामसे ऊधो तुम्हैं कुछ याद आतीहै ॥
जो कुब्जा कंसकी दाशी और है जातकी मालिन ॥
लगाई प्रीति बिन पूछे म्हैं कुछ शर्म आतीहै ॥
हमारा रैन दिन रोना निरख पत्थर पिघलताहै ॥
कहूँ क्या संगमर्मरसेभी उनकी सख्त छातीहै ॥
तुम्हारा चन्द्रवत् मुखड़ा गया ब्रज छोड मथुरामें ॥
अँधेरी रात बिन तेरे नहीं बालम सुहातीहै ॥
निशाहै कृष्ण अब ब्रजमें शुक्लहै घरमें कुब्जाके ॥
इसीकारनसे वो बैरन हमारा चित दुखाती है ॥
चुराकर दूधदधि खाना अगर भूले हो तुम कान्हा ॥
पकडकर बांधनेकी सुध तुम्हें दासी दिलातीहैं ॥
हैं सिगरी बैठकर ऊधो करैं अखतर शुमारी हम ॥
विना उन प्राण प्रीतमके निशा यों बीत जातीहै ॥
दिवसमें रासमंडलकी औ चरचा चीर हरनेकी ॥
कोई कहतीहै ब्रजबाला कोई करके दिखातीहै ॥
कोई धर रूप श्यामाका करै अभिमानहै ऊधो ॥
कोई धर रूप मोहनका कोई वंशी बजातीहै ॥
पहरकर पीत पट कटिमें कोई शिर मौर धर आवी ॥
निकट जमुनाके जा नट खट कोई वस्तर चुरातीहै ॥

उठाया गिरिको जिस भांती था तुमने वैसे गिरिधारी॥
लकुटसे टोकरा गोवर वहिन कोई उठातीहै ॥
कँवारिया काँधेपे धरकर लकुटको हाथमें लेकर ॥
वो जाकर तीर जमुनाके कोई गौएँ चरातीहै ॥
किया था रास मिलकर के सबोंने सर्द पूनोंको ॥
विना मुखचन्द्रके ऊधो निशा पूनों न आतीहै ॥
पिया एकवार व्रज आकर पकडदो नाग कालीको ॥
नहीं हे श्याम सुखसागर ये लीला हमसे आतीहै ॥
वरसकर आँखोंसे आँसू हुआ तन जर्द यह सारा ॥
लगा रहताहै इस तनमें ये खेती सूखी जातीहै ॥
विरहकी आगमें जलता निरख कर व्रज यह सारा॥
अधर धर बांसुरी कोई मधुर सुरसे बजातीहै ॥
नहीं मालूम यह गलती करीहै क्यौं विधाताने ॥
चरण कोमल बना करके गढी क्यौं सख्त छातीहै॥
करैंहैं नित्य नृतलीला अलौकिक बृज वनितोंसे ॥
नचावें श्याम श्यामाको तुम्हें श्यामा नचातीहै ॥
निरख व्याकुल दुखित अति देखकर घरपर यशोदाके॥
कोई बन श्याम ब्रजबाला ववक्के श्याम आतीहै ॥
दिया तज चञ्चला चपला नवलतन कामनीयोंको ॥
निठुर घनश्यामको ऊधो वो कुबरी क्यौं रिझातीहै ॥
लडाकर लाड़ पालाथा तुम्हें जिसने लड़कपनमें ॥
अरे बे पीर बिन तेरे वो मइया दुख उठातीहै ॥
दिखाया था वरस तेरा गरगजीको यशोदाने ॥
किया अनुवाद फल ऐसा फटै जिससे कि छातीहै ॥

शनी औ भौम औ सूरज पडेहैं आन सप्तममें ॥
छुटे प्यारीसे वो प्यारा दशा जब ऐसी आतीहै ॥
चुराया दूध दधि ह्यां पर वहां जा चितचुरालीना ॥
अरे चितचोर ! क्यौं तेरी नहीं यह बात जातीहै ॥
लसेसे मोहिनी मूरत जो ठंडक डाल देती थी ॥
स्वयंघर रूप अग्नीका वही तन फूंक जातीहै ॥
पिरनको याद कर करके दरशकी आशमें ऊधो ॥
वरसकर नेत्र जल धारा तपन तनकी बुझातीहै ॥
किया कमशोर नैनोंको दिवस निशिके रुलानेसे ॥
चहूं दिशि श्यामता ऊधो हमैं अब दृष्टि आतीहै ॥
लता वट पात फल फूलोंमेंभी तो श्यामता भासे ॥
झलक जलमेंभी जमुनाके हमें अब श्याम आतीहै ॥
सकल दिशि श्याम सूझेहैं विना घनश्यामके ऊधो ॥
सगुण सर्वज्ञ व्यापकको वो मधुपुरमें छिपातीहै ॥
हुआ जल जलनिधी नैनोंका जमुनाके सहारेसे ॥
उवारो वेग ब्रज आकर ये वस्ती डूबी जातीहै ॥
लबालब जलसेहै लेकिन सदा प्यासेही रहतेहैं ॥
अनोखी बात इन दोऊ दिरगमें तुम बिन लखातीहै ॥
करैं हम ध्यान निर्गुनका ऐ ऊधो कौन रीतीसे ॥
नहीं आधार कुछ उसका नहीं जीमें समातीहै ॥
हुआ जल जलके जलसे चम्पई चोला वसन्ती अब ॥
ऋतू वर्षाभी ऊधोजी हुई बस अन्त जातीहै ॥
"मुरारी" वेगब्रज आओ बजामुरलीजिलाजाओ ॥
विना अपराध हे मोहन ! नहीं तो जान जातीहै ॥

बजाई श्यामने बंशी वो फिर देखो बजाईहै ॥
नहींहै चैन जबसे कानमें आवाज आईहै ॥
खफाहो सास या ननदी जिठानी याहो घोरानी ॥
न मानूं मैं नहीं मानूं जाऊं जिसजां बजाईहै ॥
करमहै तोहै मनमोहन धरमहै तोहै मनमोहन ॥
उसीसे प्रीतहै अबतो उसीसे लौ लगाईहै ॥
मदन मोहनकी बंशीमें ये जादूहै या है टोना ॥
सुनीहै गिरिन्द जबसे आग तनमनमें लगाईहै ॥
ध्यान ईश्वरसे इस संसारमें जिसने लगायाहै ॥
तो कुछ आनन्द इस संसारका उसनेहि पायाहै ॥
सत्यवादी हुआ राजा हरिश्चन्द्र उसको देखिये ॥
राह ईश्वरमें घर अपना सभी उसने लुटायाहै ॥
विका चाण्डालघर जाकरवो अपने धर्मके कारन ॥
बढाया धर्मको अपने एक उसने बढायाहै ॥
अरे मन राम सुमिरनसे नहो गाफिल नहो गाफिल ॥
इसीके वास्ते संसार सागरमें तू आयाहै ॥
पारबेड़ा हुआ उसका गिरिन्दा एकहो पलमें ॥
भजन ईश्वरका जिसने के बनाया और गायाहै ॥
न बल्लीहै न पाताहै न कुछ इसका सहाराहै ॥
लगादो पार अब नैया हमारी मँझधाराहै ॥
तुम्हींहो विश्वके दाता कहूं तुम विन मैं अब किस्से ॥
तुम्हाराही हे दीनानाथ बस मुझको सहाराहै ॥
न पूजा पाठ ना जप तप न सुमिरनही करा तेरा ॥
पापहीमें रहा निश दिन ध्यान ईश्वर हमाराहै ॥

करैं तू पारतो बेड़ा ये भव सागरसे हो मेरा ॥
भँवरमेंहै फँसा बेढब नहीं इसका गुजाराहै ॥
गिरिन्दा दासको अर्जी लगीहै एक मुद्दतसे ॥
है इच्छा दर्शकी होवै दरश ईश्वर तुम्हाराहै ॥
यशोदा कान्हने तेरे करी ये गति हमारीहै ॥
चोर सब लेगया हरके नगिन जोहैं सोनारीहैं ॥
खड़ी मुद्दत रहीं जलमें बता कैसी करे अब हम ॥
किया इस लालने तेरे हमें ऐसा दुखारीहै ॥
पड़े पैयां करैं विनती सुनी तोभी न कुछ उसने ॥
करैं क्या हम कहां जाँये हमें करता वो आरीहै ॥
हटकतीहो न तुम उसको न करतीहो मना उसको ॥
तुम्हींने खुद सिखायाहै खुशी खुदही तुम्हारीहै ॥
अब हमभी कंसपै जाकर कहें सब गिरिंद ये हालत॥
हमें हररोजही उसने ये जक देनी विचारीहै ॥
कहांसे आई हो तुम ये तुम्हें किसने सिखायाहै ॥
जो झूंठा झाड़ मोहनको मेरे तुमने लगायाहै ॥
अभीतो सोरहाहै लाल मेरा देखलो जाकर ॥
फिरोहो मस्त मदमाती जोम ज्वानीका छायाहै ॥
मेरा लालाकहीं आये न जाये वो कभी घरसे ॥
कि तुम सबकी सबोंने चोर अब जिसको बनायाहै॥
चलो जाओ उठो ह्याँसे करो ऐसी न तुम बातें ॥
ये है झूंठा सभी झगड़ा किजो मुझको सुनायाहै ॥
गिरिन्दाकुछ फिकरमत करन कुछगमकरतू अब इसका
दरशहो श्यामका तुझको ध्यान तूने लगायाहै ॥

करके प्रभुता दीनानाथ । मेरी नैया पार लगादो ॥
अटकी भ्रमरजालमें आये । चक्कर बेसुध इसने खाये ॥
बल्ली प्रेमकी अब तुम आये । आकर इसमें जरा लगादो ॥१॥
अपनेथे मेरे बहुतेरे । मैंने बहुतेरे सब टेरे ॥
आया निकट न कोई मेरे । मेरीउलझीकोसुलिझादो॥ करके०२
नैया अटक रही मँझधार । नहिं कोई इसका खेवनहार ॥
विन प्रभुता नहिं होवे पार । प्रभुता करके पार लगादो॥करके०३
अर्जी गिरिन्दकी दरबार । लग रहीहै अब हे करतार ॥
इसकेहो तुम खुद मुखतार तुमही इस पर स्वाद बनादो ॥
करके प्रभुता दीनानाथ नैया मेरी पार लगादो ॥

हमारे चीर हमको दे मुरारी । नगिन हम खडी जलमें उघारी ॥
कहैं करजोर और पइयां परैं हम । लाज खोतेहो क्यों मोहे न मुरारी॥
निकलकर जलसेजिसदम आओ बाहर । उसीदम हम सुनै बिनतीतुम्हारी
आएँ कैसे निकल कर जलसे बाहर।खडीहैं सब की सब जलमें उघारी।
चीरतो जब मिलैं तुमको तुम्हारे। कि सब तुम आओ जलसे होके न्यारी।
ढका तन हाथसे सब गोपियोंने निकलाकर तीवो सब आई बिचारी।
गिरिन्दादास देकर चीर गिरधारी। लगे हँसनेको फिर देदेके तारी॥

सहारा ये मेरे ईश्वर मुझ आजिजको तुम्हाराहै ॥
पडीहै भीड मुझपर तो तुम्हें मैंने पुकाराहै ॥
न पूछा पाठ ना जब तब कपट में ध्यान धाराहै ॥
न जाने कौन गति होगी ठगा संसार साराहै ॥
मेरी गफलतने ऐ स्वामी मुझे बिन मौत माराहै ॥
न छोडा दीन का मुझको न दुनियांमें गुजाराहै ॥
सफर भारीहै सरपर कूंचका बजता नकाराहै ॥

लगादो पार भवसागरसे हर बेडा हमाराहै ॥
निकलतेह स्वाँस दुनियांमें किसीका कौन प्याराहै ॥
छोड सुवरनसी यह काया हंस इकला सिधाराहै ॥
सिवातेरे न ईश्वर कोई दुनियाँमें हमाराहै ॥
लगादो पार अब नैया हमारी मांझ धाराहै ॥
तडपते रोते शिर धुनते हमें दिन यूंही जातेहैं ॥
सैंकडों ख्याल ऊधोजी हमारे दिलपे आते हैं ॥
प्रीत कुब्जासे करके श्याम हमको ऐसे भूलेहैं ॥
नहीं सुपनेमेंभी अबतो हमें सूरत दिखातेहैं ॥
खता उनकी नहीं ऊधो है अपने कर्मकी खूबी ॥
ऐश कुब्जा उडातीहै हम अपना दिल दुखातीहैं ॥
नजूमी और पंडितसे जो पूछा तो यूं बोले ॥
न घबराओ तुम्हारे दिन अब अच्छे आतेजातेहैं ॥
न बाहर दिलही लगताहै न घरमें चैन आताहै ॥
विपतमें दिन पहाडोंकी बराबर होही जाते हैं ॥
न खाते हैं न पीते हैं नाम लेलेके जीते हैं ॥
हुआ तन सूख सब पिंजर ये सदमें हम उठातेहैं ॥
है तनमें प्राण कायम जब तलक कर रामका सुमरन॥
गिरन्दा अब वक्त आखिरहै ये दिन बेकार जातेहैं ॥
बुराई कर्मकी ऊधो जो पंडितको दिखातेहैं ॥
तो वो कुछ और से और ही हमें बातें बतातेहैं ॥
शिकायत अब करें किससे नहीं जाहै शिकायतकी ॥
बुराईके सरासर दिन हमें गर्दिश दिखातेहैं ॥
नहीं तकदीरके आगे कोई तदबीर चलतीहै ॥

किये जो मित्र वोभी हमसे अब आंखें चुराते हैं ॥
कहैं करजोर और पैयांपरैं ऊधो तुम्हारी हम ॥
कहो मोहनसे जाकर आग क्यौं तनमें लगाते हैं ॥
न छोडे ध्यान जिन्दा जबलो हैं ऊधो तुम्हारीसौं ॥
सुमरनी हाथले वस्तर अभी सारे रंगाते हैं ॥
बगलमें दाव मृगछाला कमण्डल हाथले ऊधो ॥
श्याम घनश्याम कहकहकर अलख घरघर जगाते हैं ॥
फिकर जगदीश उसको क्या कि जिसपर रामकी किरपा ॥
गिरिन्दा हरिनामकी माला नाम लेले फिराते हैं ॥

हमारे दर्द दिलको भी दवा कुछ ऊधो आती है ॥
जिगरतो खालिया गमने लो बस अब जान जाती है ॥
लो अब इस वक्त आखिरमें तो उन हरिसे मिलादीजे ॥
हैदम इस दम निकलने पर ये दशरत साथ जातीहै ॥
लगीहै लौ यही अबतो वो कब आयें वो कब आयें ॥
इसी खटकेमें ऊधोजी गुजर दिनरैन जातीहै ॥
चैन पड़ता नहीं एक पल करें कैसी कहां जायें ॥
ये दिल फटताहै सूरत श्यामकी जब याद आतीहै ॥
हमारी छोड़के सुधि श्याम घर कुब्जाके जा बैठे ॥
भाग्यकी बात हम तड़पें एश कुंवरी उड़ातीहै ॥
जतन कीजे कोई ऐसा जो देखें अपनी आंखोंसे ॥
दरश विन वेकरारी अब हमें हरदम सतातीहै ॥
भजन जगदीश भवसागर में ईश्वरका किया जिसने ॥
गिरंदा नहिं अंतमें कोई विपत फिर उसपे आतीहै ॥
जिगर जलभुन हुआ कोयला स्वांस कम कम निकलताहै ॥

बस अबतो श्याम बिन ऊधो हमारा दम निकलताहै ॥
सबर इस बेसबर दिलको नहीं होता नहीं होता ॥
याद मोहनकी आतीहै—तो अपना दम निकलताहै ॥
हम ऊधो इश्कमें मोहनके ऐसी होगई लागर ॥
जो आंसूभी निकलताहै तो थम थम कर निकलताहै ॥
सुबूसे शामहो जातीहै हमको इन्तजारीमें ॥
नजर पडता नहीं मोहन और एक आलम निकलताहै ॥
गिरँद एक पलमें ईश्वर उसका बेडा पार करताहै ॥
कि बस धर्मों दयामें जो बशर कायम निकलताहै ॥
सखी बस श्याम बिन अबतो नहीं दिलको करारीहै ॥
तडपतेही गुजरतीहै औ हरदम आहो जारीहै ॥
लगाकर दिल कन्हैयासे सैंकडो गम उठातेहैं ॥
लगाये दोष किसको ऐसी ये किसमत हमारीहै ॥
गुजर जाताहै दिनतो आहो जारीमें अरी आली ॥
रात कटती है मुशकिलसे यही दुख हमको भारीहै ॥
नहीं कोइ दुख दरद का भी हमारा पूछने वाला ॥
सुनायें हाल दिल किसको नीर नैनोंसे जारीहै ॥
कभी कुंजोंमें ढूढ़ा जा कभी जमुना किनारे पर ॥
मिला तो भी नहीं वो श्याम जिसकी इन्तजारीहै ॥
सखी वो श्याम एक लहजेको छातीसे जो लगाजाये ॥
तपिश दिलकी बुझे सारी तो फिर कोई की ख्वारीहै ॥
भरोसा जिन्दगी काहै नहीं जगदीश दुनियांमें ॥
गिरन्दा मतकर फिकर अब पुश्तपर तेरी मुरारीहै ॥
हमारी गरदिशे तकदीर क्या क्या रंग लातीहै ॥

न देखा दुख जो आँखोंसे ये वो दुख अब दिखातीहै ॥
सिवा तकदीरके ऊधो किसीसे क्या शिकायतहै ॥
ये जो चाहै सो करती है नहीं इस्से बसातीहै ॥
कभी कुंजोंमें फिरतेहैं कभी यमुना किनारेपर ॥
कभी ये खूबिये किस्मत हमें दर दर फिरातीहै ॥
प्राण छूटै तो छूटै पर न छूटै ध्यान मोहनका ॥
वोही दिलमें समायाहै उसी पर जान जातीहै ॥
है इस संसार सागरमें तो बस दर्शनही मिलाहै ॥
गिरिन्द एकदम निकलतेही किसीका कौन साथीहै ॥

[गजल रामकी कौसल्यासे] ।

अरी क्यों ये मेरी माता नीर नैनोंसे जारीहै ॥
लिखा नहिं भागका मिटता तू क्यों होती दुखारीहै ॥
नहीं रोनेसे कुछ होवे न कुछ हो जान खोनेसे ॥
सबर कर बैठो तुम घरमें गिरह कोई हमपे भारीहै ॥
पिताने देदी आज्ञा बस अब आज्ञा आपभी दीजै ॥
खता नहिं कुछ किसीकीहै बुरी किसमत हमारीहै ॥
न पायें अब यहां भोजन न इसजा हम पियें पानी ॥
जोहै इच्छा पिताजीकी सोई माता हमारीहै ॥
नगरमें हमगली कूचे पीटते सरहैं पुरवासी ॥
गिरिन्द जिसतर्फ देखो उस तरफही आहोजारीहै ॥

गजल कौसल्याकी रामसे ।

चले तुम बनको हमको ठोकरोंपर छोडे जातेहो ॥
लाल माताको अपनी जीतेजी यह दुख दिखातेहो ॥
सबर कैसे करूंगी मैं धीर किस पर बँधाऊंगी ॥

लाल बतलाओ तो हमको कहेक्या हमसे जातेहो ॥
कटारी मार मरजाऊं या विष मैं बस अभी खाऊँ ॥
तडपती छोड माताको पुत्र तुम बनको जातेहो ॥
फोड दीवार दरसैशिर मैं मर जाऊं मैं मर जाऊं ॥
ये दुख कैसे सहूंगी मैं कि जो दुख तुम दिखातेहो ॥
गिरिन्द एकदिन हुए पैदा होय ना पैदभी एकदिन॥
एकदिन होयगा ऐसा चले मर्घटको जातेहो ॥
रामसे रोके कौसल्या लगी कहने विचारीहै ॥
धीर कैसे बंधे तुम बिन विपत ये हमपे भारीहै ॥
ये दुख मैं देखती काहेको जो पहलेही मर जाती ॥
गिरी गश खाके कौसल्या धरन विपतिकी भारीहै ॥
अरे वेपीर ईश्वर ये जुलुम मुझ पर किया तैंने ॥
रहूं मैं भी नहीं जिन्दा जो ये मर्जी तुम्हारीहै ॥
मेरा ये राम इकलौता फिरेगा बनही बन मारा ॥
सोहै धिक्कार जगजीवन यही हमने विचारीहै ॥
नजा वनको नजा वनको कहा तू मानले मेरा ॥
फोड दीवार दरसे सर मरे माता तुम्हारीहै ॥
तडपती रोती सरको पीटती फिरतीहै कौसल्या ॥
जतन अब क्याकरूं ईश्वर गती कर्मोंकी न्यारीहै ॥
पकडके हाथ छातीसे लगा जो रोई कौसल्या ॥
अवधमें शोक था ऐसा हैरेक जा आहो जारीहै ॥
ये दिन दुश्मनकोभी ईश्वर न दिखलाये न दिखलाये॥
लालकी हाय बनको सामने मेरे तैयारीहै ॥
कर्म लिक्खे को ऐ जगदीश क्या कोई मिटावेगा ॥

निरिन्द अब रामकी देखो चली वनको सवारीहै ॥
राम लक्ष्मण चले वनको संग सीतासी नारीहै ॥
प्राण त्यागेहैं दशरथने अवधमें शोक भारी है ॥
हांकते रथके पुरवासी पीटता कोई रोताहै ॥
कोई कहताहै मत इस कैकईकी किसने मारीहै ॥
मारती सर दरो दीवारसे फिरतीहै कौसल्या ॥
येही कहतीहै रोरोकर लगा तन घाव कारीहै ॥
मुसीबत जैसी हम परहै न दुश्मन पर हमारेहो ॥
न जीतेहैं न मरतेहैं बुरी हालत हमारीहै ॥
जाय वन लाल मेरा और मैं देखूं अपनी आंखोंसे ॥
अरे बेदर्द हे ईश्वर ये तैंने क्या विचारीहै ॥
ये दुख दुनियांमें है ईश्वर तू दुश्मनकोभी मत देना॥
कि जो दुख दे मुझे तूने किया ऐसा दुखारीहै ॥
हाय ईश्वर ! हे परमेश्वर ! मुझीपर कोपहै तेरा ॥
दागपर दाग देताहै ये क्या तूने विचारीहै ॥
जुदा मा बापसे बेटा हो जिसका वो जिये कैसे ॥
मुसीबत इस्से जादा क्या न दुख कोई इस्से भारीहै॥
गिरिन्द अब किस फिकर किस सोचमें किस ध्यानमें होतुम॥
चलो बांधो कमर चलनाहै मंजिल पहली भारीहै ॥

[श्रीरामचन्द्रजी]

बुराई कर्मकी मेरे मुझे वनवन फिरातीहैं ॥
देखिये और आगेको ये क्या क्या रंग लातीहै ॥
छुडाये सुख सभी इसने छुडा घर दुख दिये इसने ॥
ये लाखों रंग लातीहै सैंकडों दुखा खिदतीहै ॥

पहुँचतेही सिया वनमें रामसे यों लगी कहने ॥
हमें इस वन भयानकमें अजी दहशतसी आतीहै ॥
संग संसारमें सुख और दुख दोनोंकाहै प्यारी ॥
जहां सुखहै वहाँ दुखकीभी गुशिशि होही जातीहै॥
जमाना एकसा दुनियाका होवो कोई क्या जाने ॥
मजा दुनियाकाहै येही मजे दोनों चखातीहै ॥
सेज फूलोंकी छूटी खाकमें बिस्तर हुए आकर ॥
देखकर ये दशा स्वामी हमारी जान जातीहै ॥
फिकर इसकी न तुम कीजे न कीजे गमजराइसका॥
येहै जो गर्दिशे किस्मत ये गर्दिशमेंही जातीहै ॥
गिरंद जो दमहै दुनियांमें ये वोही दम तमाशाहै ॥
निकलतेही ये दम मिट्टीमें मिटी मिलही जातीहै ॥

[भरत कैकईसे]

ये क्या तुमने किया माता जुलम कैसा गुजाराहै ॥
भेज वन राम लक्ष्मणको मुझे विन मौत माराहै ॥
जो सोवें सेज फूलोंकी पड़े वो जाके कांटोंमें ॥
ये कह उल्टे भरत गिरकर शीश धरतीसे माराहै ॥
भरत रोतेहुए शिर पीटते फिरतेहैं महलोंमें ॥
न मनको धीर विन रघुवर न तन देता सहाराहै ॥
मेरी किस्मतकी गर्दिशने मुझे ये दिन दिखायाहै ॥
अकेला छोड जाने कहाँ गया रघुवीर प्याराहै ॥
कुल्हाडी धरके कन्धे मुखमें तिनका बालहैं बिखरे॥
भरत दुख दर्दका मारा तरफ वनकी सिधारा है ॥
जो मिलताहै बस उस्से पूछते और रोते जातेहैं ॥

नहीं मिलता मुझे मेरा कहीं रघुवीर प्याराहै ॥
गिरंद रोकर भरतजीने रामको जब पुकाराहै ॥
देखता था सो कहताथा ये किस बिपताका माराहै॥

[श्रीरामचन्द्रजी]

कुटी रघुवीरने बनमें एक जाकर बनाईहै ॥
गजारेकी शकिल करके लिया बिस्तर लगाई है ॥
बडी भागिन है वो पृथ्वी और सब वृक्षवो बनके ॥
सिया रघुवीरकी जिसजा हुई जल्वे नुमाईहै ॥
ऋषीश्वर या मुनीश्वरहो या होवे देवता कोई ॥
है पाया जिसने सुख उसने घड़ी दुखकीभी पाईहै ॥
गई वरसें गुजरबनमें सिया और राम लक्ष्मणको ॥
तो एक बडी वहां सुन्दरसी सीताने लगाईहै ॥
प्रातही देख बाडीको दुखित होकर सिया बोली ॥
हाय ! ये किस पशु पक्षीने बाडी मेरी खाईहै ॥
गिरंद दुश्मन सिवा इस पेटके नहिं कोई दुनियामें ॥
इसीने सैंकडों आफित ये अब पीछे लगाईहै ॥

गज़ल गंगाजीको ।

ईश्वर चरनसे निकली शिवकी जटामें आई ॥
जय जय जय मात गंगे धारा सहस सुहाई ॥
कुल अपना तारनेको भागीरथ तुमको लाये ॥
भागीरथी तभीसे संसारमें कहाई ॥
लाखोंही पापी तारे और तारतीहै माता ॥
महिमा अपार तेरी चौदह भुवनमें छाई ॥
हरहर जो कहके न्हाया शिवका स्वरूप पाया ॥
पातेहैं न्हानेवाले यश ऐसे ऐसे माई ॥

मैं हूं न किसी लायक तेरी अपार माया ॥
किसमुहसे किस जबाँसे तेरी करूं बडाई ॥
पापोंकीहै तू छैनी वैकुण्ठकी निशेनी ॥
धनधन हे मातगंगे तारनको जक्त आई ॥
पापी न कोई मुझसा होवे हुआ न जगमें ॥
तारेगी मात तूही तुझसेही लौ लगाई ॥
तेरी अमृतकी धारा तारेगी जक्त सारा ॥
यमराजभी पुकारा हे त्राहित्राहि माई ॥
चरनोंमें चित जो लाया सब कुछ उसीने पाया ॥
कीजे गिरिन्दकीभी तू अन्तमें सहाई ॥
विश्वकी लेतेहो सुध भस्म रमाने वाले ॥
लीजे सुध मेरीभी कैलासके जाने वाले ॥
न वो जप तपहै न है ध्यान न हैगां सुमिरन ॥
हमसे पापीहैं जोहैं नर्कके जाने वाले ॥
करैं प्रभुता वो वो चाहै जहां भेजे हमको ॥
क्योंकि हैं युश्तपै शिव पार लगाने वाले ॥
उस घडी देखते रह जाँयगे हमसे पापी ॥
जिस घडी जाँयगे वैकुण्ठके जाने वाले ॥
उम्रभर हमसे सिवा पाप न कुछ काम हुआ ॥
परहै उम्मीद कि शंकरहैं बचाने वाले ॥
जन्म सुन कृष्णका पहुँचे तभी मथुराजीमें ॥
ऐसे प्रेमीहोजी तुम प्रेम बढाने वाले ॥
लोकतीनों हैं ये अधीन तुम्हारे शंकर ॥
तुमतो तू वीराना सदाकेहो बसाने वाले ॥

शिरसे और पैरों तलक नागहैं लिपटे काले ॥
नाज कालोंका तुम्हीं तो हो उठाने वाले ॥
क्याहै छप्पन तरहके तुमको भोजनोंसे काम ॥
आपतो आक धतूरेके हो खाने वाले ॥
शिव सिवा आपके फरियाद करै किस्से स्वरूप ॥
उसकी बिगडीके तुम्हीं तो हो बनाने वाले ॥

रुबाई ।

भगवतका भजनहो और शाहा क्याहै ॥
खानेको अगरहै जौ बुराई क्याहै ॥
तकदीरपे खबरहो तमन्ना मिट जाय ॥
जब ऐसा चलनहो फिर गदाई क्याहै ॥
खुदको पहिचान खुद नुमाई मतकर ॥
बरतर और इस्से पारसाई क्याहै ॥
दम भरका नहीं भरोसा निर्भय जिसका ॥
उस देहसे तेरी आशनाई क्याहै ॥
गुम करदे जो तकदीरको तदवीर उसे कहतेहैं ॥
तदवीरसे जायद न हो तकदीर उसे कहतेहैं ॥
सब झूंठीहै कागजकोक्या मिट्टीकीक्या पत्थरकी ॥
बुत होरहे तसव्वुरमें तस्वीर उसे कहतेहैं ॥
दुनियांको अगर कत्लकरै घाटकी ओछीहै ॥
काटे जो अहंकारको शमशीर उसे कहतेहैं ॥
कहताहै खुदा खुदसे जुदा जान अधूराहै ॥
दिखलादे जो खुदहीमें खुदा पीर उसे कहतेहैं ॥
सौ पर्त्त अगर तोड़दे फौलादके तो क्याहै ॥

तोडे जो फकत पर्दा दुई तीर उसे कहतेहैं ॥
हैं यूं तो वहुत वेदोंकी तफ्सीर मगर जिससे ॥
तसदीक अनलहकहो तफसीर उसे कहतेहैं ॥
जो कहताहै मैं इन्द्रहूं तौकीर कहां उसकी ॥
मैंहूँ ये गुमां मिटजाय तौकीर उसे कहतेहैं ॥
है आवोहवा ठंडी तो कश्मीर नहीं साहेव ॥
ठंडाहो कलेजा जहां कश्मीर उसे कहतेहैं ॥
दुनियांहै सरा निर्भय तू जागीर समझताहै ॥
कब्जेमें हमेशा रहे जागीर उसे कहतेहैं ॥
समझमें जिस वशरके खूब शब्द ओंकार आताहै ॥
उसीसे सिर्रेहकका ठीकठीका इजहार आताहै ॥
जो अपनी आत्मासेहो विमुख इकवार आताहै ॥
वो लख चौरासीके चक्करमें सौसौ वार आताहै ॥
ये माना जोफहै जो तुझको गश हरवार आताहै ॥
मगर अय दिलसँभल अब कूँच ये दिलदार आताहै ॥
जिन आंखोंमें तेरा रँग गैरते गुलजार आताहै ॥
उन आँखोंमें नजर हर गुल वशक्ले खार आताहै ॥
खता सब भूलजातेहैं निहायत प्यार आताहै ॥
वशर जब खम किये गर्दन सरे दर्बार आताहै ॥
जहांमैं और हूं आप और हैं तकरार आताहै ॥
वे हैरा होते हैं आई ना सौ सौ बार आताहै ॥
खयाले गैरो खुदसे पाकहो दुनियां जो देखेहैं ॥
मुझे उल्फत उसीकीहै उसीपर प्यार आताहै ॥
वशर फँस जाताहै खुद आपही अपनी तमन्नामें ॥

वहांसे जब वशर आताहै खुद मुखतार आताहै ॥
मिटै जब दाग दिलके हरका तब हरजा तसव्वुरहो ॥
जोहै वेदाग कपडा उसपे रंग यकसार आताहै ॥
अगर ख्वाहिश नहींहै दिलसे उनको मेरे मिलनेकी ॥
मेरे नामउनका हर एक श्वांसमें क्यों तार आताहै ॥
जलाना उसको कहतेहैं जो जीतेको जला देवे ॥
वशर मुरदेके कालिबको जला लाचार आताहै ॥
है कजबीना यहां गुल और वहांपर खार देखेहैं ॥
मुझे जलवा तेरा यकसा नजर सरकार आताहै ॥
वहीहै तत्त्ववेत्ता और वक्ता चारों वेदोंके ॥
सुनाई जिनको हर एक रोममें ओंकार आताहै ॥
ये दुनियाहै नहीं पर दीखतीहै इस तरह साहिब ॥
कि ज्यों अज्ञात रस्सीमेंहो सर्वीकार आताहै ॥
महल का बन्द दरवाजा किये खिल्वतमें बैठेहैं ॥
और हरदम डयोढीवानोंसे यही तकरार आतीहै ॥
कोई कितना पुकारे खोलना हर्गिज न कुन्डीको ॥
भला देखें यहां फिर कौनसा मक्कार आताहै ॥
कहा मैंने ये धर्मकी दीजिये जाहिर परस्तोंको ॥
जो आशिकहै जो साहब फांदकर दीवार आताहै ॥
मुझे अय ज्ञान तेरे होनेसे वो सुख हुआ हासिल ॥
जो हो वेगारी को जब फेंककर वेगार आताहै ॥
जो भगवत आपमें देखेहैं निर्भय फिर जरूर उनको ॥
नजर भगवतका हर एक चीजमें दीदार आताहै ॥
कहां खोलेहैं साहबहैं बँधेपर देखते जाओ ॥

तडपताहै ये बिस्मिल फिरभी क्योंकर देखतेजाओ ॥
गला काटेहैं रुकरुक कर सितमगर देखते जाओ ॥
है लुत्फो रहमका खंजरमें जोहर देखते जाओ ॥
पलक पर चांद तारेका गुमाहै एक आलमको ॥
तुम अपनी एकपटी नूरानी चादर देखते जाओ ॥
तजल्लीसे तेरी रोशनीहै सर तापा तने इन्सा ॥
चमकता कानमें नायाब गोंहर देखते जाओ ॥
तुम्हारा नामहै खाऊी मता यह दीन दुनियांमें ॥
अगरहै आपको कुछ शक मेरा घर देखते जाओ ॥
मिटा नामा निशा तीनोका जख्मोंसे जरा कातिल ॥
मेरे सीनेको पहलूको जिगरको देखते जाओ ॥
मैं फौरन जी उठूंगा अय मसीदा दम तेरे सदके ॥
मेरे लाशेको मां ठोकर लगाकर देखते जाओ ॥
मिटातीहै दुई वह्दत का रंगलातीहै अय जादिद ॥
मये उल्फतकी प्याली एक पीकर देखते जाओ ॥
मैंमर जाताहूँ क्योंकर मरकेजी जाताहूँ फिर क्योंकर ॥
चढाकर पहले अबरू पीछे हँसकर देखते जाओ ॥
हुआ करतेहैं निर्भय किस तरह यह शौकहै जिनको ॥
अनल हक इस्मे आजमहै ये पढकर देखते जाजो ॥
रूप सब रामकेहैं रामकेहैं नाम तमाम ॥
दोनों आलममें यहां क्या वहां घनश्याम तमाम ॥
दीनों दुनियांके हुए सारे सरंजाम तमाम ॥
आज कल खूब गुजरतीहै वा आराम तमाम ॥
राहतो रंज मुकद्दरसे हुआ करतेहैं ॥

इश्ककी नाहककही किया करतेहैं बदनाम तमाम ॥
बन्द तहरीर करो रहनेदो तकरीर फिजूल ॥
ना सहा मेरा इशारेमें हुआ काम तमाम ॥
सुफहए दिलये जो दिलवरकी खीचीहै तसवीर ॥
वही जलवा वोही कुदरत वही अंदाज तमाम ॥
शोके दीदार अगरहै तो बस इन आंखोंमें ॥
शामसे सुबहहो और सुबहसे हो शाम तमाम ॥
मलकुल मौत उठो निर्भय कमरको बाँधो ॥
आखिरी तुमहीतो ले जातेहो पैगाम तमाम ॥

जो दिलसे मेरा नाम गाता रहेगा। वो मुझकोभी हां याद आता रहेगा॥
नहीं पूरे होनेके दुनियांके धन्धे । तू कबतक यहां दिल लगाता रहेगा॥
ये है ज्ञानकी बूटी ऐसी मुजर्रब । अगर ध्यानसे इसको खाता रहेगा ॥
तो आँखोंका कानोंका बुद्धीका।मन का मेरी जान सब रोग जाता रहेगा
ये मुमकिन नहीं तुझसे मैं रूठ जाऊं।जो तू मुझको निर्भय मनाता रहेगा॥

पूर्णानन्द सेहै आपका अन्तर खाली ॥
महाघन रूप तभी भासैहै बाहर खाली ॥
आत्मज्ञानसे है जबतलक अन्तर खाली ॥
पूरा साधू वो नहीं फिरताहै बाहर खाली ॥
चाहे कर मेहर वफा चाहे सितम गर खाली ॥
हमतो हर बातमें समझहैं मुकद्दर खाली ॥
मय रकीबोंको पिला आयाहै दिलवर खाली ॥
आँखभर आय न क्यौं देखके सागर खाली ॥
फिक्र दुनियांसे है खाली फकत आशिक तेरा ॥
नतो नौकरहीहै खाली नहै अफसर खाली ॥

आपकी याद अगर गोश ये दिलमें न रहे ॥
जैसा कंगाल है वैसाही तवंवर खाली ॥
ऐसे चक्करमें मैं आयाहूं कि दिनरात युहीं ॥
घूमता फिरताहूं जाता नहीं दमभर खाली ॥
गांठमें लाल वँधाहै नहीं खोले है वशर ॥
हाथ फैलाये हुए फिरताहै दर दर खाली ॥
जाने किस बातसे नफरत हुई उस साधूको ॥
चलदिया आप पडाहै यहां विस्तर खाली ॥
सामना मौतका जब होनसका आखिरकार ॥
मुँह छिपा चल दिया दुनियांसे सिकन्दर खाली ॥
सुर्खरू अब नहीं होने का मैं कातिलके हुजूर ॥
हर तलक आके फिरा जाताहै खंजर खाली ॥
मुझदा सुन वस्लका जल्दी वो हुई जानेकी ॥
जानकर बोझ गया छोड ये पैकर खाली ॥
नतोहै दोस्त न दुश्मन मेरे दुनियांमें नशर ॥
उनको मैं वो मुझे समझेहैं विरादर खाली ॥
अब वजुज इसके कि खामोश रहूँ क्या कहदूँ ॥
वस्लमें होगया कुल शिकवोंका दफ्तर खाली ॥
निर्भय है जितना दुश्वार यहाँ बाजी का ॥
पांसा हर दाव पर पडताहै बराबर खाली ॥

होली काफी ।

सांवरा मोसे खेलत होरी ॥
अबीर गुलाल गुआलने मेरे मुंखसौं आन मलो री ॥
भर पिचकारी गिरधारी मोरे मारी सारी हमारी रंगबोरी ॥

देह मोरी भीजै गोरी गोरी ॥ साँवरा० ॥ १ ॥
गोरी गोरी बहियां मोरी नरम कलैयां श्यामने दौर मरोरी ॥
शिरकी चुनरिया फ़ार कन्हैया बहुत करी झकझोरी ॥
मोतिनकी लर मोरी तोरी ॥ सांवरा० ॥ २ ॥
सुन्दर सेज बिछाय सांवरो गरवा लगावे बरजोरी ॥
चुम्बन कर मोरी कुचगहि लीनी अँगिया मसक दई मोरी ॥
कमर मोरी लचको गयोरी ॥ सांवरा० ॥ ३ ॥
ब्रजमें कन्हाई धूम मचाई नेक न जियमें डरोरी ॥
बुल्बुल कहै यशोदासे कोई झटपट जाय कहोरी ॥
ढीठ भयो नवल किशोरी ॥ सांवरा० ॥ ४ ॥

चल खेलिये होरी । मोहन अवतार भयोरी ॥
जाको जीत सकै नहिं कोई आपही खेल रचोरी ॥
रूप न रेख बरन नहिं जाके सोई प्रकट भयोरी ॥
मोहन जाको नाम धरोरी । चल खेलिये० ॥ १ ॥
मत्स्य रूप धर वेद लै आयो शंखासुरको हतोरी ॥
कच्छरूप सागर मथिडारे रत्नप्रकाश करोरी ॥
कमलाको आप बरोरी । चल खेलिये० ॥ २ ॥
शूकरहो धरणी लै आयो नरसिंह रूप धरोरी ॥
खंभफाड प्रकटे नारायण असुरको मान हरोरी ॥
प्रहलादको राख लियोरी । चल खेलिये० ॥ ३ ॥
परशुराम दूजे रामचन्द्र भये रघुकुल वंश बढोरी ॥
मैथिल राज प्रतिज्ञा राखी व्याही जनक किशोरी ॥
रावण मारो लंका तोरी । चल खेलिये० ॥ ४ ॥
धामनहो ऐसो छल कीन्हों तीनों लोक ठगोरी ॥

बलिको बांध पताल पठायो द्वारेपै आय खडोरी ॥
वचनसे आय बँधोरी । चल खेलिये० ॥ ५ ॥
खेलत गेंद गिरी यमुनामें पाछेसे फांद पडोरी ॥
पैठ पताल कालीनाग नाथ्यो फनपर निरत करोरी ॥
श्यामरंग तबसे भयोरी । चल खेलिये० ॥ ६ ॥
तेरोही रंग तुही पिचकारी लाल गुलाल उडोरी ॥
यह संसार रैनका सपना सब जग नाच नचोरी ॥
सो खुश दिल होरही होरी । चल खे० ॥ ७ ॥

होली काफी ।

कुब्जा संग प्रीत लगाई ॥
हमें छोड कर वृन्दावनमें मथुरा जाय बसाई ॥
जाय करो कुब्जा पटरानी यह क्या रीति चलाई ॥
सखिनकी सुध बिसराई । कुब्जासंग० ॥ १ ॥
श्याम सखी कुब्जाने वश कियो माथे तिलक चढाई ॥
नैनन सैन चला कुबरीने मोह लिये यदुराई ॥
श्यामकी सुरत भुलाई । कुब्जासंग० ॥ २ ॥
वृन्दावनमें कहें सखा सब श्याम बडे हरजाई ॥
कंस रजाकी दासीसे प्रभु कैसी प्रीत लगाई ॥
सखिनकी सुधि बीसराई । कुब्जासंग० ॥ ३ ॥
सब सखियोंपे वृन्दावनमें तुम बिन रहो न जाई ॥
'बुल्बुल' कहै वेग दर्शन दो नामकी रटन लगाई ॥
दरश दो श्याम कन्हाई । कुब्जासंग० ॥ ४ ॥

राग जोगिया ।

आलीरी ! अब कैसे जियूंगी ॥
मेरे पिया परदेश सिधारे ये दुख कैसे भरूंगी ॥

मनमें मेरे ऐसी आवे जहरका प्याला पियूंगी ॥
कटारी खाय मरूंगी । आलीरी० ॥ १ ॥
मैन मुझे नित आन सतावे विरहा अगनमें जरूंगी ॥
सूनीसेज डरावन लागी मैं बैठी तडफूंगी ॥
हाय ! मैं तो रोरो मरूंगी । आलीरी० ॥ २ ॥
फागुनके दिन आये सखीरी का संग होरी खेलूंगी॥
सब सखियां पियाके संग सोवें मैं किसके गले लगूंगी॥
पिया पिया किससे कहूंगी । आलीरी० ॥ ३ ॥
'बुलबुल' कहैं त्यागके वस्तर अंग विभूति मलूंगी ॥
करमें ले तुलसीकी माला पियाको नाम जपूंगी ॥
जोगनको वेश करूंगी । आलीरी० ॥ ४ ॥

होली काफी ।

पनघट पर धूम मचाई ॥
एक समय मैं गई जल भरने शीश गगरिया उठाई॥
गगरी फांस पनघटमें डारी घेरलई यदुराई ॥
आन गगरी चटकाई । पनघट पर० ॥ १ ॥
बहियां पकड जकडकर मेरी सब चुरियां मुरकाई ॥
गरवाको मेरो हरवा तोडो कुचको हाथ चलाई ॥
पकड अंगिया मसकाई । पनघट पर० ॥ २ ॥
सुन्दर सेज बिछाय श्यामने वनमाला पहिराई ॥
बाराजोरी मनमोहनने बहियां पकर बैठाई ॥
औ हँसकर गले लगाई । पनघट पर० ॥ ३ ॥
नैनन सैन चलाय साँवरेने आँखसे आँख मिलाई ॥
कदम तरे घनश्याम पियाने बँसुरी जाय बजाई ॥

त्रिभंगी छवि दिखलाई। पनघट पर० ॥ ४ ॥
मोर मुकुट कुण्डलकी शोभा नैनन बीच समाई ॥
'बुलबुल' कहैं श्यामछवि ऊपर वारवारबलि जाई ॥
दरशदो श्याम कन्हाई । पनघट पर० ॥ ५ ॥

होली रागकाफी।

श्यामरेने सँदेशा पठाओ ॥
कहा लिख दीन्हों है पतियामें सकल भेद जतलाओ ॥
गुन औगुन नँदलाल ललाके ऊधो सब प्रकटाओ ॥
यह पाती बाँच सुनाओ । श्यामरेने० ॥ १ ॥
कहन लगो ऊधो सखियनसे पातीमें मन लाओ ॥
भोगकी आशा त्याग सखीरी योगसे ध्यान लगाओ ॥
हरी चरनन चित लाओ श्यामरेने० ॥ २ ॥
पतियां सुनत मोरी छतियां दुखतहै श्यामके मन कहा आओ॥
गोपीनाथ नामको त्यागो कुब्जा नाथ कहाओ ॥
श्यामने नाम लजाओ । श्यामरेने० ॥ ३ ॥
निजनिज सब शृङ्गार तजोरी अंगमें भस्म रमाओ ॥
करनफूल तज कानन मुद्रा माथे तिलक चढ़ाओ ॥
बैठकर हरि गुन गाओ । श्यामरेने० ॥ ४ ॥
भस्म रमाय योगिन ह्वो बैठो तन मृगछाल उढाओ ॥
'बुलबुल' कहैं माल करमें ले आठों याम फिराओ ॥
ज्ञान हृदयमें जमाओ । श्यामरेने० ॥ ५ ॥

होलीकाफी ।

सांवरा दुखदै गयो भारी मेरी प्यारी ॥
देखोरी सखि श्यामभये हैं कुब्जाके हितकारी ॥
ना जाने वाने जादूकीन्हा मोहे कृष्ण मुरारी ॥

सौत ऐसी कामन कारी । साँवरा दुख० ॥१॥
क्याजाने कोई पीर पराई क्या जाने वैद अनारी ॥
ब्रजवासीसे मुझे मिलादो जिन मेरे फांसी डारी ॥
वही देखे मेरी नारी । सांवरा दुख० ॥ २ ॥
थोडे जल बिन जैसे मछली तड़प तड़प रहजा री ॥
सो गति भई हमसब गुपियनकी मोहे गिरवर धारी ॥
करे जुबामें लगी कटारी० सांवरा० ॥ ३ ॥
नयेनये भूषण नये नये वस्तर नयेनये जोबनवारी ॥
नयेनये श्याम नँदघर उपजे सखियोंकी प्रीति बिसारी॥
करी कुब्जा हितकारी । सांवरा० ॥ ४ ॥
श्यामबिना अबकुछ नहिंभावे दुखितभई ब्रजनारी ॥
सूरदासकहै सब गोपिनके भयेहैं प्राण दुखारी ॥
दरशदो कृष्ण मुरारी । सांवरा० ॥ ५ ॥

रागहोली ।

श्याम बरजो यशोदा रानी ॥
मैं तो गई थी दधि बेचनको मिलो श्याम सलानी ॥
अचरा पकरलियो कृष्णकुँवरने हँसहँसगले लगानी॥
घूंघट खोलो महारानी । श्यामबरजो० ॥ १ ॥
दधिकी मटकी पटकिदईमोरी सिगारि चुनरिया सानी॥
डगर चलत ऐकतटोकतहै कीन्हीं बहुत खिसानी ॥
बात मोरी एक न मानी । श्याम बरजो० ॥ २ ॥
बरजो यशोदा अपने कान्हको नाहक रार बढानी॥
खबर करूंगी कंस रजापे भूल जाओ ठकुरानी ॥
बहुत पड़िहै हैरानी । श्याम बरजो० ॥ ३ ॥

तू ग्वालनहै बडी सयानी कहा तेरी मति बौरानी ॥
दधिकी मटकिया पटक दई शिरसे श्यामको दोष लगानी ॥
श्यामसे लड़ाई ठानी । श्याम बरजो० ॥ ४ ॥
व्रजकी विथा कहां लगि वरनों को कवि कहै बखानी ॥
'बुलबुल'कहैं बात सुन ग्वालन मनमें बहुत लजानी ॥
चली घरको खिसियानी । श्याम बरजो० ॥ ५ ॥

राग होली ।

श्याम तेरो करतहै चोरी ।
ग्वालबाल सब सखासंग लिये मन्दिर आन धसोरी ॥
सखा संगके ढूँढन लागे दधि कहुँ नाहिं मिलोरी ॥
छींका वाकी नजर पडोरी ॥ श्यामतेरो ॥ १ ॥
सखाकी कनियां सखा चढायो तापर आप चढोरी ॥
दधिको माट उतार लियोहै धरनीमें लाय धरोरी ॥
सभी मिल मतो कियोरी ॥ श्यामतेरो० ॥ २ ॥
तनकतनक गोपाललालने सबको दही दियोरी ॥
दहीखाय आनन्द भये सब कृष्णने सबसे कह्यो री ॥
निकस अब भाज चलोरी ॥ श्यामतेरो ॥ ३ ॥
सखा संगके भाज गये सब कृष्णको झट पकडोरी ॥
छलबल करके श्यामसुँदरने झटपट कर झटकोरी ॥
कपटकर सटक गयोरी ॥ श्यामतेरो० ॥ ४ ॥
कहन लगी ग्वालन यशुमतिसे तेरो कुँवर कैसोरी ॥
तेरे सुतको लाई पकर कर यशुमति सत देखोरी ॥
लाल अपनो देखोरी ॥ श्यामतेरो ० ॥ ५ ॥
यशुमति उत्तरदेत ग्वालनको कहा तेरी मतिबौरी ॥

किसको लाल पकड कर लाई कुँवर भवन बैठोरी ॥
नजर भरकर देखोरी ॥ श्यामतेरो० ॥ ६ ॥
सुन्दर रूप स्वरूप विराजै कृष्णके नयन चकोरी ॥
'बुलबुल' कहै श्याम दरशनको ये होरी रंगव.री ॥
प्रेमसें उरझीं गोरी ॥ श्यामतेरो ० ॥ ७ ॥

राग भैरवी होली।

मोपै रंग क्या डारत - बारबार ॥
ऐसी तुम्ही अनोखी चतुरनार ॥
हमतो आये तुम्हरे दरशको तुमने पकरकरी मारधार ॥
मोरी सुध बुध बिसर गई निहार ऐसी तुम्हीं १ ॥
अबीर गुलाल न मारो मुखपै यही कहूँ बारबार ॥
ना जाने होरी खेलनकी सार ऐसी तुम्हीं ॥ २ ॥
समझ समझकर खेलो फाग प्यारी तुम जीती हम मानीहार ॥
मेरे नैनोंसे बहै असुवनकी धार ॥ ऐसीतु ० ॥ ३ ॥
'बुलबुल' कहैं समुझ कछुप्यारी काहेको कीन्हीं हमसों रार ॥
अब कभी न जाऊँ मैं तो तेरे द्वार ऐसी तुम्हीं० ॥ ४ ॥

होलीकाफी।

श्याम चटक मटक कर अटकै ॥
बहियां पकर मोरी लटकन लागो दधिकी मटुकिया पटकै ॥
यमुना किनारे घेरी ग्वालन नट खट झपट झपट मोसों लटकै ॥
पोरा मेरा चट चट चटकै ॥ श्यामचटक ० ॥ १ ॥
कोमलगात शरीर छुअतहै मोसों कहत चल हटकै ॥
सैन चलावत गले लगावत नैन मिलावत मटकै ॥
मुकुट वारो सट सट सटकै॥ श्यामचटक० ॥ २ ॥

डगर चलत घूँघटपट खोलत हँसहँस बोलत लटकै ॥
कुच पकरत मेरो जियरा धरकत उरमें श्याम मोरे खटकै ॥
बहियां मोरी झट झट झटकै श्यामचटक० ॥ ३ ॥
श्याम छोड कुँजनमें सटकिगयो देखनको मनमटकै ॥
'बुलबुल' कहै सुरत सबभूली देखो रूपजब इटकै ॥
गयो मोतें हट हट हटकै ॥ श्यामचटक० ॥ ४ ॥

रागिनी होली ।

फागुनमें घर श्याममचोरी ॥
ब्रजकी नार सिंगार किये अति हिलमिल सकल चलोरी ॥
अबीर गुलाल के थाल लिये कोई कोई लिये कर रोरी ॥
कोई लिये केशर घोरी फागुनमें० ॥ १ ॥
हिल मिलकर सब सखियां आई और संग राधा गोरी ॥
फाग परस्पर खेलन लागीं गिरधर कर पकरोरी ॥
प्रेम आनन्द बढोरी ॥ फागुनमें० ॥ २ ॥
घेर लियो सब कृष्ण कुँवरको मुखसों अबीर मलोरी ॥
सब मिल गुलचे मारो कृष्णके रोवत नन्द किशोरी ॥
श्याम आज भलो बनारी ॥ फागुनमें घम० ॥ २ ॥
रोवत क्यों मन मारमारके सुनहु बात अब मोरी ॥
नंद बबाजू कहां गयेहैं कहांगई मैया तोरी ॥
तुम्हैं लेती क्यों न छोरी ॥ फागुनमें० ॥ ३ ॥
फाग खेलके मगनहो बैठी कृष्ण को रंग रंगोरी ॥
'बलबुल' कहैं फागदो मोहन तुमसौं सांच कहोरी ॥
खेले विन जाऊं न होरी ॥ फागुनमें० ॥ ४ ॥

होली काफी ।

श्यामको सब ढूँढ़त हारीं ॥
ढूंढफिरी कुंजन कुंजनमें नहिं मिलते गिरधारी ॥
हाय ! हमैं क्यौं तज दीनीहैं—क्या हमरी खोट बिचारी॥
जो दुख हमें दीन्हों भारी ॥ श्यामको० ॥ १ ॥
फिरत सकल ग्वालन बौराई हाहा करतहैं सारी ॥
रेतबीच रेखा चमकतहै सब मिलजाय निहारी ॥
आगे मिलिहैं बनवारी ॥ श्यामको० ॥ २ ॥
आगे जाय महावन ढूंढो बाट मिली अंधियारी ॥
राह देख सबही घबरानी कहकह कृष्ण मुरारी ॥
प्राणसौं भई दुखारी ॥ श्यामको० ॥ ३ ॥
तजतीहैं प्राण सभी गोपी हो दर्शन वेगि मुरारी ॥
'बुलबुल' कहैं तुम विन सब गोपी मरतीहैं विषखारी॥
सुरत ना लई हमारी ॥ श्यामको० ॥ ४ ॥

होली खम्माच ।

फागुनमें श्याम रंग डार गयोहै ॥
रंगकी भरी पीचकारी मारी गगरी उतार गयोहै ॥
अबीर गुलालकी भरभर मुठियां आंखन डार गयोहै॥
चम्पकली सतलड़ी मोरी तोरी हार बिगार गयोहै॥
अंगिया मसक दई चुरियां करक गई गुलचे मार गयोहै ॥
चूनर मोरी फार गयोहै ॥ फागुनमें० ॥
श्याम आन मोरे ढिगबैठो चुम्बन कर गयोहै ॥
मैंना बोली मनहीमें रोली मोहि निहार गयोहै ॥
नामले पुकार गयोहै ॥ फागुनमें० ॥

ढूँढफिरी वृन्दावन माहीं कितको बिसार गयोहै ॥
बिलकुल कहैं ढूंढरही ढूँढत कितको सिधार गयोहै॥
जाने यमुनापार गयोहै फागुनमें० ॥

होली रागिनी भैरवी।

मेरे रंगकी भरी पिचकारी मार कहिं जाय छिपो नन्द कुमार ॥
रंग मोपै छिड़क अबीर उड़ायो आंखन मोरी गुलाल डार ॥
अबही कहिं भाज गयो बिसार आन अचानक मोकूं ॥
पकरत गर लिपटावत बार बार गई अँगिया ॥
मसक टूटो गलको हार हाथोंकी मेरे चुरियां ॥
मुरक गई नई रे चुनरियां दीन्हीं फार ॥
अबहीं पाऊं पकड श्यामको गाल छरूं मुह मार मार ॥
प्रेम सखीकहैं माता यशोदा हमें नीको न लागे ये दुलार ॥

होली भैरवी।

ब्रजमें चलो फाग खेलोरी।
सब सखियां मिल साज सजावें ताल मृदंग झांझ जोडी ॥
कोई अबीर गुलाल उडावै कोई उडावतहै रोरी ॥
कृष्ण लालतो बेन बजावें नाचैंगी राधा गोरी ॥
'बुल बुल' कहत श्याम छवि देखत प्रेमानन्द बढ़ोरी ॥
कहत कृष्ण गोपाल गैंद तैंने मेरी चुराई ॥
खेलत खेलत गेंद कहीं कुंजन बिसराई ॥
मार टोल गिरी जाय गेंद यमुना जल माहीं ॥
सखी कहै घनश्याम हमें क्यों चोरी लगाई ॥
कहत चलीं सब नारि कहीं तोरी मति बौराई ॥
बोलत डोलत दौर गये तब कुंवर कन्हाई ॥

बांह पकर लेजाय ग्वालिनी बहुत लजाई ॥
अंगिया को हाथ चलाय छीनली श्रीयदुराई ॥
हरि बोले मुसकाय गेंद अंगियामें छिपाई ॥
करी अरी सखि आज तैनें अतिही चतुराई ॥
'बुलबुल' कहैं सखी हम तोपें बारबार बलिजाई ॥

होली राग बरवा ।

मेरे मँदिरके मांहि मार गयो को पिचकारी ॥
रंगमें बोरी आज भीज गई चनर सारी ॥
रोवन लागी नारि सास देगी मोहि गारी ॥
इतै उतैकूं जाय ढूंढ़ने लागीं नारी ॥
जो कोउ आवत नाहतो अब मैं दूंगी गारी ॥
'बुलबुल' कहे मुसकाय ग्वालिनी देख निहारी ॥
अबीर गुलाल उडाय गयो मोपे गिरधारी ॥
केशर रंग बनावयके भर मारी पिचकारी ॥
आज कृष्ण रंग डार भिजो गयो सारी हमारी ॥
सास ननदिया खूब करेंगी घरमें ख्वारी ॥
पिया हमारो सुनें जायगी लाज हमारी ॥
सुन सुन वचन रिसाय गई सब ब्रजकी नारी ॥
कहा गति कर गयो आज हमारी कृष्ण मुरारी ॥
अब कहिं पावें श्याम बतावेंगी हम नारी ॥
बुलबुल कहैं नहीं बरजत यशुदा महतारी ॥

होली राग काफी ।

सांवरो बडो सुन्दर माई ॥
क्रीट मुकुट शिर अधिक विराजत माथे तिलक चढाई ॥

घूंघरवारे बाल कृष्णके माथे लट लटकाई ॥
मनो सवीकार बनाई । सांवरो०
श्रवणन कुंडल अति छवि छाजें मुक्त माल गलमाई ॥
हृदय झंगुलिया अधिक विराजें कछनी कुंवर सजाई ॥
प्रीतम पर अति छवि छाई ॥ सांवरो० ॥
नयन चकोरी दोऊ श्यामके अधरन लाली छाई ॥
सांवरी सूरत माधुरी मूरत श्याम आज दिखलाई ॥
सो मेरे जियमें समाई सांवरो० ॥
अंधरनके ऊपर गिरधरने बसुरी आज बजाई ॥
बसुरी बजावत सुख उपजावत मीठी तान सुनाई ॥
आपभी रह्यो हरषाई । सांवरो० ॥
झब्बीलालने गोपालजी तेरे नामकी रटन लगाई ॥
बुलबुल कहैं तेरो गुणगाऊं चरण कमल चितलाई ॥
कृपा करियो यदुराई । सांवरो० ॥

रागहोली ।

सोवत आन जगाई । पियरवाने छवि दिखलाई ॥
सोवतही मैं लाल पलँगपर आ छतियां चिपटाई ॥
मुख चूमो बरजोरी मोतें कीनी आय मरोरी कलाई ॥
पियरवाने गले लगाई । सोवत० ॥
आय कृष्ण मोरी अँगिया मसकादई सब चुरियां मुरकाई ॥
सैन चलावत नैन मिलावत कीन्हीं बहुत ढिठाई ॥
गयो अँगिया मसकाई । सोवत० ॥
गोरा बदन छुओ क्यों मेरो काहे करो ढठलाई ॥
गारी दूंगी पुकार करूंगी कैसी धूम मचाई ॥
छोड़दे कुँवर कन्हाई ॥ सोवत० ॥

झब्बीलाल हकीरके मनमें अब यह बात समाई ॥
'बुलबुल' कहैं छोड़दे सइयां नींदरिया झुकि आई ॥
करूं बिनती मनलाई ॥ सोवत० ॥

होलीकाफी ।

सारी रैन बिताई । पिया बिन नींद न आई ॥
रहस रहसकर महलके अन्दर सुन्दर सेज बिछाई ॥
बैठ पियाकी बाट निहारत नाहकमें तरसाई ॥
देख सूनी सेज डराई । सारीरैन०
बैठ रही मन मार हारकर कैसे करों जुदाई ॥
जैसे जलबिन मीन तड़परही सो गति आज बनाई ॥
सुरत तनकी बिसराई । सारी०
सारी रैन चैन नहिं पायों यह मनमें ठहराई ॥
लियो कटार उतार हाथमें जहर बुझी अनखाई ॥
कटारी जिगर लगाई । सारी०
झब्बीलाल हकीर पियाकी छबि नैननमें समाई ॥
'बुलबुल' कहैं यादगारीमें सारी रैन गँमाई ॥
पिया कहकह पछताई । सारीरैन०

होलीकाफी ।

फागुन फाग रचायो पिया अबतक नहिं आयो ॥
सब सखियां मिल फाग बनावें केसर रंग घुलायो ॥
सकल नारि निज पियके ऊपर अबिर गुलाल उड़ायो ॥
अधिक आनन्द बढायो । फागुन फाग०
मेरे मंदिरके मांहि सखीरी पियाबिन अँधेरो छायो ॥
नयननकी पिचकारी बनाई अँसुवन रँग ढरकायो ॥
पिया सौतन बिरमायो । फागुन फाग०

पिय बिन मोकूँ कछु ना सुहावत जोबन खाक मिलायो ॥
त्यागदिये सिंगार आभरन वस्त्रन अगिनि जलायो ॥
पिया नयननमें समायो । फागुनफाग० ॥
छबीलाल पिया घर आये प्यारीने दर्शन पायो ॥
'बुलबुल' कहैं पियाके ऊपर सोना रूपा लुटायो ॥
पिया गरसौं लिपटायो । फागुन० ॥

होली ।

पुरुषोत्तम सँग खेलिये होरी ॥
सासननद घोरनिया जिठनियां केतेही नाम धरोरी ॥
समझाये बरजे नहिं मानूं होनी होय सो होरी ॥
मेरो मन हरि सौं लगोरी । पुरुषोत्तम० ॥
बगर परौसन सँगकी सहेली कहो अब कैसी करूं री ॥
बिन हरि फाग आगसी लागत तनमन जात जरो री ॥
प्राण नाहिं मानत मोरी । पुरुषोत्तम० ॥
चलो सब मिलझुलचलें विनती करें शीशनाय करजोरी ॥
मानेतो माने नहीं बाराजोरी पकरैं नवल किशोरी ॥
ऐसो कहा सबसे बडोरी । पुरुषोत्तम० ॥
भक्तिको मांग प्रेमका सिंदुरा सतकी मँहदी रचो री ॥
मनमनके कर माला करलो ज्ञानकी गाती कसोरी ॥
ध्यानकी ओट मिलोरी ॥ पुरुषोत्तम० ॥
नथ वेसर चूनर पहनाओ केसर रंग कर बोरी ॥
मलके गुलाल श्यामके मुखसौं निर्भय कहो होरी होरी ॥
तबही जीवनहै भलोरी ॥ पुरुषोत्तम० ॥

होली ।

घटमें कैसो फाग रचो री ॥ घनघन नौबत झडने लागी अनहद धुन टनकोरी ॥ सोहं सोहं सोहं सोहं सोहं हंचहुं ओरी । शून्यमें शोर पडोरी ॥ घटमें कैसो फाग रचो री ॥ बाजत बीन मृदंग मुरलिया शंख झांझ डफ थोरी ॥ सुरत निरत कर हियाको रिझावे नैननमें चोरा चोरी ॥ मोहिनी मंत्र पढोरी । घटमें कैसो फाग रचोरी ॥ उतसों पिया इतसों मैं धाई प्रेम गुलाल भरि झोरी ॥ ज्ञानको रंग ध्यानसौं छिडको तारतार दोऊ बोरी ॥ पाग पिया चूनर मोरी ॥ घटमें कैसो फाग रचोरी ॥ झट चराट बैयां डार गलेमें मुख चूमो बाराजोरी॥निर्भय लिपट चिपट कर पियसौं सो रहो रात रही थोरी॥ होनेदो ऐसीही होरी ॥ घटमें कैसो फाग० ॥

सब सिंगार सखीका । भजन बिन लागत फीका ॥ नाम रूप आरोपित सत्ता । है संकल्प हरीका ॥ आपही दीन आपही दुनियां करता दीन दुनीका ॥ मूल यही मन्त्र श्रुतीका ॥ सब सिंगार० ॥ ओ लार्ड डाइविल नाटमाइन है येही कौल मसीका॥मोमिनो लाइलाह इल्लिल्लाह कहोमतलबयहीबदीका॥यही कलमाहै नबीका॥सब सिंगार० सबसे मिले अलग सबसे रहो ज्ञान यही ज्ञानीका ॥ धोखेकी रही कोई नहीं किसीका—यही मतहै सूफीका ॥ सखी सिंगार० ॥

इन्द्रिन ग्राम पवन मन को खुले द्वार त्रिकुटीका ॥
निर्गुन भाव पुरुषका झलकै मिटे भिरम तब जीका ॥
यही आशय योगीका ॥ सबसिंगार० ॥
तनमन धन सौं नेह न राखे राम नाम लगे नीका ॥
दिन क्षण पल सुमिरन रहे उसका यही लक्षण भक्तीका ॥ सखी सिंगार० ॥

तन मक्का मन कावा जिसमें नूर जाते अवदीका ॥
अक्लकी आँख खोलकर देखो परदा उठा खुदीका ॥
यही हजहै हाजीका । सब सिंगार०

शब्द ब्रह्म घटहीमें खोजे अर्थ समझ काशीका ॥
आपमें आप समावे ऐसा रहे न लेश दुईका ॥
यहीहै ध्यान मुनीका । सब सिंगार० ॥

शब्द तज हरिभज सुख जो चाहै मूल उपदेश जतीका ॥
निर्भयराम रामकी सौगन्द साधू सन्त ऋषीका ॥
यही सिद्धान्त सभीका । सबसिंगार०

देश–दशा।

कैसी होरी कहांकी होरी ॥
धन विन कामचलैं नहिं जगके सो नाहिं नेक रह्यो री ॥
सब चूँगी चन्दा टिक्स वश सागर पार गयोरी ॥
बच्यो सोई जात चल्यो री । कैसी होरी० ॥
खेती वनिआई सेवकाई सबको सार नश्यो री ॥
पेट भरैके परव मनावें कठिन निवाह भयोरी ॥
समय ऐसो विगरगयोरी । कैसीहोरी०॥
कौन परस्पर छिडकनके हित सकै केशरहि घोरी ॥
टेसू फूलभये औषधि सम अव वह रँग सचरयो री ॥
जहर मिल जाहि रच्योरी । कैसीहोरी० ॥
घरघर कलह फूट भारतमें रस सब भंग भयोरी ॥
घरन घरन भाइन भाइनमें जूता उछल रह्यो री ॥
बकैं आपसमें होरी । कैसीहोरी० ॥

यह दुर्दशा देख भारतकी हिरदा जात फट्योरी ॥
नन्दकुमार वेग सुधलीजे विनय करे कर जोरी ॥
यहीहै विनती मोरी । कैसी होरी कहांकी होरी ॥

लावनी ।

हमारे चितकीहो दूर चिन्ता तुम्हारा कहना प्रमाण निकले ॥
दो अपना दर्शन ओ श्यामसुन्दर नहीं तो अबही ये प्राण निकले ॥
दहक दहक कर हृदयके अन्दर बिरह अनल बचा भड़क रहीहै ॥
कसक कसक कर जिगरमें आशाकी कांस कैसी खड़क रहीहै ॥
घुमड़ घुमड़ कर मिलनेके कारण ये छाती क्योंकर धड़क रहीहै ॥
उमड़ उमड़ कर दरशकी प्यासी वो आंख कबते फड़क रहीहै ॥
मैं कैसे समझाऊं मनको मोहन न सब आये न जान निकले ॥
दो अपना दर्शन ओ श्यामसुन्दर नहीं तो अबही ये प्राण निकले ॥
ये कैसा बिखराहै जीतो थांबो ओ कृष्ण इसका संभलना दुर्लभ ॥
वो क्याही मचलाहै दिलको देखो अच्युत इसका बहलना दुर्लभ ॥
जो इसमें चितवन समारहीहै ओ केशव इसका निकलना दुर्लभ ॥
और उसने जो प्रेमकी ललकहै ओ दीनानाथ उसका टलना दुर्लभ॥
इधर न अपनी ये हठको छोडे उधर न उसकी वो बान निकले ॥
दो अपना दर्शन ओ श्यामसुन्दर नहीं तो अबहीये प्राण निकले ॥
ये तार चीतका बंधाहै भगवान् किहै वोही एक ध्यान मुझको ॥
वो रूप बुद्धीका होरहाहै न उससे अतिरिक्त ज्ञान मुझको ॥
समान अपने बिगाने दोनों न लाभ सूझे न हानि मुझको ॥
ये जैसा शत्रू वो मित्र तैसा है एक सामान अपमान मुझको ॥
वो आन तेरी बसीहै मनमें ये जान जाये न आन निकले ॥
दो अपना दर्शन ओ श्याम सुंदर नहीं तो अबही ये प्राण निकले ॥

ये कैसे जन और वो वन कहांका ये घर वो आंगन कछू ना भावे॥
ये सारे रसनाको लागें फीके वसन न भूषन न कछू सुहावे ॥
न डोलते वैन बैठेकी कल न जगते सुख और न नींद आवे ॥
न चुपके बीते न कहते आवे वियोग छिन पल हमें सतावे ॥
न योग शक्ती न पूरी भक्ति न लाज छूटे न मान निकले ॥
दो अपना दर्शन ओ श्याम सुन्दर नहीं तो अबहीं ये प्राणनि० ॥
वो बांकी झांकीहो नित्य सन्मुख हृदय कमलजब हराहो मेरा ॥
ये बुद्धि तबही पवित्र होवे ये जन्म तबही सफल हो मेरा ॥
ये चित तभी अपना शान्त होवे ये मन तभी ही विमल हो मेरा ॥
ये प्राण तभी हो स्थिर स्वभाव तबही अचल हो मेरा ॥
ये ज्ञान विज्ञान होवे अपना वो मेरा तद्रूप ध्यान निकले ॥

दो अपना दर्शन ओ श्याम सुन्दर नहींतो अबहीं ये० ॥
जो भक्त वत्सल न होवें तुमसे हो पूरी भक्तोंकी आन कैसे ॥
और आपसे जो न होवे बन्धू तो भक्तौंके रहिवे प्राण कैसे ॥
न दोगे दर्शन तो आपका वाक होगा भगवन्‌ प्रमान कैसे ॥
और आये जबतक न मुझपे करुणाहो निश्चय करुणा निधानकैसे॥
मैं निर्भय अक्षय गती को पाऊं तुम्हारी भक्ति प्रधान निकले ॥
दो अपना दर्शन ओश्यामसुन्दर नहींतो अबहीं ये प्राण० ॥

चिदानन्द घनरूप अनादी नाम आदि ॐकारा है ॥ बांके बिहारी कृष्ण मुरारी तुम्हैं प्रणाम हैमारा है ॥ चारों वेदों ने गाया अठारह पुराणने ललकाराहै ॥ जितना कुछहै कथन अर्थ नारायण पदका साराहै ॥ ब्रह्मा विष्णु महेशने येही बारम्बार पुकाराहै ॥ त्रिगुणात्मक इस देवोंका महादेव तुही अधाराहै ॥ सब ज्योतिनकी ज्योति साक्षी स्वयं प्रकाश उजाराहै ॥ बांके बिहारी कृष्ण मुरारी

तुम्हैं प्रणाम हमाराहै ॥ शेष गणेश सुरेश बतावें ज्ञान अमोघ तुम्हाराहै ॥ वरुण कुवेर मरुत कथहारे मिला न तोहू पाराहै ॥ सनकादिक नारद वशिष्ठ गौतमने यही विचारा है ॥ कहू अन्त नहिं पायो कपिल शुकदेव व्यास भृगुहाराहै ॥ तेरी महिमा अचिंत्य केशव तेरा भाव अपाराहै ॥ बांके बिहारी कृष्ण मुरारी तुम्हैं प्रणाम हमाराहै ॥ तुही मूल कारण तुझसे महतत्त्व और अहंकाराहै ॥ अहंकारसे पुनः सूक्ष्म स्थूल सर्व संसाराहै ॥ समष्टी व्यष्टी भेद लिये, जितना कुछ रूप पसारा है ॥ वहिर अन्तर धन धान्न सब आपहिका परिवारा है ॥ उत्पत्ति स्थिति तुझसे गोबिन्द तुझसे संसारा है ॥ बांके विहारी कृष्ण मुरारी तुम्हैं प्रणाम हमाराहै ॥ धर्म सनातनको दुष्टोंने दीनानाथ विगाराहै ॥ स्वयं इच्छाचारी विरुद्ध श्रुतीसे पंथ संभाराहै ॥ भार उतारो युगयुग प्रति जैसे भार उताराहै ॥तुम्हरी करुणासे करुणानिधि जीवोंका निस्ताराहै ॥ निर्भय ध्यानकी टेकतुम्हीं भक्तोंका तुही सहाराहै ॥ बांके बिहारी कृष्ण मुरारी तुम्हैं प्रणाम हमाराहै ॥

ख्याल वहर लंगडी ।

घटमें शिवके रकारहै और मुखमें हरके मकारहै ॥ महादेवको सदा श्री रामनामका अधारहै ॥ रकारसे देऋद्धि सदा शिव मकारसे देते मुक्ती ॥ ऐसे भोले हैं जिनके पासमें दोनोंही जुगती ॥ रकार रक्षाकरे सदा और मकारसे ममता रुकती ॥ शिवशंकरके पास नाना प्रकारकीहै उक्ती ॥ अष्टपहर दिनरैन सदा दोनों अक्षरका विचारहै ॥ महा० ॥ रकारसे हर हरें रोग और मकारसे देते माया ॥ विश्वनाथके हृदयमें राम नामहै समाया ॥ रकार रम रहा रोम रोममें मकार मेरे मनभाया ॥ दो अक्षरका आदि और अन्त

किसीने नहीं पाया ॥ रकार रचना करे और महिमा मकारकीभी अपारहै ॥ महा० ॥ मकारमें है रकार का रस रकारकाहै मकार मन ॥ विश्वनाथजी इसीसे राम नामका करे भजन ॥ रकारते राक्षस संहारे मकारने मारे दुर्जन ॥ रामनामके रटेसे नीलकंठ रहे सदा मगन ॥ विचार करके देखा मैंने चारवेदका ये सारहै ॥महा०॥ रकारकेहैं रंग सभी और मकारका मत ज्ञानीहै ॥ रामकी लीला सिवा शिवके नहीं किसीने जानीहै ॥ रामके नामका अन्त नहीं है थकी शेषकी वानीहै ॥ बनारसीने कीरती रामकी सदा बखानीहै ॥ पलपल छिनछिन निशदिन मुझको दो अक्षरकी पुकार है ॥ महादेवको सदा श्रीरामनामका अधारहै ॥

लावनी बाहरखडी।

भोजन कर या भूखा रहु या वस्त्र पहन या फिर नंगा ॥
जौलों जिये तू कहु इस मुखसे जय गंगा श्री जय गंगा ॥
नेम धर्म और कर्म अकर्मसे योग भोगमें कहु गंगा ॥
दुखमें सुखमें भले बुरेमें रोग अरोगमें कहु गंगा ॥
सोवत जागत राह बाटमें हर्ष शोकमें कहु गंगा ॥
मात पिता दारा सुत बिछुडे तो वियोगमें कहु गंगा ॥
धन दौलत या राज पाट हो या फिर बनजाय भिखमंगा ॥
जौलो जिये तू कहु इस मुखसे जय गंगा श्री जय गंगा ॥
रोवत हंसत नगर और वनमें जहांरहे तू कहु गंगा ॥
सम्पति विपति कुपति और पति नर सबी सहे तू कहु गंगा ॥
डूबत तरत मरत या जीवत मेरे कहे तू कहु गंगा ॥
ये मन मूढ समझ अब झट मेरो मन चहै तू कहु गंगा ॥
जो तेरे मन बसे कार्य यह लगे तेरे चितमें चंगा ॥

जौलों जिये तू कहु इस मुखसे जय गंगा श्री जय गंगा ॥
खेलत कूदत उछलत फांदत अपने मनमें कहु गंगा ॥
बाल जवानी और बूढापा तीनों पनमें कहु गंगा ॥
नाचत गावत गाल बजावत हर रंगनमें कहु गंगा ॥
सात द्वीप नव खंड और चौदहों भुवनमें कहु गंगा ॥
अन्धा हो या बहिरा हो या लूलाहो या इक टंगा ॥
जौलों जिये तू कह इस मुखसे जय गंगा श्री जय गंगा ॥
हानिलाभमें दिवस रात्रिमें आदि अन्तमें कहु गंगा ॥
संग कुसंगमें रंग कुरंगमें साधु सन्तमें कहु गंगा ॥
सचराचर चेतन और जडमें तू अनन्तमें कहु गंगा ॥
चाहें सबमें बैठके कहु चाहें एकान्तमें कहु गंगा ॥
बनारसी यह कहैं चाहें तू गरीब बन या कर दंगा ॥
जौलों जिये तू कह इस मुखसे जय गंगा श्री जय गंगा ॥

स्तुति शिवके त्यागकी—बाहरखडी ।

धनधन भोलानाथ ! तुम्हारे कौडी नहीं खजानेमें ॥ तीनलोक बस्तीमें बसाये आप बसे वीरानेमें ॥ जटाजूटका मुकुट शीश पर गलेमें मुंडोंकी माला ॥ माथेपर फूटासा चन्द्रमा कपालका करमें प्याला ॥ जिसे देखकर भय व्यापे सो गले बीच लिपटा काला ॥ और तीसरे नेत्रमें तुम्हारे महा प्रलयकी है ज्वाला ॥ पीनेको हर वक्त भांग और आक धतूरा खानेमें तीन लोक बस्तीमें बसाये आप बसे वीरानेमें ॥ चर्म सिंहका वस्त्र पुराना बूढा बैल सवारीको ॥ तिसपर तुम्हरी सेवा करती धनधन गौर विचारीको ॥ वो तो राजाकी पुत्री और व्याही गई भिखारीको ॥ क्या जाने क्या देखा उसने नाथ तेरी सरदारीको ॥ सुनी तुम्हारे व्याहकी लीला भिखमंगोंके

गानेमें ॥ तीनलोक बस्तीमें बसाये आप बसे वीरानेमें ॥ नाम तुम्हारे अनेकहैं पर सबसे उत्तम है नंगा ॥ याहीतें शोभा पाई जो विराजती शिर पर गंगा ॥ भूतप्रेत वेताल साथमें ये लश्कर सबसे चंगा ॥ तीनलोकके दाता होकर आप बने क्यौं भिखमंगा ॥ अलख मुझे बतलाओ मिले क्या तुमको अलख जगानेमें ॥ तीन-लोक बस्तीमें बसाये आप बसे वीरानेमें ॥ यहतो सगुणको स्वरूप है निर्गुणमें निर्गुण हो आप ॥ पलमें प्रलय करो छिनमें रचना तुम्हैं नहीं कुछ पुण्य न पाप ॥ किसीका सुमिरन ध्यान न तुमको अपनाही करते होजाय ॥ अपने बीचमें आप समाये आपी आपमें रहेहो व्याप ॥ हुआ मेरा मन मगन ये सिठनी ऐसी नाथ बनानेमें ॥ तीनलोक बस्तीमें बसाये आप बसे वीरानेमें ॥ कुबेरको धन दिया और तुमने दिया इन्द्रको इन्द्रासन ॥ अपने तन पर खाक रमाई नागोंके पहरे भूषन ॥ भुक्ति मुक्तिके दाताहो मुक्तिभी तुम्हारे गहे चरन ॥ देवीसिंह कहै दास तुम्हारा हितचितसे नित करे भजन॥ बनारसीको सब कुछ बक्शा अपनी जबां हिलानेमें ॥ तीनलोक बस्तीमें बसाये आप बसे वीरानेमें ॥

[स्तुति गणेशजीकी बहर लंगडी]।

हाथजोड कर करूं दण्डवत गणपति बुद्धि विनायकजी ॥ मुझ पापीको तारदो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ दीन दयालुहै नाम तुम्हारा ऋद्धिसिद्धि देनेवाले ॥ भजन आपकाहै ऐसा कोटि व्याधि क्षणमें टाले ॥ मोहनी सूरत सतोगुणी तुम सदाके हो भोले भाले ॥ सदा शारदा आपकी जिह्वा पर बोले चाले ॥ विघ्न विनाशन भजन तुम्हारा सदासेहै शुभ दायकजी ॥ मुझपापीको तारदो तुम्हीं तो सब लायकजी ॥ चतुर्भुजी मूरततनु सुन्दर शीश चन्द्रका

सेजियाला ॥ तीन नेत्रहैं गलेमें सोहै मुक्तन की माला ॥ रत्न जटित भूषन अगनित मणि मय बनेहैं अतिआला ॥ जगमग जगमग आपके भवनमें जगतीहै ज्वाला ॥ प्रथम देवता तुम्हींको पूजे तुमहो सबके नायकजी ॥ मुझ पापीको तारदो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ गिरिजा नन्दन असुर निकन्दन सन्तनके हो सुखदाई ॥ अनन्त तुम्हारे नाम ये महिमा वेदोंने गाई ॥ दूध पिलावे गौरी तुमको जोहै त्रिभुवनकी माथी ॥ महादेवने तुम्हें दी तीन लोक की प्रभुताई ॥ वेद पुराणके ऊपर तुम्हारा नामसदा सहायकजी ॥ मुझ पापीको तारदो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥ धूपदीप नैवेद्य लगाकर करे आरती पारवती ॥ पूजे तुमको चढ़ावे चन्दन चावल वेलपती ॥ मोदकका सब भोग लगावें ऋषी मुनी और जती सती ॥ कहैं देवीसिंह जो तुमको सुमिरे उसकी होय गती ॥ बनारसी कहै कष्ट हरो मेरे मैं तुम्हारा पायकजी ॥ मुझ पापीको तारदो तुम्हीं तो हो सब लायकजी ॥

(लावनी शरीरकी रक्षा बहर लंगडी ।)

हिरदेमें है हिंगलाज करे काज लाज रखने वाली ॥ नयनादेवी नैनमें बसै हंसै देदे ताली ॥ शीशमें सीता सती विराजे सावित्री संकटारानी ॥ मस्तकमें रहे आप श्री महाविद्या और महारानी ॥ भृकुटीमें करे वास भैरवी भयमाने सब अभिमानी ब्रह्ममें अपने विराजे विन्ध्याचल और ब्रह्मानी ॥ बसें नासिकामें नवदुर्गा नगरकोट लाटों वाली ॥ नयनादेवी नैनमें बसै हँसै देदे ताली ॥ मुखमें बसे मंगलादेवी सबकारज करदे मंगल ॥ होठोंमें हेमावती रहे क्षणमें काटदेवे कलिमल ॥ जिह्वामें जाह्नवी और यमुना सरस्वती सबसे निर्मल ॥ गलेमें गौरी और गायत्रीक

जप नाम अटल ॥ कंठमें बसै कालिका देवी कंकाली और महा-काली ॥ नयना देवी नयनमें वसै हँसै देदे ताली ॥ करनमें कमला और कात्यायनी कृपारूप अद्भुतमाया ॥ दोनों भुजामें भवानी वसै वडा सुख दिखलाया ॥ उरमें वसै उमा उत्तरायणी उग्रतेज उनका छाया ॥ कहाँ लग बरनूं लखी नहिं जातीहै अपनी काया ॥ बुद्धिमें वसे विधाता माता बडी बुद्धि देनेवाली ॥ नयना देवी नय-नमें वसै हँसै देदे ताली ॥ रोम रोममें रमी रमा और नाभि कम-लमें निर्वानी॥ कहै देवीसिंह इसे कोई पहिचाने चातुर ज्ञानी ॥ श्वांस श्वांसमें शक्तिबोले ध्यान धरै पूरे ध्यानी ॥ बनारसी कहै मुझे भगवतीको भक्ति मन मानी ॥मेवा और मिष्टान्न हार फुलोंकी नित्य चढती भली नयना देवी नयनमें वसैं देदे ताली ॥

[लावनी गौरक्षा—बहर छोटी]

गोपालहो तो तुम सब गौओंको पालो ॥ दुष्टोंको मारो तनक न देखो भालो ॥ यह तृण चुगलेवे अमृत दूधको देवें ॥ यह सबको देवें किसीसे कुछ नहिं लेवें हैं धन्य वो उनके भाग्य जो इनको लेवें॥ उनकी नैय्या भवसागरमें हरि खेवें ॥ सारे कसाइयोंके अब घरको घालो ॥ दुष्टोंको मारो तनक न देखो भालो ॥ गये कितनेही दिन बीत इन्हें दुखभारी ॥ ये विना गुन्हा तकसीर हैं जाती मारी ॥ निश्चय कर देखो यह सबकी महतारी ॥ ये अर्ज मेरी अब सुनलीजे गिरधारी ॥ सारी पृथ्वी-परसे यह पाप उठालो ॥ दुष्टोंको मारो तनक न देखो भालो ॥ हो कोई जात जो मांस गायका खावे ॥ वो उसै यह मालिक दोज़खमें पहुंचावे ॥ नहीं कहीं पर ऐसा लिखा जो मुझे दिखावे ॥ वह बेईमान बदज़ात जो इन्हें सतावे ॥ जो इन्हें सतावे उसे कतल

कर डालो ॥ दुष्टोंको मारो तनक न देखो भालो ॥ है बडे वह उनके सींग न तलक चलावे ॥ जो जराभी घुरको बहुतही वह डर जावे । माता मर जाय फिर यहीतो दूध पिलावे ॥ यह देवी-सिंह और बनारसी सच गावे ॥ गौओंके द्रोहीको श्री कालिका खालो ॥ दुष्टोंको मारो तनक न देखोभालो ॥

(बारहमासा स्वर्गीय पं. छब्बीलालमिश्र ।)

छोड़ गये हरि बारि उमरमें मनकी रही ऊधो मन मेरे ॥ चैत खिले बन वृक्ष लता अति आवे सुगंध सब फूलनसेरे ॥ शीतल मन्द सुगंध पवन नित चलत रहत वृन्दावन मेरे ॥ छोडये० ॥ हम वैशाख भई बैसाखमें लहर उठे सखी जोबन मेरे ॥ मोर मुकुट मन मोहन की छबि बसी रहत इन नैनन मेरे ॥ छोड० ॥ जेठमें ज्वाल तपे नभ धरनी विरह अगिन लागी तनमें ॥ बिन घनश्याम बुझे नहिं हमसों लाख बुझावो सखी अंसुवनसे रे ॥ असाढमें सखि बंगले छवाती खस खस हरे हरे पानन सेरे ॥ सुन्दर सेज सकल सुख हरि बिन मानों रहत हम काननमेरे छोड० ॥ गाड हिंडोला ब्रज ग्वालन सँग झूलतहैं हरि सावन मेरे ॥ अबके न आये पिया किन बिरमाये देर भई कहा आवन मेरे ॥ छोड भादों गरजे निज पिया के संग दामिनी दमक रही घन मेरे ॥ हमतरसें हरि कुब्जाके संग बैठ रहे माधो बन मेरे ॥ छोड़गये हरि० ॥ कारमें निर्मल चन्द चांदनी छिटक रही मोरे आंगनमेरे ॥का संग खेलूं मैं रास श्याम बिन वृन्दावनकी कुंजन मेरे ॥ कातिक आया सजे सब मन्दिर अँगन लिपाया सखी चन्दनसेरे भलाईहै न हरि बिन दीपमालिका ब्रजमें और ब्रज ग्वालन मेरे ॥ छो० ॥ यमुनाजल अस्नान करतहीं ब्रज वनिता सब अगहनमेरे ॥ एकदिन चीर हरे

मनमोहन आय गये कितते छिन मेरे ॥ छोड० ॥ पूसमें रूस गये हरि जवतें फिर नहिं आये ब्रज वनितनमेरे आप न आये अपने वदलेमें पठयो योग वियोगन मेरे ॥ छोड० ॥ माघ वसंत हरो सवके शिर इतर लगायो सखि वसनमेरे हमरो वसन्त हरो कुब्जाने मोह लिये हरि सैनन मेरे ॥ छोड० ॥ फगुवा फीको रंग लाल बिन उडत गुलाल न ग्वालन मेरे ॥ रोयरोय नैन भये पिचकारी होरी भई ऐसी फागुन मेरे ॥ छोड० ॥ बारहमास व्यतीत भये मनलाग रह्यो हरि दर्शन मेरे ॥ 'छब्बीलाल' को यही वर दीजे राखि लेहु मोहि चरननमेरे छोडगये हरि वारि उमरमें मनकी रही ऊधो मन मेरे ॥

भजन नं० १

दोहा—जैसे माखन दूधमें, अनुगत गगन समान ।
व्यापक सबमें होरहा, नरधर तिसका ध्यान॥
ईश्वर तुमबिन कौनहै, दुःख मिटावन हार ॥
नाव पडी मंझधारमें, इसे लगादो पार ॥

ईश्वर तुम पार उतारियो मेरी नैया बहुत पुरानी ॥ धर्म सभामें याद किया है ॥ भजनगानमें मेरा जिया है ॥ बहुतोंको तैंने तार दियोहै ॥ मेरीभी तरफ निहारियो । कर किरपा करदो ज्ञानी ॥ मेरी नैया बहुत पुरानी । ईश्वर तुम पार उतारियो ॥ १ ॥ मैं पापी तुम अघनाशीहो मैं दुःखी तुम सुख दासीहो ॥ तीन कालमें अविनाशीहो । मेरे दुखको टारियो ॥ क्यों करो देरहो हानी मेरी नैया बहुत पुरानी ॥२॥ हे जगदीश्वर तुम ये मेरि बिन्ती इसके पाप घने वा कमती ॥ उनकी आप न कीजो गिन्ती । दास समझ कर पालियो तुम सुने गये हो दानी । मेरी नैया बहुत पुरानी ॥ ३ ॥

हे नारायण धर्म बचाओ । पाखण्डियोंका पंथनशाओ ॥ इनके चितमें ज्ञान जचाओ । वेद विरोधी हारियो ॥ कहै सिंहराम यह बानी । मेरी नैया बहुत पुरानी ॥ ४ ॥

भजन नं० २ ।

भवसागरसे नैया कैसे होपार । धन लोभ मोह मद सानी ॥ मेरी नैया बहुत पुरानी ॥ नाविकहैं मतवार । भवसागरसे नैया कैसेहो पार ॥ चहुँओर बहै जल धारा । कहिं दीखे नहीं किनारा ॥ उठैं तरंग अपार । भवसागर से नैया ॥ कैसे० ॥ और तापर ग्राह भरेहैं ॥ इनसे नहिं कोई तरेहैं ॥ सबको लेते मार ॥ भवसागरसे नैया ॥कैसे०॥ उल्टी हि पवन चलतीहै ॥ मेरी नैयाभी हिलतीहै । पागल हुए कहार । भवसागरसे नैया ॥ कैसे० मेहवरसे बादली गरजे । दुखसे मेरा हीया लरजे । रोरो बारंबार । भवसागरसे नैया ॥ कैसे० अब दिनसे रैन हुई जाती । मेरी जलमें नहीं बसाती । डूबेगी मंझधार । भवसागरसे नैया ॥ कैसे० उस दीनानाथ विनारे कोई नाही करै किनारे उसीसे करो पुकार । भवसागरसे नैया ॥ कैसे० डूबेहै पार लगावो ईश्वर तुम हाथलगावो मेरे हो रखवार । भवसागरसे नैया ॥ कैसे० जैसे गज राज उबारा। जलमांहि मकरथा भारा । ऐसे मुझे उबार । भवसागरसे नैया ॥ कैसे० यह सिंह रामकी उक्ती ईश्वरकी करलो भक्ती यहीहै जगमें सार । भवसागरसे नैया ॥ कैसे०

भजन नं० ३.

दोहा—पक्षपातको छोडके, करो धर्म प्रतिपाल ॥
सत्यासत्य विचारके, चलो वेदकी चाल ॥

तूजपक्ष धर्मको धारलो कर सांच झूंठका निर्णा दयानन्दने जो लिख दोना ॥ सभी बात ना करो यकीना ॥ जगह जगह मिथ्या भर

दीना। उसका लिखा बिचारलो फिर पक्षपात नहिं करना॥ कर सांच झूंठका निर्णा ॥ तज० जगत् सरामें सदा न रहना झूंठा वचन कभी नहीं कहना॥क्रोध करे कोई सबका सकता॥यह तुम मनमें धारलो ॥जो जगसे चाहो तिरना कर सांच झूंठ का निर्णय तज०॥ नहीं किसीका धर्म छुड़ाना ॥ फिर होगा पीछे पछताना ॥ धर्म नदीमें कर अस नाना। सारे मैल उतारलो फिर जल्दी होगा मरना कर सांच झूंठ का निर्णा तज० ॥ जो जो वहै पक्षकी धारा ॥ उनका सारा धर्म बिगारा सिंहरामने छन्द उचारा सत गुरुवार उतारलो लेकर वेदों की शरना कर सांच झूंठका निर्णा तज० ॥

भजन नं० ४।

तुम धर्म सुनो संन्यासका जो ऋषि मुनियोंने गाया ॥ उमर बीत ले बर्ष पचासा तबसे करले बनमें बासा ॥ पचहत्तरमें ले संन्यासा संग छोडे सब पासका यह सत्यारथमें आया जो ऋषि मुनियोंने गाया ॥ १ ॥ तीन ऋणोंको दूर करादें। मनको मोक्ष तभी लगादें नहीं करे तो विषय गिरादे। लेख मनू और व्यासका ॥ फिर साधै अपनी काया जो ऋषि मुनियोंने गाया ॥२॥ नहिं पुत्रोंसे प्यार लगावे धनकी इच्छा तोड बगावे। मान बडाई दूर बहावे भिक्षा खाइ कम आसका यह शतपथमें दरशाया जो ऋषि मुनियोंने गाया ३ ॥ एक बार भिक्षाको लावे। धनी मांगकर कभी न खावे ॥ स्वाद करे तो विषय गिरावे। कथन ऋषी मनु खासका ॥ पदसिंहराम समझाया। जो ऋषि मुनियोंने गाया ॥ ४ ॥

भजन नं० ५।

संन्यासी के धर्म पर करो समाजी ध्यान ॥ कितने धर्मोंपर रहे दयानन्द विद्वान॥ देखो आन समाजी स्वामीकी पोल ॥ नारायण

नाम छपाया ईश्वरका उसे बताया ॥ दिखालो पोथी खोल देखो आन समाजी स्वामी० ॥ बुद्धीको पापमें मलके क्या कहता आगे चलके करालो उसकी तोला देखो आन समाजी स्वामी० ॥ फिर वेद विरुद्ध सुनाया देखो स्वामीकी माया ॥ मचादई कैसी रौल देखो आन समाजी स्वामी० ॥ अब कौन बात सच्चीहै । दोनोंमें एक कच्चीहै ॥ कहो क्योंहो अनबोल देखो आन समाजी स्वामी० ॥ इसमें नहिं दोष तुम्हारा सत्यारथ झूठ पुकारा ॥ पढालो उसे टटोल देखो आन समाजी स्वामी० ॥ कह सिंहराम सुन प्यारे तुम मूढोंके बहकारे ॥ ढोलमें निकला पोल । देखो आन समाजी स्वामी० ॥

भजन नं० ६ ।

दयानन्द के चेलको करो इधर को ध्यान ॥ मनमें बुरा न मानियो नहीं कोई नुकशान ॥ स्वामीने गप्प लगायके धर्मोंका नाश कराया ॥ दयानन्दने श्लोक बनाया । मनू नाम झूंठा छपवाया । कहीं चिह्न हमको नहिं पाया । उसे देखो उठायके ॥ जो मिथ्या अर्थ बनाया । धर्मोंका नाश कराया ॥ स्वामी० देखो उसने अर्थ बनाया । संन्यासीको दान बताया । सोनामोती धन दिलवाया । झोलीमें भरवाया और दिलमें ना शरमाया । धर्मोंका नाश कराया ॥ जो इच्छा भागी ना धनकी । विषय वासना रहगई मनकी । फिर शुद्धीहो कैसे तनकी । कपडेही रंगवायके ॥ क्यौं संन्यासी कहलाया । धर्मोंका नाश कराया ॥ काम क्रोध धनलोभ मानजी संन्यासीको चर्ण दानजी नहिं लेना सुन करो ध्यानजी—सद्गुरु चरन मनाया ॥ पद सिंहरामने गाया । धर्मोंका नाश कराया ॥ स्वामी०

भजन नं ७.

दयानन्दने झूंठी रचदई किताब । कुछ वेद ऋचा घर दीनी । फिर गपड चौथ कर दीनी । अर्थ सब किये खराब । दयानन्दने झूंठी रचदई किताब ॥ अनपढे लोग नहिं जाने । कोई पंडितही पहिचाने । पढेहो जौन सहाव । दयानंदने झूंठी ॥–रच० क्या हाय ! मोहिनी डारी । सबकीही बुद्धी मारी । पिलादी मनो शराब ! दयानंदने झूंठी ॥ रच० मन पांच हजार सुनाया ॥ सब अन्न वही बतलाया ॥ तीनतीन पाव हिसाब । दयानन्दने झूंठी ॥ रच० ॥ अट्ठाइस लाख जन तृप्ती ॥ लिखगया दयानँद खप्ती ॥ फिरो क्यौं बने नवाब ॥ दयानन्दने झूँठी ॥ रच० ॥ अबतो हुशियार बनो रे ॥ स्वामीकी गणित गिनो रे ॥ पढो सत्यार्थ जनाव ॥ दयानन्दने झूँठी ॥ रच० ॥ गलती हिसाब क्यौं जोड़ा ॥ धरदीन्हा हाय गपोडा ॥ समाजी कहो जवाव । दयानन्दने झूंठी ॥ रच० ॥ मिथ्यारथको मत मानो ॥ विषयुक्त अन्न पहचानो ॥ बगादो सभी सवाब ॥ दयानन्दने झूंठी ॥ रच० ॥ जो झूँठ सहितको मानो तो उसको झूँठा जानो ॥ सिखादो अभी शिताब ॥ दयानन्दने झूँठी ॥ रच० ॥ कह सिहराम जब जावो ॥ तुम धर्मराजको पावो ॥ सजा सब उडै कबाब ॥ दयानन्दने झूँठी ॥ रच० ॥

भजन नं० ८.

दोहा–सत्य बराबर धर्म नहिं, पाप न झूँठ समान ।
दयानन्दने क्यौं लिखा, संन्यासी ले दान ॥

झूँठा श्लोक बनाया । क्यौं दोष मनूको लाते ॥ जो संन्यासी भिक्षा लावे ॥ तो सबके वशमें होजावे ॥ सोना मोती धनले आवे । दान मनूने गाया ॥ यूं दयानन्द फरमाते । क्यौं दोष मनूको लाते॥

कुछतो मनमें सोच दियारे ॥ दोदो आंख लगीहैं प्यारे ॥ लोभ बलीने सबले मारे । बुरी लोभकी माया ॥ नहिं सभी संत होते जाते । क्यौं दोष मनूको लाते ॥ २ ॥ कोई घरपर धरो खजाना। हमको इसमें दुख नहिं माना ॥ झूंठा दोष किसीको लाना । इसमें तो दुख आया क्यौं लोगोंको बहकाते ॥ क्यौं दोष मनू पर लाते ॥ ३॥ मनुस्मृतीको ह्यां पर लाओ । वो आधा श्लोक देखाओ ॥ मिले नहीं दिलमें शरमाओ फिर कैसे छपवाया ॥ यूं सिंहरामजी गाते । क्यौं दोष मनूको लाते ॥ ४ ॥

भजन नं ९.

हाहारे मित्रो ! भारत देश सुधारो ॥

सबदेशोंमें कभी आपका गडाहुआ था झंडा ॥ सो आलस वश किया आजहै ध्वजा सहित वो ठंडा ॥ हाहारे मित्रो ! भारतदेश सुधारो ॥ विद्याका भंडार जिसे कहते थे विदेशी भाई ॥ आलस फूट कुमति आदिकने भारत दशा गँवाई ॥ हाहारे मित्रो भारतदेश सुधारो ॥ इसी देशमें हुए युधिष्ठिर भीमसेन और अर्जुन तिनकी जगह हायघेरेहैं—हमसे पापी दुर्जन॥ हाहारे मित्रो भारतदेश सुधारो॥ हुए जहां रावण बाणासुर सहस्रबाहुसे राजा ॥ वहाँ हुए अब गीदड हमसे नेक न आवत लाजा ॥ हाहारे मित्रो भारतदेश सुधारो ॥ किसीसमय यह बढाचढाथा विद्या बल और धनमें । अधोगतीको प्राप्त होगया हाय हजारी छनमें ॥ हाहारे मित्रो भारतदेश सुधारो॥

भजन नं० १०.

हाहारे मित्रो ! देशी माल प्रचारो ॥

निर्धनदेश धनी होजावे ऐसो मन्त्र विचारो ॥ शिल्पक्रियाकी कला खोलकर देशी वस्तु प्रचारो॥ हाहारे मित्रो देशी माल प्रचारो॥

चाल विदेशी धारन करकर धर्म कर्म तजि डारो ॥ भूखों मरिगये देश बांधव अबतो कुमति विसारो ॥ हाहारे मित्रो देशी माल प्रचारो ॥ कान लगाकर बाबूलोगो सुनियो वचन हमारो। अबतो फैल्टकैप जाकटको भये पतलून उतारो ॥ हाहारे मित्रो देशी माल प्रचारो ॥ नानाकलैं चलीं दुनियांमें मच रह्यो हाहाकारो। पिसनारी कुटनारी आदिक रोरो शिरदे मारो ॥ हाहारे मित्रो देशी माल प्रचारो ॥ हाथजोरिके कहै हजारी सभी जनोंसे ठाडो ॥ अब दुर्दशा देख भारतकी दयाधर्म उर धारो ॥ हाहारे मित्रो देशी माल प्रचारो ॥

भजन नं० ११.

दिखलादो मित्रो वेश स्वदेशी लासानी ॥

हँसतेहैं इस्टिरियावाले अमरीकन अफगानी ॥ इशरत भरी दृष्टिसे देखें चीनी और जापानी ॥ दिखलादो मित्रो वेश स्वदेशी लासानी ॥ देखि दशा उपहास उड़ावें रूसी इंग्लिस्तानी ॥ दोऊ हाथसे ताली देते रूमी और इरानी ॥ दिखलादो मित्रो वेश स्वदेशी लासानी ॥ सबदेशोंमें कभी आपकी परगटथी बुधिमानी ॥ ताकी जगह अविद्या फैली बन बैठे अभिमानी दिखलादो मित्रो वेश स्वदेशी लासानी॥ एक रोज कहलातेथे तुम सबसे उत्तम दानी ॥ आज तुम्हीं काला कहलादो क्यौं नहिं होती ग्लानी दिखलादो मित्रो वेश स्वदेशी लासानी ॥ शिल्पकारीको देख देखकर होतीथी हैरानी ॥ सो अब तुमको दीख पडेहै अद्भुत रेल रवानी ॥ दिखलादो मित्रो वेश स्वदेशी लासानी ॥ निजनिज ग्राम नाम तजि भाई बोलो सब इक बानी ॥ जो कोई पूछे कहो हजारी हूं मैं हिन्दुस्तानी ॥

भजन नं० १२ ।

सब सो सो उम्र गँवाई अब जाग उठोरे भाई ॥ आंख खोलकर कर देखो प्यारे कर्म काण्ड हो गये तुम्हारे ॥ हरे० ॥ तुमने ऐसे पांव पसारे । कभी न लूली अंगडाई अब जाग उठो हे भाई ॥ सब सोसो० ॥ टार दुपट्टा देउ शिरोंका इन्तजाम कुछ करो घरोंका ॥ हरे० ॥ समाचार पढ़ बडे बडोंका ॥ पुस्तक लेहु मंगाई ॥ अब जाग उठो हे भाई ॥ सब सोसो० ॥ सुनो तुम्हैं हम याद दिलाते तुम्हीं ऋषी सन्तान कहाते ॥ हरे० ॥ ऐसे कुलको दाग लगाते कैसी मति बौराई ॥ अब जाग उठो सब भाई ॥ सब सोसो० ॥ मित्रो यह वो देश पाकहै शिरपर चढती जिसकी खाकहै ॥ हरे० मगर कटी अब जात नाकहै भारतमात लजाई ॥ अब जाग उठो हे भाई ॥ सब सोसो० ॥ एक समय नास्तिक लोगोंका आर्यावर्त्तमें जोर हुआ था हरे० ॥ नास्तिक सबै करो वेखटका धर्मको धता बताई अब जाग उठो हे भाई सब सोसो० देख धर्मका अती निरादर प्रकट हुये शंकरा चार्य वर धन्य धन्य जिनकी थी मादर ॥ दिया आस्तिकत्व फैलाई अब जाग उठो हे भाई॥सब सोसो० दास हजारी यों समझावें भृगु वशिष्ठकी याद दिलावें हरे० ॥ मोरध्वजका नाम सुनावे जिन्दी देह कटाई ॥ अब जाग उठो हे भाई॥सब सोसो०

भजन नं० १३.

क्यों छुडवाते मित्रो नारीका धरम । धन लेनपती कहि जावे नहि तीन वर्ष तक आवे छोड़के लाज शरम क्यों छुडवाते॥ मित्रो नारीका धरम॥फिर और पतीको करले बच्चेको पेट भरले सिखा दिया कैसा करम क्यों छुडवाते ॥ मित्रो नारीका० ॥ जब पहला पती आजावे वो करा हुआ छुट जावे॥ दयानन्द कैसा भरम क्यों छुडवाते॥मित्रो

नारीका धरम॥कह सिंहराम समुझाके लज्जाको दूर कराके दुखाते मेरा भरम । क्यों छुडवाते मित्रो नारीका धरम० ॥

भजन नं० १४.

भारतकी नारी सुनियो विनय हमारी ॥ जिस वरसे पिता विवाहे उसकी आज्ञासे चाहै तुम्हारा भाई विचार॥सुनियो विनय हमारी० रहो उसीकी आज्ञा कारी जीवो व मरो पियारी॥उसीसे रक्खो प्यार सुनियो विनय हमारी०॥हो मूढ क्रोधि व कामी जैसाहो जिसका स्वामी उसीको मनमें धार । सुनियो विनय हमारी ॥ भारतकी० देवोंकी तुल्य कर पूजा । पति सिवा नहीं है दूजा । तेरा जो करे सुधार । सुनियो विनय हमारी ॥ भारतकी० है वरत यज्ञ यह भारी । कर टहल पतीकी प्यारी । मिलेगा स्वर्ग अपार । सुनियो विनय हमारी॥ भारत० जिसकी नारी कहलाओ । वो जीवो वा मर जाओ ॥ तुम्हीं मत करो बीगार । सुनियो विनय हमारी ॥ भारत० जो नारी विधवा होवे।वो ब्रह्मचर्य नहिं खोवै ॥ करे नहिं धर्म खुआर । सुनियो विनय हमारी ॥ भार० जो इसी धर्मपर रहती । विषयोंकी मारको सहती ॥ मिले उसे स्वर्ग दुआर । सुनियो विनय हमारी ॥ भारत० वो निन्दा ह्यां पाती है । जो पुत्रोंको चाहतीहै ॥ बना दूजा भरतार । सुनियो विनय हमारी ॥ भार० फिर नर्क बीच जावेंगी । गीदडकी योनि पावेंगी ॥ करेगी जो व्यभिचार । सुनियो विनय हमारी ॥ भार० कहैं सिंहराम है वहना । यह मनू ऋषीका कहना ॥ सभीसे दिया पुकार । सुनियो विनय हमारी॥भारतकी०॥

भजन नं० १५.

सीताकी ओर निहारलो जो थी पतिवरता नारी ॥ गई साथ पतिके वो वनको । लात मार सुख सम्पति धनको ॥ कष्टदिया

अति अपने तनको—मनमें जरा विचारलो ॥ सब छोडे महल अटारी । जोथी पतिवरता नारी ॥ १ ॥ रहती थी वो रंगमहलमें । लगी टहलनी उसकी टहलमें ॥ हरे० नंगे पैर गई पतिकी गैलमें । ऐसा व्रत तुम धारलो ॥ जो धारा जनक दुलारी । जो थी पति-वरता नारी ॥ २ ॥ हुई कान्ती दूनी मुखकी । नहिं परवाह करी कुछ दुखकी ॥ हरे० सवी लालसा अपने सुखकी । दई पतीपर वार लो ॥ रही सदावो आज्ञाकारी । जोथी पतिवरता नारी ॥ ३ ॥ पति सेवामें हित चित दीजो । कभी भंग आज्ञा मत कीजो ॥ मेरा कहा मान अब लीजो । येही जीवनका सार लो ॥ कहैं बहना खडा मुरारी । जोथी पतिवरता नारी ॥ ४ ॥

भजन नं० १६.

बहनों तुम यह गुण धारलो । मन चाहा फल पाओगी ॥ बाल-कपनमें विद्या पढना । घरमें नहीं किसीसे लडना ॥ यथायोग्य प्रिय भाषण करना । कैडे वचन सहारलो ॥ सब दुःखोंसे छुट जा-ओगी । मन चाहा फल पाओगी ॥ १ ॥ घरके कामोंमें चतुराई । तन और वस्त्रकी करो सफाई ॥ हरे० सब बहनों सुनो कान लगाई । गर्भाधान सुधारलो ॥ अति उत्तम सुत जाओगी । मन चाहाफल पाओगी ॥ २ ॥ धर्मकमाईसे धन जोडो । बुरे कर्मसे मुखको मोडो ॥ हरे० करना फिजूलखर्ची छोडो । घरका खर्च विचारलो ॥ नहीं मूर्खा कहलाओगी । मन चाहा फल पाओगी ॥ ॥ ३ ॥ सेवा करना सास ससुरकी । मातापिता पती देवरकी ॥ हरे० यह आज्ञाहै परमेश्वरकी । सो तुम मनमें धारलो ॥ पतिवरता कह-लाओगी । मन चाहा फल पाओगी ॥ ४ ॥ धीरजता धारोहै प्यारी । जो द्रौपदि सीताने धारी ॥ हरे० तेजसिंह कहैं सुनो

हमारी । भारतकी नाव उभारलो ॥ जगमें यश फैलाओगी । मन चाहा फल पाओगी ॥ ५ ॥

भजन नं० १७.

तज दुष्ट कर्म अजमायलो । हे बहना सुख पाओगी ॥ जो दार्थ पागल कर देवे । खानपानसे बुध हर लेवे ॥ हरे० ऐसी वस्तु कभी नहिं सेवे । यह अमृत फल खायलो ॥ प्यारी परघर जाओगी । हे बहना सुख पाओगी ॥ १ ॥ दुष्टोंकी संगति नहिं करना । नहीं पतीसे अलग विचरना । हरे० मनूऋषीने येही वरना॥ नवमाध्याय पढायलो ॥ वे वक्त नहीं सोओगी । हे बहना सुख पाओगी ॥ २ ॥ रहो पतीकी आज्ञाकारी । पतिव्रता कहलाओ प्यारी ॥ हरे० और बहुतसी तरगई नारी । भारतमें यश पायलो ॥ नहिं पीछे पछताओगी । हे बहना सुख पाओगी ॥ खेल तमाशें देख न जाना । नाचकूदमें मन नहिं लाना ॥ सिंहराम यों करता गाना । इनसे चित्त हटायलो ॥ भवसागर तर जाओगी । हे बहना सुख पाओगी ॥ ४ ॥

भजन नं० १८.

परनारीके प्यारो । करलेहु विचार ॥ परनारि चित्त धरतेहो । क्यौं जुल्मी जुल्म करतेहो?॥ घरोंकी दई बिसार परनारीके प्यारो॥ कर० कोई रंडी तक जाते हैं । नहिं मनमें शरमातेहैं॥धर्म सब हुआ खुआर । पर नारी के प्यारो कर०॥ जो पैसा आप कमावें वेश्याको जाय खिलावें ॥ लुटादीना घरबार पर नारीके प्यारो कर० ॥ रग उसे गर्भ रह जावे । वो कन्या तुम्हारी जावे ॥ बनेगी सबकी नार । पर नारीके प्यारो कर०॥ जो तुमको दे कोई गाली ॥ बेटीका नाम निकाली ॥ धरो तुम उसको मारपर नारीके प्यारो कर० ॥ वोभीहै

तुम्हारी बेटी । किसकिसके संग लपेटी ॥ फिरे करती व्यभिचार। पर नारीके प्यारो कर० ॥ है और बात एक न्यारी । कर दिया वीर्य बल ख्वारी ॥ सभी बन गये बीमार । पर नारीके प्यारो कर० ॥ आतिशने बहुत सताये । वैद्योंने लूटके खाये ॥ मरो कर हाहाकार। परनारीके प्यारो कर०॥ हा मानुष भी कहलाके फिर जारकी पदवी पाके ॥ मरो तुमको धिक्कार।पर नारीके प्यारो कर० ॥ जगमें तो यह दुख पाया । सबसेही बुरा कहाया ॥ अन्तमें नर्क दुआर । पर नारीके प्यारो कर० ॥ कहैं सिहराम इसै छोडो । ईश्वरसे नाता जोडो॥ तभीहो जन्म सुधार । पर नारीके प्यारो कर० ॥

भजननं० १९.

रंडीने इस देशमें करी बहुतसी हान । तन मन सब हर लियो खोया दीन इमान॥ रण्डीसे चित्त हटायलो जो सुख पाना चाहते हो॥ चार टके जो मूढ कमावें वोही रण्डीको दे आवें हरे० ॥ वो उनका गोमांस उडावे । चाहै तुमही अजमायलो ॥ फिर क्यों नहीं शर्माते हो । जो सुख पाना चाहते हो ॥ १ ॥ जब तक तुमसे पैसा पावे। मित्रो बहुतै प्यार बढावे ॥ हरे० बिन पैसेके गाली सुनावे । मनमें तो शरमायलो ॥ क्यों रोगी बने जातेहो । जो सुख पाना चाहतेहो२॥ बढे रोग फिर पीछे रोवें । नहीं सहायक रण्डी होवे हरे० ॥ नाहक जन्म वृथा क्यों खोवे । ईश्वर का गुण गायलो क्यों बडी देर लाते हो । जो सुख पाना चाहते हो ॥ ३ ॥ स्वरूप लाल कहैं वचन सुनाऊं ॥मैं श्रीरामका ध्यान लगाऊं ॥ १ ॥ हरे० मित्रो तुम्हेंभी ज्ञान बताऊं चित्त धर्ममें धायजो । क्यों पैसे ठगवातेहो । जो सुख पाना चाहते हो० ॥ ४ ॥

भजन नं० २०.

गुरुकुलका हाल सुनो समाजी भाइयो हा कैसा गुरुकुल खोला देशोंमें पड गया रोला फैला । दिया ठगका जाल । सुनो समाजी भाइयो ॥ १ ॥ मैं आज तुम्हें समझाऊं गुरु कुलकी पोल सुनाऊँ सुनो सब करके खयाल । सुनो समाजी भाइयो ॥ २ ॥ यवनों तक आप मिलाओ । हा जरा नहीं शरमाओ ॥ अभी तुम करो सम्भाल । सुनो समाजी भाइयो ॥ ३ ॥ अबदुल गफूर मिल-बाके । और यवनसे आर्य बनाके ॥ बतादीना धरम पाल । सुनो समाजी भाइयो ॥ ४ ॥ मसजिदसे नाता तोडा । फिर वजूका बँधना फोडा ॥ करो यह जुल्म कमाल । सुनो समाजी भाइयो ॥ ५ ॥ वेदोंकी शरण लईहै । कहो अब क्या कसर रहीहै । गलेमें जनेऊ डार । सुनो समाजी भाइयो ॥ ६ ॥ जीवोंके मारने हारे । जो महापापी हत्यारे ॥ बिठा लिये अपने थाल । सुनो समाजी भाइयो ॥ ७ ॥ वालेकम सलामा नाइ । एक नई नमस्ते पाइ ॥ छोडकर अपनी चाल । सुनो समाजी भाइयो ॥ ८ ॥ यह मुंशी रामने भाई । ब्राह्मणकी लडकी ब्याई ॥ हाय खत्रीका लाल । सुनो समाजी भाइयो ॥ ९ ॥ स्वरूपवाला यों कहता ॥ तू मेरे वचन नहिं सहता ॥ बांधकर झूठी पाल । सुनो समाजी भाइयो १०

भजन नं० २१.

भूल रहा संसारी । फंसकर परिवार ॥ माताके पेटमें आके । ईश्वरको शीश झुकाके ॥ कहता था हरबार । भूल रहा संसारी ॥ अबके फिर दुःख मिटादो । यह गर्भबास छुडवादो ॥ रहूं तेरे नामाधार । भूल रहा संसारी ॥ फंसके० ॥ २ ॥ यह वास छुडादो रा । मैं दास रहूंगा तेरा ॥ ऐसे किया करार। भूल रहा संसारी॥

फंसके० ॥ ३ ॥ ईश्वरने बाहर निकाला । मायाने ज्ञान हर डाला । भूलगया करतार । भूल रहा संसारी ॥ फंसके० ॥ ४ ॥ लडतीहै जम दुखदाई । देतेहैं नीव पिलाई ॥ कुछ नहिं चलती चार । भूल रहा संसारी ॥ फंस ॥ ५ ॥ बचेका लाड लडाया । फिर जरा होश नहिं आया ॥ खेलनेमें तइयार । भूल रहा संसारी० फँसके० ॥ ६ ॥ अब चढ़ी जवानी भारी ॥ अच्छी बुद्धी गई मारी ॥ बढा अतिही हंकार । भूल रहा संसारी फँसके० ॥ ७ ॥ जिसको तू कहता नारी ॥ तेरी यही करेगी ख्वारी ॥ करके बहुतै प्यार । भूल रहा संसारी फँसके० ॥ ८ ॥ शास्त्रोंको झूँठा जाने ॥ वेदोंकी रीति नहिं माने ॥ बना लिये बहुतै यार ॥ भूल रहा संसारी फँस० ॥ ९ ॥ यह सिहराम समुझाँवे ॥ ईश्वरकी और नहिं आवे ॥ जवानीमें मतवार । भूल रहा संसारी फँस० ॥ १० ॥

भजन नं० २२.

नहीं काम आवेंगे तेरे सुत दार ॥

तू पाप करे दिन राती तेरा कोई नहीं है साथी ॥ फँसा झूंठे संसार नहीं काम आवेंगे तेरे० ॥ मतलबके सभी सगे हैं सुखमें ही पास लगेहैं ॥ फिर यह देहि विसार नहीं काम आवेंगे तेरे॥ २ ॥ हो गया मोहमें अन्धा पापोंका फैलाया धन्धा झूंठाही व्यवहार नहीं काम आवेंगे ॥ ३ ॥ तेरे० ॥ हो बूढा नहीं बसाती ॥ मुखमेंसे लार चुचाती ॥ खांसी करै विकार । नहीं काम आवेंगे ॥ तेरे० ॥ ४ ॥ फिर अंग सिकुड़ गया सारा ॥ चलनेका नहीं सहारा ॥ लाठीके आधार । नहीं काम आवेंगे ॥ तेरे० ॥ ५ ॥ आंखोंमें हुआ अँधेरा ॥ कानों नहिं सुने घनेरा ॥ मुंड़की देवे नार॥ नहीं काम आवेंगे । तेरे० ॥ ६ ॥ तृष्णाको नहीं मिटावे ॥ फिर

जमके दूत ले जावें ॥ गलेमें फांसी डार । नहीं काम आवेंगे ॥ तेरे ॥ ७ ॥ मारगमें चलै अकेला ॥ तैं पुण्य किया नहिं धेला ॥ रोवे वहां पुकार । नहीं काम आवेंगे । तेरे० ॥ ८ ॥ जोड़ा हिसाब लेखाहै ॥ तेरा पाप सभी देखाहै ॥ भोगे नर्क अवार । नहीं काम आवेंगे तेरे० ॥ ९ ॥ यह सिंह रामका गाना ॥ लख चौरासीमें आना ॥ होगा बारम्बार । नहीं काम आवेंगे । तेरे० ॥ १० ॥

भजन नं० २३.

दोहा—इन गौओंसे मित्रवर, सबहो पैदामाल ॥
गोवध जबसे होरहा, हुआ देश कंगाल ॥
गौओंकीटेर—सुनो श्याम गिरधारी ॥

गायोंको यवन तरसावें ॥ गौमावा हा ! चिल्लावें ॥ कहां तुम कर दई देर—तुम्हीं पूतना मारी ॥ गौओंकी टेर सुनो श्याम गिरधारी ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण प्रभो अब आओ॥ गायोंके प्राण बचाओ॥ ले करमें शमशेर ॥ तुम्हीं जगत् हितकारी ॥ गौओंकी टेर—सुनो श्याम गिरधारी ॥ २ ॥ हा ! बढ़गये मांसाहारी ॥ गौओंकी कर दई ख्वारी ॥ लई दुष्टोंने घेर ॥ छुडवादो असुरारी ॥ गौओंकी टेर—सुनो श्याम गिरधारी ॥ ३ ॥ कहैं सिंहराम दुख होवे ॥ हे ईश्वर तू कहाँ सोवे ॥ दयाकी दृष्टी फेर ॥ हो गई गौ वैं दुखारी॥ गौओंकी टेर सुनो श्याम गिरधारी ॥ ४ ॥

भजन नं० २४.

दोहा—गौकी सब रक्षा करो। हेछत्तीसों जात ॥
दूध पिलावे जगतको। इससे सबकी मात ॥
गौ माता अर्ज गुजारै। कोई धर्मी प्राण उबारलो ॥
गौ जंगलमें चरने जातीं ॥ घास फुँस खाखाकर आतीं ॥ हरे०

तुमको दूध दही पिलवाती। घीका स्वाद विचारलो ॥ और बेल बनादिये मारे। गौमाता अर्ज गुजारे ॥ १ ॥ जो कोई द्रव्य मांगने आवे। अपने तनको आप बिकावे ॥ हरे० कर्जा काढे तू सुख पावे। गौओंका दुख टारलो ॥ हो कोई दयाको धारे। गौमाता अरज गुजारे ॥ २ ॥ बूढी हो जब मारना पाई। चर्मकादें जूता पहराई ॥ हरे० फिरभी तुम नहिं करो सहाई। उन दुष्टोंसे बचाय लो ॥ जो आन गऊको मारे। गौमाता अर्ज गुजारे ॥ ३ ॥ गौओंकी रक्षा कर लीजो। मोल कसाईको मत दीजो ॥ हरे० जाति जातिमें प्रण कर लीजो। ऐसा मता विचारलो ॥ कहैं सिंह राम मत हारै। गौमाता अर्ज गुजारे० ॥ ४ ॥

भजन नं० २५.

दोहा—हे भारत तेरे कहां गये, शूरवीर बलवान ॥
जो गौओंकी जान पर, देतेथे निज जान ॥
गौमाता प्यारीके—लेवो प्राण बचाय ॥

गौ ऐसी सुख दाताहै। यह सब जगकी माताहै ॥ देवें तुम्हें दूध पिलाय। गौ माता प्यारीके ॥ १ ॥ घी दूध दहीको खावें। फिर भी हमको बिसरावें ॥ करोहो क्यौं अन्याय। गौमाता प्यारीके ॥ २ ॥ हे लड्डू जलेबी भाई। बनतीहैं खूब मिठाई ॥ जिन्हें खाते हरषाय। गौ माता प्यारीके ॥ ३ ॥ गौओंसे बेलाहों भाई। हो उनसे उपज सवाई ॥ सभी आनन्द होजाय। गौ माता प्यारीके ॥ ४ ॥ रणमें भी जाकर भाई। नहिं उनको पीठ दिखाई ॥ दई शमशेर बजाय। गौ माता प्यारीके ॥ ५ ॥ कैसे थे बडे तुम्हारे। गौओंपर तन मन वारे ॥ लडे थे रणमें जाय। गौमाता प्यारीके ॥ ६ ॥ शेरोंके गीदड भाई। जन्मेहो तुम्हीं तो आई ॥ कहूं फिर

मैं समझाय। गौ माता प्यारीके ॥ ७ ॥ रे गौओंके मारनेवाले। तब अन्त होय मुँह काले ॥ पडोगे नरकमें जाय। गौमाता प्यारीके ॥ ८ ॥ कहै स्वरूप लाल ऐ यारो। यह भारत नाव उभारो ॥ होगी अन्त सहाय। गौ माता प्यारीके ॥ ९ ॥

भजन नं० २६.

अब क्यों सोये पैर पसार आगये तुम्हें जगाने वाले ॥ पंडितहैं ज्वालापरसाद। उनका नगर मुरादाबाद ॥ इनको देताहूं धनवाद। बिगडा धर्म बचानेवाले ॥ अब क्यौं० पंडित गणेश दत्त महाराज। इन्होंने किये सभाके काज ॥ और अब राखी सबकी लाज। डूबोंको उबारन वाले ॥अब० जहां भीमसेनजी आते। वहां दयानंदि घबराते ॥ फिर भाग सभी वे जाते। जिसदम लगे ज्ञानके भाले ॥ अब० पंडित सिंहराम सुखराशी। जीहैं सीख नगरके वासी ॥ कर दयानंदियोंकी तल्लासी। उनको वेग उडानेवाले ॥ अब० कह स्वरूप लाल यह टेरी। अब तुम क्यौं करतेहो देरी ॥ पुस्तक छपतीहै बहु तेरी। जिसका जी चाहे मँगवाले ॥ अब क्यौं सोये पैर पसार आगये तुम्हें जगानेवाले ॥

भजन नं० २७.

निश्चय करजान मुक्ती होजातीहै ॥ जिसकी है सारी माया। वो जगन्नाथ कहलाया ॥ उसीसेहो कल्यान। मुक्ती हो जातीहै ॥ १ ॥ जो बुरे कर्मको छोडे। विषयोंसे मनको मोडे ॥ धरे ईश्वरका ध्यान। मुक्ती होजातीहै ॥ २॥ वो नाम अनन्त पुकारा। डारे मैं पूजन प्यारा ॥ उसीका करते मान। मुक्ती हो जातीहै ॥ ३ ॥ ईश्वरके रूप पुकारे। वेदोंमें वे शुम्मारे ॥ पढो तुम होवे ज्ञान। मुक्तीहो जातीहै ॥ ४ ॥ वेदोंमें साफ बताया। गंगाका विषय

सुनाया ॥ जो करतेहैं असनान । मुक्तीहो जातीहै ॥ ५ ॥ कहिं रोचक वाक्य धरेहैं । उनसे ये काज करेहैं ॥ लोभसे करें विधान। मुक्ती हो जातीहै ॥ ६ ॥ ज्यों बालकको समुझाओ । लड्डू देंगे पढ आओ ॥ करो पूरण विद्वान । मुक्ती हो जातीहै ॥ ७ ॥ हैं बरत नमूने गाये । जो श्रद्धासे कर पाये ॥ पापहों दूर महान । मुक्तीहो जातीहै ॥ ८ ॥ है रामनाम यश भारी । वेदोंमें देख अनारी ॥ हुआ कैसे अनजान । मुक्ती होजातीहै ॥ ९ ॥ जहां मुक्ती होना गाया ॥ वहां नियम बड़ा बतलाया ॥ सही लिख दिया बयान ॥ मुक्तीहो जातीहै ॥ १० ॥ कहैं सिंहराम सुनु भाई ईश्वर कहै लोग लुगाई ॥ तुम्हें दीखे पाषान ॥ मुक्तीहो जातीहै ॥ ११ ॥

भजन नं० २८.

रहे वेद बताय—ईश्वर की मूर्त्ती है ॥ दिलमें यकीन कर लीजो॥ फिर ध्यान पतेपे दीजो ॥ कहूं तुमको समझाय ॥ ईश्वरकी मूर्त्ती है ॥ ह्यां वेद अथर्वण लाओ ॥ दशवाँ मन्तर पढलाओ ॥ तीसरा काण्ड दिखाय ॥ ईश्वरकी मूर्त्तीहै ॥ हां मूर्ती पूजन माना ॥ वेदोंमें साफ बखाना ॥ करो फिर क्यों अन्याय ईश्वरकी मूर्त्तीहै ॥ और दूजा काण्ड विचारो ॥ है चौथा मन्त्र उचारो ॥ रहा मूर्त्तीमें गाय ईश्वरकी मूर्त्तीहै ॥ है काण्ड दिखालो ग्यारा ॥ शतपथमें सही पुकारा ॥ मूर्त्ती लई बनाय ॥ ईश्वरकी मूर्त्तीहै ॥ ऋग्वेद यही समुझावे उसकी प्रतिमा बतलावे ॥ कहूं मैं मन्त्र सुनाय ॥ ईश्वरकी मूर्त्तीहै ॥ फिर यजुर्वेदमें गाय ॥ सोलह अध्यायमें आया ॥ रुद्रका रूप लिखाय ॥ ईश्वरकी मूर्त्ती है ॥ १ ॥ अध्याय इकतिस गाता यूं यजुर्वेद फरमाता॥ अंग सब दिये गिनाय

ईश्वरकी मूर्त्ती है। कहो कहां तलक उल्टावै सब ऋषीमुनी लिखिगावैं॥ मनूकी देखो राय ईश्वरकी मूर्त्ती है ॥ कह रामसिंह हे प्यारो! ईश्वरका नाम उचारो॥ होयगा अन्त सहाय ईश्वरकी मूर्त्ती है॥

भजननं॰ २९.

लज्जा जोर जमावे क्या करूँ बयान ॥ मुख गोलमालहै जैसे क्यों नहीं शकलहै वैसे जो ब्राह्मण परधान लज्जा जोर जमावे ॥ जैसा हो कारण भाई वैसाही रूप दिखाई देवा पैदावान लज्जा जोर जमावे बाहू से क्षत्री जाया ॥ वो क्यों नहिं रूप बनाया ॥ बाहू के समान लज्जा जोर जमावे ॥ जांघोंसे बनिये जन्में ॥ जाँघोंके सदृश उनमें क्यौं नहिं रूप सुजान लज्जा जोर जमावे॰ पैरोंसे शूद्र जनाया तो क्यों नहिं रूप दिखाया पैरोंके उन्मान लज्जा जोर जमावे॰ ॥ स्वामीने तर्क उठाया ॥ यह नब्बे पृष्ठ सुनाया ॥ सत्यारथमें जान लज्जा जोर जमावे॰ ॥ जो ऐसा तर्क उठावे ॥ वो क्यों नहिं मूठ कहावे॥ देखो बुद्धिमान लज्जा जोर जमावे॰॥ समझो वो जरा पियारा योनीसे जन्में सारा जेता सकल जहान लज्जा जोर जमावे॰॥ योनीसे रूप उठावो क्यों मिथ्या तर्क उठावो हो करके नादान लज्जा जोर जमावे॰ ॥ यह सिंहराम गावेहै ॥ सब कोहि काल खावेहै॥ करते क्यों अभिमान लज्जा जोर जमावे॰ ॥

भजननं ३०.

दयानन्दियो भाइयो समझो तो सही॥ है वतो मनुष्या मन्तर॥ यह यजुर्वेद के अन्दर ॥ स्वामीजीने कही दयानन्दियो भाइयो ॥ ह्य यजुर्वेदको खोलो ॥ मन्त्रोंको खूब टटोलो ॥ देखो मन्त्र यही सुनो समाजी भाइयो ॥ जो सत्य धर्म को पाले और सची जुवां निकाले॥ ह्याँ पै है कि नहीं सुनो समाजो भाईयो ॥ जो मिले वेदमें प्यारे ॥

हो तुम सच्चे हम हारे॥तुम्हारी जीत रही ॥ सुनो समाजी भाइयो०॥ जो नहीं वेदमें पावे ॥ रूई कपास क्यों खावे॥ दिलमें सोच सही । सुनो समाजी भाइयो० ॥ कह सिंहराम नहीं डरते । तुम पक्षपात को करते ॥ मरते पक्ष गही ॥ सुनो समाजी भाइयो० ॥

भजननं० ३१.

शंकर सुत गिरिजा सुवन पद सरोज शिरनाय गुनगाऊँ रघुनाथ के मम उर रही समाय ॥ मन भजले रघुकुल भानुको दिन योंही बीते जाते ॥ रघुनायक रघुनन्दन रघुपति ॥ रघुकुल तिलक और लक्ष्मीपति हरे० रघुराई रघुवर दशरथ सुत अवधकेतु बतलावे ॥ दिन योंहीं बीते जाते मन भजले रघुकुल भानुको ॥ रघुकुल सागर और रमापति ॥ रघुवंशी रघुनाथ सियापति हरे० पद्मारमण प्रभु कमलापति रमारमणभी गाते दिनयोंही बीते जाते०॥ मन भजले रघुकुल० ॥ अवधचन्द्र अवधेश अवधपति रावण रिपु सियावल्लभ श्रीपति हरे० ॥ नारायण श्रीप्रभु सीतापति दुष्ट दलन कहलाते ॥ दिन योंही बीते जाते० ॥ मन भजले रघुकुल भानुको ॥ भरत जीव भगवान सियावर लखन सजीवन मर श्रीधर हरे० ॥ रामचन्द भगवन्त विष्णुहरि अवध विहारी भाते दिन योंही बीते जाते०॥ मन भजले रघुकुल भानुको ॥ जनक सुता भूषण रविनन्दन दशरथ तनय शम्भु धनु खण्डन ॥ हरे० कहो हजारी जन दुख भंजन राम नाम दरशाते॥ दिन योंही बीते जाते मन भजले रघुकुल भानुको० ॥

भजननं ३२ ।

सब ओरसे चित्त हटायके एक नाम सदा शिवगाऊं॥काशीवासी हर कैलासी शंकर भोला अचल निवासी नागेश्वर योगी अविनासी ईश्वर ईश मनाऊं ॥ एक नाम सदाशिव गाऊं ॥ १ ॥ गिरिजापति

निर्गुण त्रिपुरारी ॥ सन्तोषी त्रिभुवन-आधारी ॥ तिरलोचन दाता ब्रह्मचारी कुलनाथ सनाथ रिझाऊं एक नाम सदाशिव० ॥ २ ॥ निर्मोहित ज्ञाता गंगाधर पुरुषोत्तम पदवी रामेश्वर ॥ वरदानी ज्ञानी धरनीधर अजर अमर चित लाऊं एक नाम सदा शिव गाऊं ॥ ३ ॥ जग तारन जग दाता स्वामी ॥ दुख भंजन सुख दायक कामी महादेव नन्देश्वर नामी गिरिनाथ जती धरमाऊं ॥ एक नाम सदाशिव गाऊं ४ ॥ त्रिलोकी त्रिजटा ज्वालापति विद्याधर वसुदेव उमापति जलधारी सुर नायक पशुपति वागेश हजारी पाऊं ॥ एक नाम सदा-शिव गाऊं ॥ ५ ॥

भजन नं० ३३.

देखो परताप गंगे जग जननीका ॥ क्या निर्मल जल लहरावे उपमा नहीं समझमें आवे किनारे शिवका चाप गंगे जग जननी का ॥ १ ॥ जो नियम से नित्य नहावे ॥ वो मुक्ति पदारथ पावे ब्रह्महो जावे आप गंगे जग जननीका ॥ २ ॥ जल पान कर जो कोई । वो शुद्ध हृदय हो जाई मिटावे तनके ताप गंगे जग जननीका ॥ ३ ॥ कहै दास हजारी प्यारे पहुँचावे स्वर्ग दुआरे ॥ दूर कर देवे पाप गंगे जग जननीका० ॥ ४ ॥

भजन नं० ३४.

दधि रहा लुटाय । आज गलिनमें कान्हा भूषण सब अंग सजाये वंशी अधरनमें दबाये । मधुर धुनि रहा सुनाय । आज गलिनमें कान्हा० मिल जुलकर ग्वाल और ग्वाली । हंसहंसके बजावे ताली। मगनहो माखन खाय आज गलिनमें कान्हा । वहां अघा बकासुर कीन्हे । और प्राण पूतना लीन्हे ॥ दई वैकुण्ठ पठाय । आज गलिनमें कान्हा० अब शरण हजारी आया । जरा कीजो इस पर दाया । रहा प्रभु कीरति गाय आज गलिनमें कान्हा० ॥

भजन नं० ३५.

करो जगपती सहाय वेग विपत है भारी जिसदिन प्रहलाद पुकारा ॥ हिरनाकुश जाय विडारा ॥ रूप नरसिंह बनाय। वेग विपत है भारी ॥ जब ध्रुव दर्शनको धाये ॥ उठ सिंहासनसे आये ॥ लिया छातीसे लगाय। वेग विपत है भारी ॥ जब काज द्रौपदी आये ॥ दुःशासन मान घटाये। चीरको दिया बढाय। वेग विपत है भारी० दुख दास हजारी टारो ॥ इतनी विनती चित धारो ॥ रहे क्यौं हँसी कराय ॥ वेग विपत है भारी ॥

भजन नं० ३६.

सनातन धर्मका जलसा ये सालाना मुबारिक होये परमेश्वरकी भक्तिमें भजन गाना मुबारिक हो आशा यही हरदम सभाकी उन्नति होवे हमेशा विद्वानोंका यहां आना मुबारिक हो ॥ खयाले खामवाले आज पुखता बनके बैठे हैं ॥ दिलोंसे इनके शंकाओंका मिटजाना मुबारिक हो ॥ कुमारगमें जो जाते थे हमारे इण्डियन भाई ॥ उन्हें उपदेश देकर राहपर लाना मुबारिक हो ॥ शरीके धर्म उत्सव हो रहे हैं जो मेरे भाई ॥ सभामें धन्यवाद उनका बजालाना मुबारिक हो ॥ दिलोंमें सबके क्याही जोश है ईश्वरकी भक्तीका ये जयजयकारकी आवाजका होना मुबारिक हो॥ खयाली रामकी निशदिन येही है प्रार्थना भगवन् दयालु लेकचरोंका दरश पाना मुबारिक हो ॥

भजन नं० ३७.

सनातन धर्मको जगमें हमेशा बेखतर जय हो परस्पर मिलके बोलो जोरसे सब मित्रवर जय हो रहें कायम सभायें और चलायें धर्मपर सबको पढायें वेद सिखलायें पुराणोंशास्त्रका जय हो ॥

भला ईश्वर करे उनका हमें उपदेश देनेको॥ हुए तैयार तनमन धनसे घरको छोडकर जय हो ॥ जहां कोई बुलाता है वही दौडे हुए जाते ॥ नहीं कुछ देर लगाती है सवारी रेलपर जय हो ॥ करूं उनकी प्रशंसा जिन जगाया देश भारतको मिश्र ज्वालाप्रसादजीको सदा जय हो सदाजयहो बनाकर मण्डली जलसेमें गाते हैं भजन उत्तम वे हो इनसान हैं जगमें रिझायें नारिनर जय हो ॥ हमारे लाभके कारन गलाफाडे हैं जो अपना करूंगा उनके हकमें यह दुआ मैं उम्रभर जय हो ॥ बडी किरपा है उनलोगोंकी जो जलसेमें आये हैं अदा होता नहीं है शुक्रिया उनकी मगर जय हो ॥ दास अब दस्तबस्ता अर्ज करता है जरा मित्रो कहो तो एक दफा मुखसे सनातन धर्मकी जय हो ॥

भजन नं० ३८.

बेहोश सोरहे हैं हिन्दोस्तान वाले ॥ कोशिशमें लगरहे हैं बाकी जहान वाले ॥ हर मुल्क अपनी अपनी ख्वाहां है बहतरीका॥ लुटिया डुबोके बैठे ऊंची दुकान वाले ॥ इकलख्त बेजबानीकी इखतियार कैसी॥इतनी खबर नहीं है थे किस जबानवाले ॥ दिलके सफे समेटे हरफे गलतकी माफिक भारत वर्षके बांके॥ तोरो कमान वाले ॥मदहोशफिर रहे हैं इस ख्वाबे गफलतीमें गोया कभी नहीं थे वैदिक निशान वाले ॥ अब नींदको त्यागो और आँखें खोलकर देखो थे आपहीके घरमें सचके बखानवाले ॥ इल्मो हुनरका अब तो उठ करके हाथ पकडो॥ लाइल्मियतसे अपनी हैरान होनेवाले ॥इस देशमें हुए हैं पुष्पक विमानवाले ॥ इस प्रार्थनाको सुनकर अब तो दशा सँभालो ॥ क्यों लड रहे हो बाहम वेदो पुराण वाले ॥

भजन नं० ३९.

धारि धारि अवतार भार हरो भूमिका ॥ प्रह्लादने टेर दई जब॥ हिरना कुश नाश कियो तब ॥ ऐसेहि मुझे उबार ॥ भार हरो भूमीका ॥ १ ॥ भये रावण आदि निशाचर । दुख दीनों सकल चराचर ॥ कीने रिपु संहार ॥ भार हरो भूमीका ॥ २ ॥ भस्मासुर मन गरवायो । मारन हित शंभु सिधायो ॥ दीनों तेहि तनु जार । भार हरो भूमीका ॥ ३ ॥ कंसासुर ऊधम कीना । महिदेव दुख देव दीना ॥ छिनमें डाला मार । भार हरो भूमीका ॥ ४ ॥ अब नूतन हठ धर्मी मत । बढगयो भूमि ये प्रभु अति ॥ इसको कीजे क्षार । भार हरो भूमीका ॥ ५ ॥ कहता जन रत्न पुकारी । विधवाहैं बिकल बिचारी ॥ करो इनका निस्तार । भार हरो भूमीका ॥ ६ ॥

भजन नं० ४०.

निर्मल है धार गंगे महारानीकी । जो दर्शन प्राणी करते । वो दुःख कभी नाहिं भरते । कहता वेद पुकार । गंगे महारानीकी ॥ अब लोग ध्यान जो धारें । वे सीधे स्वर्ग सिधारें ॥ तज मिथ्या संसार । गंगे महारानीकी ॥ जो जन जल पान करेहैं । वो भव-सागरसे तरेहैं ॥ मेरा सत्य विचार । गंगे महारानीकी ॥ जो शुद्ध चित्तसे न्हाते । वो मोक्षधामको जाते ॥ पाते सुक्ख अपार । गंगे महारानीकी ॥ कहैं रामरतन समुझाई । गंगेकी शरण लो भाई ॥ चाहते जो निस्तार । गंगे महारानीकी ॥

भजन नं० ४१.

भारतवासियो रे अब तो भारत दशा सुधारो ॥ हुआ महाभारत जिस दिनसे भारत दुखी अपार ॥ विद्या नष्ट अविद्या फैली हुआ

घोर अँधियार ॥ भारतवासियो रे अब तो भारत दशा सुधारो ॥ प्रथम बौद्धलोगोंने कीया भारत सत्यानाश ॥ कर्म धर्म सब भ्रष्ट कियाहै करके देश निकास । भारतवासियो रे अब तो भारत दशा सुधारो ॥ फेर यवन लोगोंने आकर ले नंगी तलवार । धन और धर्म सभी हरलीना कीना पाप प्रचार । भारतवासियो रे अब तो भारत दशा सुधारो ॥ हाय ! कठिन तलवारोंके बल हिन्दू यवन बनाय । भारत पतन कियाहै भारी घरमें फूट मचाय । भारत-वासियो रे अब तो भारत दशा सुधारो ॥ जिसके बाद वर्ष दो सौसै हुआ शान्तिमय राज । लेकिन तर्क कुतर्क जनोंका बढ़ गया बहुत समाज । भारतवासियो रे अब तो भारत दिशा सुधारो ॥ इसके बाद वर्ष छत्तिससै दयानंद एक आन ॥ देशसुधार बहाना करके बहुत किया हैरान ॥ भारतवासियो रे अब तो भारत दशा सुधारो॥ आलस और अविद्या वशमें होकर बेपरवाह ॥ कारीगरी नष्टकर दीनी भ्रष्ट किया व्यापार । भारतवासियो रे अब तो भारत दशा सुधारो ॥ होकरके शौकीन सभी जन पहर विदेशी माल ॥ हाहा ! शिल्प शास्त्रभारतका लोप किया तत्काल । भारतवासियो रे अब तो भारत दशा सुधारो ॥ धर्मभ्रष्ट धन नष्ट करावे परदेशी जो माल ॥ भारत गारत हुआ इसीसे कहते सत्य हवाल॥ भारतवासियो रे अब तो भारत दशा सुधारो ॥

भजन नं० ४२.

करो इनका संहार पापी बडे अधर्मी ॥ हे दुर्गे आदि भवानी ! लेकर भैरव अगवानी ॥ हाथ लेकर तलवार पापी बडे अधर्मी ॥ ये चण्ड मुण्डके भाई । हे देवि कालिका माई ॥ सुनो ये आज पुकार । पापी बडे अधर्मी ॥ हे सिंहवाहिनी माता ! लेकरके

योगिनी माता ॥ करो यह काज सम्हार । पापी बडे अधर्मी ॥ कर मात रूप विकराला । धक्धक् मुखसेती ज्वाला ॥ निकलतीहै हरबार । पापी बडे अधर्मी ॥ दुष्टोंको भस्म कर दीजे । खप्पड अपना भरलीजे ॥ हुए हम दुखी अपार । पापी बडे अधर्मी ॥ हा भारत रुदन मचावे । हा त्राहि त्राहि बिलखावे ॥ इसको वेग उबार । पापी बडे अधर्मी ॥ विनती यह मात हमारी ॥ सुनिये कुछ दया विचारी ॥ सभा यह बाल गँवार । पापी बडे अधर्मी ॥

भजन नं० ४३.

दुख पाते यार जुआ खेलने वाले ॥ जाता मुफ्तमें सब धन धाम । होते जगह जगह बदनाम ॥ बचती कभी न एक छदाम ॥ ये दुख सदा झेलने वाले दुख पाते यार जुआ० ॥ रहता जुएसे बदन मलीन ॥ कुर्ता फटा फटी कोपीन फांके नित होते हैं तीन ॥ उनके संगमेलने वाले दुख पाते यार जुआ० ॥उनके घर टूटी खाट॥ और घरहै बाराबाट॥ मलमल छोड पहनते टाट बातें बडी पेलनेवाले दुखपातेयार०॥होतीहै इज्जतकी हान॥अब लो श्याम सुन्दरकी मान॥ चेतो छोडो यह अज्ञान ॥ हम हैं ज्ञान रेलनेवाले दुख पाते यार०॥

भजन नं० ४४.

हे रघुवीर हरो मम पीर हो गंभीर धीरके धारी ॥ तुमहो प्रभु दीन दयाल ॥ करते छिनमें दास निहाल ॥ लीजो मेरी दशा संभाल दीनानाथ भक्त हितकारी ॥ हे रघुवीर हरो मम पीर हो गंभीर धीरके धारी ॥ विश्वामित्र संवारा काज ॥ डरसे गये निशाचर भाज ॥ राखी जनकराजकी लाज तोडा धनुष सभामें भारी ॥ हे रघुवीर हरो ममपीर हो गंभीर धीरके धारी ॥ सुनकर शब्द घोर जंगलमें ॥ आये परशुराम दंगलमें॥ छाया दुख आनन्द मंगलमें ॥

हर्षित करी सभा तुम सारी ॥ हे रघुवीर हरो मम पीर हो गंभीर धीरके धारी ॥ दशरथ वचन मान वन धाये ॥ मनमें शोक जरा नहिं लाये ॥ भक्तन मन इच्छा फल पाये लीला रची नाथ औतारी ॥ आया शरण हजारीलाल ॥ इसका रखिये सदा खयाल ॥ प्रभु दीननके प्रतिपाल जाऊँ बारबार बलहारी ॥ हे रघु-वीर हरो मम पीर हो गंभीर धीरके धारी ॥

भजननं० ४५.

[श्रीरामवचन]

घर बैठो न वनको चलो तुम सिया ॥ रक्खा पलँगसे पैर न नीचे उतार कर॥ वनमें कहीं छूटही जावोगी हार कर पछताओगी दिलमें न कहना किया । घर बैठो० ॥ जंगलमें सब तरहकी मुशीबत उठाओगी ॥ कुश कंटकोंके मार्गमें तुम कैसे जाओगी ॥ दुख होगा जो पैरोंका छाला छिया ॥ घर बैठो० ॥ भोजनको फल मिलेंगे सो वोभी कभी २ खाने पडेंगे मीठे ॥ वो सीठे तुम्हें सभी नहिं जावेगा हिमका वो पानी पिया ॥ घर बैठो० ॥ पत्ते बिछाके भूमिपे सोया न जायगा ॥ डरपोगी वनचरोंसे पै रोया न जायगा निशि होगी अंधेरी न होगा दिया ॥ घरबैठो सेवा करो भवनमें रहो सास ससुरकी अच्छी हजारी लाल यह सूरत है वसरकी ॥ मानो मानो कलेजेपे राखो फिया ॥ घर बैठो० ॥

भजन नं० ४६.

श्रीसीतावचन ।]

मत छोडो अयोध्यामें हमको पिया ॥ जो कुछ कहाहै नाथ सही वो समस्त है ॥ चिट्ठा मुसीबतोंका बहुतही दुरुस्त है ॥ मेरा बांधे न धीरज जरा भी जिया । मत छोडो० ॥ कहते

है वेद धर्म यही । इस्तिरीका है हरदमही पतीकी सेवामें अपने लगी रहे कैसे घरमें बताओ रहे फिर सिया । मत छोडो०॥ कोमल वदन है आपका कुछ मुझसे कम नहीं ॥ दुख आपको नहीं तो मुझे भी है गम नहीं ॥ मैंने अच्छे तरहसे विचार लिया । मत छोडो० कहते हैं आप मुझसे डरोगी डरोगी मौन ॥ पत्नीको सिंहकी भला देखेगा वनमें कौन ॥ इसी कारण कठिन है हमारा हिया ॥ मत छो०॥ भोजनकी क्या कहूं. न मिले कुछ फलहारभी चिन्ता नहीं करूंगी कभी मैं अहारकी ॥ स्वामी मैंने तो यह व्रत धारण किया॥ मत०॥ हे प्राणनाथ! इससे अधिक और क्या कहूं॥वो हुक्म दीजिये कि जो पालन मैं कर सकूँ॥शिर आखिर हजारी चरणमें दिया ॥ मत छो० ॥

भजन नं० ४७.

विनती सुनियो मोरि मुरारि मुरली मधुर बजानेवाले ॥ सोहै मुकुट जडाऊ शीश ॥ झलकें कुण्डल ज्यों दिनईश ॥ अद्भुत छवि तेरी जगदीश । केशी कंस नशानेवाले ॥ विनती सुनियो मोरी मुरारि मुरली मधुर बजाने वाले ॥ सुरपति कीन्हों कोप कराल । व्याकुल होगये गोपी ग्वाल ॥ आई दया तुम्हें नंदलाल । गिरिधर व्रिज बचानेवाले ॥ जिनके हेतु बने इन्सान । मारे बडे बडे शैतान । अब यह देश हुआ वीरान । मथुरा नाथ कहानेवाले ॥ भारत पहुंच गया पाताल ॥ इसको भगवन् देहु निकाल ॥ विनती करै हजारीलाल लीला रुचिर दिखानेवाले ॥
विनती सुनियो मोरि मुरारी मुरली मधुर बजाने वाले ॥

भजननं० ४८.

अवध विहारी राम स्वरूप लंका खोज मिटाने वाले ॥ जिनके

संग भालु कपि कीस ॥ काटें रावणके दशशीश ॥ उनकी कौन कर सकै रीस वे भक्तोंके बचाने वाले ॥ अवध विहारी राम स्वरूप लंका खोज मिटाने वाले ॥ एक दिन शिबरीके घर जाय ॥ रुचि कर आये भोग लगाय ॥ दीनी अपनी भक्ति बताय भूतल भार घटाने वाले ॥ अवध विहारी रामस्वरूप लंका खोज मिटाने वाले ॥ रघुपति दिया विभीषण राज ॥ कीना उनका पूरण काज ॥ राखा भक्तोंमें शिरताज ॥ उसको प्रेम जताने वाले ॥ अवध विहारी राम-स्वरूप लंका खोज मिटाने वाले ॥ जो कोई शरण रामकी जाय ॥ मनकी दुविधा सकल मिटाय ॥ तब वो श्याम सुन्दर सुख पाया ऐसे पार लगाने वाले ॥

भजननं ४९.

जय जय पवन पुत्र बलवान तुम भक्तन पर करो सहाई तुमहो महाबीर रणधीर मोरे गढ लंकाके बीर ॥ मेटी जनक सुताकी पीर तुम रघुपतिको खबर सुनाई जय जय पवन पुत्र बलवान तुम भक्तन पर करो सहाई ॥ पलमें सागर सेतु बँधाया ॥ सारा लश्कर पार कराया ॥ तुमने भली दिखाई माया लंका होरी फूंक दिखाई जय जय पवन पुत्र बलवान तुम भक्तन पर करो सहाई ॥ जो कोई नाम तुम्हारा गावे भूत पिसाच न कभी सतावे ॥ दुश्मन मुख देखत घबरावे ॥ तुमसे आंख न सके मिलाई (जय-जय०) अबतो श्यामसुन्दरकी आश ॥ जनहित कीजे आननिवास॥ कीजे रोग दोषको नास । निर्मल काया देहु बनाई ॥ जयजय पवन पुत्र बलवान तुम भक्तन पर करो सहाई ॥

भजन नं० ५०.

सुनलो नरनार वियासे सुख होगा ॥ विया बडे रतनकी खान,

बांटे बटे न छीने आन ॥ रहती संगमें जबतक प्राण। वो बेकार कभी नहिं होगा ॥ सुनलो नरनार विद्यासे सुख होगा ॥ विद्यासे आती चतुराई ॥ इससे करते पुरुष कमाई ॥ सपने दारिद्र न देत दिखाई। दिनदिन आनँद मंगल होगा ॥ देखो विद्यासे विद्वान ॥ पाते जगह जगह सनमान ॥ होती कभी न उनको हान । विद्यासे दूनी बलहान ॥ सुनलो नर नारि. विद्यासे सुख होगा ॥ जो नरहैं विद्याहीन ॥ रहते यहाँ दुखी अति दीन ॥ देखा श्यामसुन्दरने चीन। उनको पगपगमें दुख सुनलो नरनारि। विद्यासे सुख होगा ॥

भजन नं० ९१.

कोई विधवा लेलो कैसी बनी सुकुमारसी ॥ चटकीले नैना मतवारे कारे गुम्फित केश सँवारे ॥ तनमें साबुन मुखपर पौडर मलमल देह सुधारसी ॥ कोई विधवा लेलो कैसी बनी सुकुमारसी ॥ सोडापी बिस्कुट गटकावे ॥ चुरट स्वदेशी मुखमें दावे कुर्सी टेविल दर्पन धरके। सुन्दर मांग निकारसी ॥ कोई विधवा लेलो कैसी बनी सुकुमारसी॥लेटिन अर्मन जर्मन जाने ॥ अँग्रेजीमें गावे गाने ॥ इस्लामीसे बहस करनको जाने अरबी फारसी ॥ कोई विधवा लेलो–कैसी बनी सुकुमारसी ॥ मौजे बूंट रेशमी धोती ॥ कुर्ती अरु कमीज तन सोती ॥ बूंटीदार दुपट्टा ओढ़े–आँखन सुरमा सारसी ॥ कोई विधवा लेलो कैसी बनी सुकुमारसी ॥ जब इतवार शुद्ध दिन आवे फेशनसे सभाजमें जावे ॥ धर्म सनातनके खंडनमें–व्याख्यान दे डारसी ॥ कोई विधवा लेलो कैसी बनी सुकुमारसी ॥ आगम निगम धर्म सब जाने ॥ चौका छूत तनक नाहिं माने ॥ लोपकरे तीरथ व्रत संयम–नयन बान जित मारसी ॥ कोई विधवा लेलो कैसी बनी सुकमारसी ॥ स्वामी जो नियोग बतलाया ॥ सोई इस

भामिनिको माया ॥ ग्यारह पति हित ग्यारह विरियां ॥ मुख देखत ले आरसी ॥ कोई विधवा लेलो कैसी वनी सुकुमारसी ॥ छोटे मुँह वडी वात वनावे ॥ ईश्वरको निज वशमें लावे ॥ परम आन विज्ञान वतावे । निराकार साकारसी ॥ कोई विधवा लेलो कैसी वनी सुकुमारसी ॥ ऐसी विधवा ले सुख पावो ॥ वनो समाजी मौज उडावो ॥ धर्म सनातनकी दृष्टिमें—दीखतहै भूभारसी ॥ कोई विधवा लेलो कैसी वनी सुकुमारसी ॥ सब गुणभारी खरीहै नारी वर्ण शंकरी सृष्टि पसारी मनमें भरे कपट छल भारी ऊपर शिष्टाचारसी ॥ कोई विधवा लेलो कैसी बनी सुकुमारसी ॥ मिश्र न ऐसी वाल मिलेगी ॥ सकल समाजी काम करेगी ॥ धर्म सनातनके काटनको तेज धार तलवारसी ॥ कोई विधवालेलो कैसी वनी सुकुमारसी ॥

भजन नं० ५२.

तभी तलकहै शाग वागका जवतक मालीहै ॥ भाँतिभाँतिके वृक्ष लगाये लगा लगाकर आप रखाये कोई वृक्षतो फला फूल फल से कोई खालीहै । तभी० पांच तत्त्वका सत्त निकाला वृक्षवृक्षमें लेकर डाला हुए वृक्ष परवारिश रंग रस डालो डाली है । तभीतलक० वृक्ष एकसे एक निराला रंग रूपमें हर एक आला रखवालेने करी खूब विधिसे रखवालीहै । तभी० जभी वागका समय जो आया हुई गिरन्द कुछ और हो पाया रहा न फिरवो वाग न फिर उसका रखवालीहै तभी तलकहै वाग वागका जवतक माली है ॥

दोहा—श्रीवृषभानु कुमारिके, पग वन्दौं कर जोर ॥
जे निशि वासर उरधरैं व्रजवसि नन्द किशोर ॥
कीरति कीरत कुँवरको, कहि कहि थके गनेश ॥

दशशत मुख बरनन करें, पार न पावैं शेष ॥
अज शिवसिद्ध सुरेश मुख, जपतरहत निशियाम॥
बाधाजनकी हरतहै, राधा राधा नाम ॥
राधा राधा जे कहैं, ते न परैं भव फन्द ॥
जासु कन्ध पर कमल कर, धरे रहत ब्रजचन्द॥
राधाराधा कहतहैं, जे नर आठों याम ॥
ते भवसिन्धु उलंघिकै, बसत सदा ब्रजधाम ॥
बन्दौं पद पंकज सदा, नन्द नँदन ब्रजचन्द ॥
राधा सत वर्णन करूं, फिर न परौं भव फन्द ॥
नित्य किशोर निकुंज वन, गृह गोकुल गोओक॥
छिन बिछुरत नाहिन दुवो, विचरत श्रीगोलोक॥
सेवत ललितादिक सखी, जे प्रिय परम प्रवीन ॥
कोटि कोटि छवि आगरी, सुर मुनि वर्णन कीन॥

कवित्त—काहूको शरण शंभु गिरिजा गणेश शेष काहूको शरण है कुबेर ऐसे धोरीको ॥ काहूको शरण मच्छ कच्छ बलराम राम काहूको शरण गोरी सांवरीसी जोरीको ॥ काहूको शरण बौद्ध बामन बराह व्यास येही निरधार सदा रहै मति मोरीको ॥ आनँद करन विधि बन्दित चरण एक हठीको शरण वृषभानु की किशोरीको ॥ १ ॥

कलपलताके किधौं पल्लव नवीन दोऊ हर्न मंजु ताके कंजताके वनिताकेहैं ॥ पखन पतित गुणगावें मुनि ताके छबिछलैं सविताके जनताके गुरु ताकेहैं । नऊनिद्धि ताके सिद्ध ताके आदि आलैहठी तीनोंलोक ताके प्रभु ताके प्रभु ताकेहैं ॥ कटैं पापताके बढै पुण्यके पताके जिन ऐसे पद ताके वृषभानुकी सुताकेहैं ॥ २ ॥

कोमल विमल मंजु कंजसे अरुण सोहैं लक्षण समेत शुभ शुद्ध कन्द नीकेहैं ॥ हरिके मनालय निरालय निकारनके भक्ति वर दायक बखाने छन्दनीकेहैं ॥ ध्यावत सुरेश शंभु शेष औ गणेश खुले भाग अवनीके जहां मन्द परे नीकेहैं ॥ कटैं यम फन्दनीय द्वंदनीय हरहरि वन्दनी चरण वृषभानु नन्दिनीके हैं ॥ मखमल मखनसे इन्दुकी मयूखनतें नूतन तमाल पत्र आभा आभरन हैं ॥ गुलसे गुलालसे गुलाब जमा जावकसे पावक प्रवाल लाल गावैं भूधरण हैं ॥ उमापति रमापति जमापति आठों याम ध्यावत रहत चार फलके करन हैं ॥ पंकज वरन छवि छविके हरन हठी सुखके करन राधे रावरे चरनहैं ॥ कोऊ उमाराज रमाराज जमाराज कोऊ कोऊ रामचन्द सुखकन्द नाम नाधेमें ॥ कोऊ ध्यावै गणपति फनपति सुरपति कोऊ देव ध्याय फल लेत पल आधेमें ॥ हठीको अधार निराधारकी अधार तूही जप तप योग यज्ञ कछुवै न साधेमें ॥ करत कोटि बाधे मुनि धरत समाहो ऐसे राधे पद रावरे समाही आराधेमें॥

सवैया।

करकञ्जन जावकदै रुचिसौं विछियां सजिकैं वृज लाडिलीके ॥
मखतूल गुहे घुंघरू पहिराय छला छिगुनी चित चाडिलीके ॥
पगजेबै जराव जलूसनकी रविकी किरनै छवि छाडिलीके ॥
जगवन्दतहै जिनको सिगरो पग वन्दत कीरति लाडिलीके ॥

स्तुति।

जय जय जय जय मुकुन्द नंदके दुलारे ॥ शीश मुकुट तिलक भाल। कानन कुण्डल विशाल ॥ कण्ठमांहि गुंजमाल मुरली कर धारे ॥ जयजय० ग्वाल बाल लिये संग। रचत सदा रास रंग॥ बजत बांसुरी मुचंग। यमुनके किनारे ॥ जयजय० ॥ काहूको फोरत घट। काहूकी पकरत लट ॥ काहूको घूँघट झट। खोलत

ढिग आरे ॥ जयजय० धन धन धन श्रीमुकुन्द । काटहु दुख हरहु द्वंद्व ॥ श्रीगोविन्द श्रीगोविन्द श्रीगोविन्द प्यारे ॥ जयजय० कृपा-सिंधु विश्वनाथ । मांगत वर जोर हाथ ॥ बसहु सदा रमा साथ । हृदयमें हमारे ॥ जयजय० कीजिये सहाय आय श्रीपति यदुराई ॥ लोचन सुंदर विशाल । गोरोचन तिलक भाल ॥ ग्रीवा छबि देत माल । शोभा अतिछाई ॥ कीजिये० श्रवणन कुण्डल अमोल । बिथुरी अलकैं कपोल ॥ कोमल मन हरन बोल । लेत चित चुराई ॥ कीजिये० गलमें मणि फूल हार । सुंदर नख सिख सिंगार ॥ शोभा अनुपम अपार । वरनी नहिं जाई ॥ कीजिये० सुंदर छबि चित्त हरन । नेक लखन वश्य करन ॥ सेवहु करि प्रेमचरन । सज्जन सुखदाई ॥ कीजिये० माथेपर मुकुट मोर । लोचन चित विश्व चोर ॥ जासु नैक भ्रू मरोर । देत जग बनाई ॥ कीजिये० मन्द मंद हंसत जात । सखियनसों करत बात ॥ पावत सुख तात मात भाग्यकी बड़ाई कीजिये०

छन्द

स्तुति श्रीमहादेवजीकी ।

जय जय महेश कृपालु शिव आनन्द निधि गिरिजापते ॥ कैलासपति कल्याण अगजग नाथ शर्व नमामिते ॥ जटाजूट त्रिपुण्ड्र शशि कलगंग शिर शोभित शिरे ॥ कमल नयन विशाल सुन्दर चारु कुण्डल श्रुति धरे ॥ नीलकण्ठ भुजंग भूषण भस्म अंग दिगं-बरे ॥ अर्द्धङ्ग गौरि कृपालु उर शिर माल धर करुना करे ॥ कर्पूर गौर प्रसन्न आनन पंच वक्त्र त्रिलोचने ॥ कामपद सुखधाम पूरन काम शोच विमोचने ॥ भगवान भवभवभय हरन भूतादिपति शंभु हरे ॥ प्रणत जन पूरन मनोरथ जगत पितु मन्मथ अरे ॥

गजल।

बसो उरमें सदा शिवजी सदाशिवजी सदा शिवजी ॥ हरो जगदापदा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी ॥ ऋणीहूं कोटि जन्मोंका यहीहै कामना अबकी ॥ सभी ऋण अदाहो शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी॥ वियोगीहूँ बहुत दिनका दया करके महायोगी दरश दो एकदा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी ॥ जगत के आदिमें तुम थे जगत्के अन्तमें तुमही ॥ सुकेवल सर्वदा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी ॥ तुम्हारी शक्तिकी प्रतिमा जगज्जननी महाकाली ॥ उमाहै सदा सर्वदा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी॥ वही श्री अन्नपूर्णाहै वही पूर्णा रमारानी ॥ वहीहै शारदा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी ॥ जगत्की चारु रचनामें सुपालनमें प्रलयमें भी वहीहै योगदा. शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी ॥ चराचरमें वही शोभा वही आबा प्रभा सारी ॥ वही अलम्बूदा सदा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी ॥ तुम्हीं गोदावरी गंगा तुम्हीं हो सिन्धु कावेरी तुम्हीं श्री नर्मदा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी ॥ तुम्हारे पाद पंकजकी सुरजपर वारिये स्वामी ॥ जगत्की सम्पदा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी ॥ दयासे देव सुख देतेहो ऐसे सेवकोंकोभी ॥ नहीं जिनको बदा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी ॥ तुम्हारी भक्ति नवधा लोकमें है काम संहारी ॥ विदितहै कामदा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी॥ तुम्हें ध्यावें दुखी जिस्काल करुणा भावसे कोई॥ सहायकहो तदा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी ॥ तुम्हींहो आत्मा मेरे स्वयं परमात्मा व्यापी ॥ पृथक तुमसे कदा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी ॥ जपा पूरन जपा सोहहम । न छोडा भाव दासोऽहम् रहे अब कौन'दा शिवजी सदा शिवजी सदा शिवजी ॥

जय जय जय जय गिरीश गिरिजापति शंकर ॥ लीने करमें पिनाक मले तनु मसान खाक ॥ सेवत सुर सहित नाक पुष्प माल लेकर जय० ॥ खोलो जब तृतीय नैन भस्म भयो तुरत मैन ॥ तुम सम कोउ और है न जगमें योगीश्वर ॥ जय० जो जगमें जन अनाथ तिनके शिर धरत हाथ ॥ बार बार नाय माथ मांगतहूँ यह बर ॥ जय० चरननमें रहै ध्यान मन न कहूँ जाय आन हे हर कृपानिधानः विषधर शशि शेखर जय० ॥

[स्तुतिश्रीगणेशजीकी]।

सुमिरि सदा सिद्धि हेत गणपति गणराई ॥ विघ्नहरण गणनायक ऋद्धि सिद्धि वर दायक ॥ आनन्द निधि सब लायक त्रिभुवन सुख-दाई ॥ सुमि० ॥ सेंदुरको तिलक भाल सोहत दृग लाल लाल ॥ शोभा अद्भुत बिशाल संतन मन भाई सुमिरि० भक्ति मुक्ति ज्ञान-मूल राजत करमें त्रिशूल ॥ शुन्ड मांहि कमल फूल देत शुभ दिखाई सुमि० ॥ जय जय जय जय दयाल शंभु सुवन प्रणतपाल ॥ सोहत गल मुक्तमाल गिरिजा पहिराई सुमि० ॥ शुद्ध बुद्ध गुण निधान जनको अज्ञान जान ॥ विद्याको देहुदान शिवसुत वरदाई सुमि०

आरती श्रीरामायणजीकी ।

आरति श्रीरामायणजीकी । कीरति कलित ललित सियपीकी ॥ गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद । वाल्मीक विज्ञान विशारद ॥ शुक सनकादि शेष अरु शारद । वरणि पवन सुत कीरत नीकी ॥ सन्तत गावत शंभु भवानी । औघट संभव मुनि विज्ञानी ॥ व्यास आदि कवि पुंग बखानी । काक भुशुण्ड गरुडके हीकी ॥ २ ॥ चारों वेद पुराण अष्टदश । छओं शास्त्र सब ग्रन्थनको रस ॥ तन

मन धन सन्तनको सर्वस । सार अंश सम्मत सबहीकी ॥ कलिमल हरणि विषय रस फीकी । सुभग श्रृङ्गार मुक्ति युवतीकी ॥ हरणि रोग भव भूरि अमीकी । तात मात सब विधि तुलसीकी ॥

आरति श्रीगीताजीकी ।

आरति श्रीगीताकी कीजे । जीवन जन्म लाभ यह लीजे ॥ गीता ध्यान करें भगवान । गीताहैं शिवजीके प्रान॥जिन गीताको सुना न कान । ते नर कहिये पशू समान ॥ गीताको जो सुने सुनावें । ते नर परम मोक्ष पद पावें ॥ ज्ञानदास गीता जिन जानो एक अखण्ड ब्रह्म पहचानो ॥

[आरती श्रीदुर्गाजीकी]

जय अम्बे गौरी मा जय अम्बे गौरी ॥ तुमको निशदिन ध्यावें ब्रह्मा शिव सौरी ॥ मांग सिन्दूर विराजत टीका मृग मदको ॥ उज्ज्वलसे दोऊ नैना चन्द्र बदन नीको ॥ जय० कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै॥रक्तपुष्प गल माला कण्ठन पर साजै॥जय० केहरि वाहन राजत अति खप्पर धारी ॥ सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुख हारी ॥ जय० कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती ॥ कोटिन चन्द्र दिवाकर राजत सम जोती ॥ जय० शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती॥ धूम्र विलोचन नाशति निशिदिन मदमाती॥ जय० चौंसठ जोगन नाचत नृत्य करत भैंरू ॥ बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥ जय० भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्पर धारी ॥ मन वांछित फल पावत सेवत नरनारी ॥ जय० कंचन थाल विराजत अगर कपूरकी बाती ॥ मालकेतुमें राजत जिह्वा लहराती ॥ जय० देवीजीकी आरति जो कोई गावे ॥ कहै सदानंद स्वामी इच्छा फल पावे ॥ जय०॥

[आरति श्रीमहादेवजीकी]

जय शिव ॐकारा । हर शिव ॐकारा ॥ ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा ॥ एकानन चतुरानन पंचानन राजे ॥ हंसासन गरुडासन वृषभासन साजे ॥ जय० दो मुख चार चतुर्भुज दशमुखते सोहैं ॥ तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहैं ॥ जय० अक्षमाला वनमाला रुंडमाला धारी ॥ चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी॥ जय० ॥ श्वेताम्बर पीतांबर बाघाम्बर राजै ॥ सनकादिक भूतादिक साजै ॥ जय० करमें कमंडलु राजत चक्र त्रिशूल धरंता॥ जग करता जग भरता जगके संहरता ॥ जय० ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविबेका ॥ प्रणव अक्षरन मध्ये यह तीनों एका ॥ जय० श्रीशंकरकी आरति जो कोई गावें ॥ कहै सदानंद स्वामी वांछित फल पावै ॥ जय० ॥

[आरती श्रीरामचन्द्रजीकी]

आरति कीजे राजा रामचन्द्रजीकी ॥ पहली आरति पुष्पकी माला ॥ काली नाग नाथ लाये कृष्ण गोपाला आरति० ॥ दूसरी आरति देवकी नन्दन ॥ भक्त उधारन कंस निकन्दन आरति० ॥ तीसरि आरति त्रिभुवन मोहै ॥ गरुड सिंहासन राजा रामजीको सोहै॥आर०॥ चौथी आरति चारों युग पूजा ॥ देवकी नन्दन स्वामी और न दूजा ॥ आर०॥ पांचवी आरति रामजीको भावे ॥ रामजीका सब वश वामदेव गावे ॥ आरति० ॥ छठवी आरति ऐसे कीजे ॥ ध्रुव प्रह्लाद बिभीषण जैसे ॥आरति० सातवीं आरति लछमन भ्राता ॥ आरति करत कौसल्या माता ॥आरति० लंका जीत राम घर आये ॥ सब साधोमिलि मंगल गाये॥आरति० जो राजा रामजीकी आरति गावें ॥ बस बैकुण्ठ परम पद पावें ॥ आरति० तुलसीदास प्रभु आरति गावें ॥ हरिके चरण कमल चित लाई ॥ आरति० ॥

[आरती श्रीहनुमानजीकी]

आरति कीजे हनुमान ललाकी दुष्ट दलन रघुनाथ ललाकी ॥ जाके बलसे गिरिवर कांपे रोग दोष जाके निकट न झांपे ॥ अंजनि पुत्र महाबल दाई॥ सन्तनके प्रभु सदा सहाई॥दे बीरा रघुनाथ पठाये ॥ लंका जारि सिया सुध लाये ॥ लंकासा कोट समुद्र सीखांई ॥ जाव पवन सुत बार न लाई ॥ लंका जारि असुर सब मारे ॥ सीतारामजीके काज सम्हारे ॥ लक्ष्मण मूछि परे धरणी में॥ आन सजीवन प्राण उबारे॥बैठि पताल कीन यम कातर॥अहि रावणके भुजा उखारे ॥ बाम भुजा सब असुर संहारे ॥ दक्षिण भुज से संत उबारे ॥ सुर नर मुनि आरती उतारे ॥ जय जय जय जय हनुमान उचारे ॥ कंचन थार कपूरकी बाती॥ आरति करत अंजनी माई ॥ जो हनुमानजी की आरति गावे ॥ बसि बैकुण्ठ अमर पद पावे ॥ लंका ध्वंश कीन रघुराई ॥ तुलसीदास स्वामी आरति गाई ॥

[आरती श्रीकृष्णचन्द्रजीकी]

तन मन धन न्योछावर कीजे आरति राधावरकी कीजे ॥ फुलनकी सेज फुलन गल माला॥रत्नसिंहासन बैठे नन्दलाला॥गौर श्याम मुख निरखत लीजे॥हरिको रूप सुधारस पीजे॥मोर मुकुट कर मुरली सोहै॥नटवर कला देख मन मोहै ॥ रवि शशि कोटि वदनकी शोभा ताहि देख मेरा मन लोभा ओढेनील पीत पट सारी॥कुंजबिहारी गिरिवरधारी ॥ नन्द नन्दन वृषभानु किशोरी ॥ परमानन्द स्वामी अविचल जोरी ॥ मातु यशोदा आरति लाई ॥ यह शोभा मेरे मन भाई॥श्री पुरुषोत्तम गिरवर धारी॥आरती करत सकल ब्रजनारी॥

जो श्रीकृष्णजीकी आरति गावे ॥ बस बैकुण्ठ परम पद पावे ॥ सूरदास प्रभु आरति गावें ॥ हरिके चरण कमल चित लावें ॥

[आरती निर्गुण प्रभूकी]

जय जगदीश हरे भक्त जननके संकट छिनमें दूर करे ॥ जो घावें फल पावें दुख विनसे मनका ॥ सुखसम्पति घर आवे कष्ट मिटे तनका ॥ मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी ॥ तुम विन और न दूजा आस करूं किसकी ॥ तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी ॥ तुम्हें छोड़ कहां जाऊं हे मेरे स्वामी ॥ तुम करुणाके सागर तुम पालन करता ॥ मैं मूरख खल कामी कृपा करो भरता ॥ तुमहो एक अगोचर सबके प्राणपति ॥ किस विध मिलूं गुंसाई तुमको मैं कुमति ॥ दीनबन्धु दुख हरता तुम ठाकुर मेरे॥ अपने हाथ उठाओ द्वार खडा तेरे ॥ विषय विकार मिटाओ ॥ पाप हरो देवा॥ श्रद्धा भक्ति बढाओ सन्तनकी सेवा॥जय जगदीश हरे जय जगदीश हरे ॥ भक्त जननके संकट छिनमें दूर करे ॥

इति सनातनधर्मभजनमाला सम्पूर्ण ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस–बंबई.

विक्रयार्थ पुस्तकें।

नाम.	की.रु आ.
बारामासीसंग्रह–कई प्रकारकी बारामासीका संग्रहहै	०–१॥
भजनमहाभारत–भीष्मपर्व स्वामी शंकरदास जिठौली जिला मेरठकृत	१–०
भजनामृतसार–इसमें–मंगल, गौरी, होली, जयध्वनी, पद, विनय-आदि अनेक भजनहैं। भगवद्भक्तोंके वास्ते अतिउत्तमहै	०–१४
भजनमनोरंजनी–अर्थात् अतिमनोहर भजन, कवित्त; दोहा, सवैया, स्तोत्रआदि अत्यन्तसुन्दर गानेयोग्य पद हैं	०–४
भजनपुष्पावली–इसमें प्राचीन, नवीन महात्माओंके रसीले भजन अनेक रागरागिनियोंमें हैं	०–४
भजनरत्नमाला–श्रीमहाराजकुमार अनिरुद्धसिंहजूने नानाप्रकारके रागरागिनियोंमें निर्माण कियाहै	०–३
भजनरत्नावली–वडी–जिसमें–प्राचीनमहात्माओंके अनेक रागरागिनियोंमें राम–कृष्णके भजनोंका संग्रहहै। संप्रदायी–साधुसन्तके परमोपयोगीहै।	१–४
भजनसागर–महात्माओंके पदोंका अनूठा संग्रहहै	०–१२
भक्तमाला–"रामरसिकावली" वडी रीवाँधिपति महाराज रघुराजसिंहजूकृत अत्युत्तम छन्दवद्ध जिसमें चारोंयुगोंके भक्तोंकी भिन्न २ कथाहै। यह दूसरीबार उत्तरचरित्रसमेत छपीहै। ग्लेज कागज	४–०
" तथा रफ कागज	३–१२
भक्तमाला–नाभाजीकृत सटीक–छन्दवद्ध भक्तोंकी मनोह्लादकारक रोचक कथाहैं। ग्लेज कागजका दाम	१–४
" तथा रफ कागज	१–०
भक्तमालवार्त्तिक–हरिभक्तिप्रकाशिका भक्तोंकी कथाका अपूर्व संग्रह है। ग्लेज कागज—	४–०

नाम.	की.रु.आ.
भक्तिसागर-(१७ ग्रन्थ) इसमें-व्रजचरित्र, अमरलोक, अखण्डधाम, धर्मजहाज, श्रीअष्टांगयोग, षट्कर्महठयोग, योगसन्देहसागर, ज्ञानस्वरोदय, पंचउपनिषद्, सर्वोपनिषद्, तत्त्वयोगोपनिषद्, योगशिखोपनिषद्, तेजोबिंशतोपनिषद्, भक्तिपदार्थ, मनविक्रतकरन, श्रीब्रह्मज्ञानसागर, शब्दवर्णन, और भक्तिसागर (चरणदासजीकृत) ग्लेज-कागज....	१-१२
" " तथा रफ कागज	१-८
भक्तिज्ञानानन्दामृतवर्षिणी-इसमें राधाकृष्णका नाममाहात्म्य तथा भक्तिज्ञानप्रेमका उपदेशहै	०-२
भक्तिप्रबोध-इससे भक्तिका अपूर्वबोध होताहै	०-२
भक्तिचन्द्रिका-जिसमें-गुरुभक्ति, ब्रह्मविवेक, वैराग्यलक्षण, तथा उदाहरणोंसे युक्त भक्तिनिरूपण योग्यायोग्य निषेधवर्ताव छन्दबद्ध वर्णितहै....	०-८
भाषापंचरत्न-पांचों देवताओंकी स्तुति	०-३
मनरंजनसंग्रह-मनको प्रसन्न करनेयोग्य-नामहीसे जानलो	०-४
मातापितापूजनपद्धति-इसके पूजनसे मातापिताके आशीर्वादसे जगत्में लोग सुखी रहतेहैं....	०-१
रघुराजविलास-महाराजारघुराजसिंहजूदेवकृत-इसमें श्रीकृष्णजीके पद, होरी इत्यादि रागरागिनियोंमें वर्णित हैं	०-६
रसकी लहर-(गजल, ठुमरी, सवैया, तथा कजलीका भंडार) ...	०-१
रसकी चषक-पं० दत्तराम चौबेकृत-इसमें भैरवी, तिल्लाना, सोरठा आदि गानेकी उत्तमोत्तम चीजें हैं	०-१॥
रसरंगप्रकाश-इसमें-अच्छ २ कवियोंके मनभावने पदसंग्रहहैं	०-४
रसतरंग-कृष्णगढमहाराजप्रणीत-ज्ञानभक्ति मार्गके अजब रँगीले पद	०-८
रसिकछबीली-(गौने समयके हास्यरसके दोहा पहेली)	०-२

नाम. की रु आ.

रागरत्नाकर–अर्थात् भक्तचिन्तामणि रागमालासहित। जिसमें–अति-चटकीले २००० पदोंका संग्रहहै। छःराग ३६ रागिनियोंमें भजन गानेका अतिउत्तम ग्रन्थ है। समय २ का रागवर्णन तथा भक्तिमय हजारों भक्तोंके मनरंजन करनेवाला है। जिसके बाँचनेसे भगवान्‌की लीलाओंका जानों सम्मुख दर्शन होताहै। विशेष तारीफ क्या करें? स्वयं मँगाकर अनुभव करलें। सोनेके अक्षर लगेहुए विलायती कपडेकी मनोहर जिल्दहै २–०

रामाष्टयाम–श्रीसीतारामजीके आठों प्रहरके क्रीडाचरित्र यथारुचि दोहा चौपाईमें वर्णनहैं ०–४

रामस्वयंवर–श्रीमहाराजा रीवाँनरेश रघुराजसिंहजीकृत। काव्यमें श्रीकौशलेश श्रीरामचन्द्रजीका और जनकसुता जानकीजीका स्वयंवर वर्णन ग्लेज कागजका दाम ४–८

तथा रफ कागज़ ४–०

रामकलेवा–(रहस्यग्रन्थ)इसमें–श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मणादि चारों भाइयोंके विवाहोत्सव समयका कलऊ वर्णन वडाही रोचकहै .... ०–१॥

राधापचीसा–भाषामें.... .... ०–२

रुक्मिणीपरिणय–महाराजा रीवाँनरेश रघुराजसिंहजीकृत (छन्दबद्ध) रुक्मिणीजीके स्वयंवरका वर्णन १–८

रुक्मिणीमङ्गल–पद्मभक्तकृत मारवाडीभाषामें (वडा) अर्थात् रुक्मिणीजीका विवाह वर्णन १–२

रंगतरंग–इसमें–नवरसोंका अत्युत्तम वर्णनह.... .... ०–६

ललितफाग–अर्थात् ब्रजका प्रसाद–इसके पढनेसे बुड्ढा भी एकवार खटियासे उठ डाढा मूँछ फटकार होलीहै २ बुडबुडाने लगेगा ०–३

लावनीब्रह्मज्ञानकी–काशीगिरि बनारसीने निर्माणकर स्वयं यहाँ आकर छपवाई है। इसमें–सम्पूर्ण लावनी ऐसी भावगंभीरतासे बनाईगई हैं कि, जिनका अर्थ शृङ्गार और वैराग्य दोनों पक्षोंपर मिलताहै १–४

वसन्तफागसंग्रह–(होली) गानेलायक उम्दा चुनीहुई होलियोंका संग्रह ०–८

जाहिरात ।